पैसे-पैसे के चुटकुले

सम्पादक—

क० प्राणाचार्य-गणपतिसिंह वर्मा

M. Sc. (A.) आयुर्वेद वाचस्पति

सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रकाशक—

रसायन फार्मेसी

३, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

द्वितीय पुनर्मुद्रण, १६७७

डा० जी० एस० वर्मा मुद्रक व प्रकाशक द्वारा स्वास्तिक प्रिंटिंग वर्क्स
६१-नया बांस, देहली-६ में मुद्रित।

दो शब्द

हमारे देश की बड़ी २ समस्याओं में स्वास्थ्य की समस्या भी एक बड़ी समस्या है। बड़े २ नगरों में चिकित्सा सम्बन्धी सुविधायें कुछ न कुछ उपलब्ध हो जाती हैं किन्तु हमारी देहातों के गांवों में उनका प्रायः अभाव ही है। कारण, जितने डाक्टर और योग्य वैद्य, हकीम विश्वविद्यालयों से निकलते हैं, वह सब शहरों में ही रहकर अपना चिकित्सा कार्य करते हैं, क्योंकि वहां आमदनी अच्छी होती है और आनन्द से रहते हैं। देहातों में जाकर रहना कोई पसन्द नहीं करता। हालांकि पवित्र और आदर्श पेशा है जिसका उद्देश्य पीड़ित मानवता के बिना किसी भेद भाव के सेवा करना है। यही हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों और आचार्यों का कथन है। उन्होंने सर्वप्रथम जहां वैद्य के लक्षण लिखे हैं वहां स्पष्ट लिखा है कि वैद्य निर्लोभी और सेवा-भावी हो। आज के चिकित्सक समाज को इसी भावना से प्रेरित होना चाहिए। चिकित्सकों को उचित है कि वह इस व्यवसाय को पैसा कमाने का साधन न बनाकर देहातों और गांवों में जाकर असंख्य पीड़ित भाइयों की सुधि लें और जनता के स्वास्थ्य को ठीक रखने तथा रोगों को बचाने के लिए अपना उत्तरदायीत्व समझकर कार्य करें। इन्हीं उपरोक्त कारणों से पैसे पैसे के चुटकले' प्रकाशित करने का विचार उत्पन्न हुआ।

१—रोगी गरीब भी होते हैं और अमीर भी। विशेषकर बड़े कुटुम्ब वाले घरों में तो किसी न किसी को कोई शिकायत बनी ही रहती है और इलाज पर प्रतिदिन कुछ न कुछ खर्च करना ही पड़ता है। किन्तु जान बूझकर मानव को अर्थाभाव के कारण छोटे-मोटे एवं बड़े रोगों की उपेक्षाकर "ऋण शेष श्चाग्नि शेषो व्याधिः शेष स्तथैवच" को भुला कर दुख भोगना पड़ता है। श्रीमन्त और अमीर लोग तो धन खर्च करके अपना इलाज करा लेते हैं, किन्तु निर्धन वर्ग, ग्रामीण, मजदूर लोग (जिनकी संख्या देश में सबसे अधिक है) जिनका उदर पोषण भी कठिनता से होता है—इलाज कराने से वंचित रह जाते हैं। जो रोग पहले राई था बाद में पर्वत बन जाता है और रोगी को ऐसी दशा में द्रव्याभाव के कारण अपना जीवन यमराज को सौंप देने के लिए विवश होना पड़ता है। इसलिए इसकी रोकथाम करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। इस दृष्टि से इस पुस्तक को प्रकाशित करना आवश्यक समझा गया है कि

जिससे ग्रामीण और निर्धन लोग भी इससे उतना ही लाभ उठा सकें, जितना कि मंहगी दवाइयों से और मंहगे डाक्टरों से श्रीमन्त लोग लाभान्वित हो सकते हैं। दूसरे वैद्यों के पास आने वाले रोगियो में अधिकांश गरीब होते हैं इसलिए भी ऐसे संग्रहीत साहित्य की परमावश्यकता समझी गई जिससे वह सस्ते से सस्ता इलाज करके पुण्योपार्जन कर सकें। तीसरे श्री० मुनि कनकविजय महाराज से हमें इस आशय की प्रेरणा मिली कि वड़े २ योगों, मूल्यवान नुस्खों और विज्ञान की दुहाई देने वाली पैथियों के मुकावले में ऐसे टोटके और चुटकले रक्खे जावे कि जिनका चमत्कार और उपयोगिता देखकर वे आश्चर्य चकित रह जावें। जैसा कि उन्होंने अपने लेख में स्वयं ही प्रकट किया है। प्रस्तुत सामग्री सेवा में उपस्थित है, आप लाभ उठाकर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे।

आपका नम्र :

गणपतसिंह वर्मा

आयुर्वेद वाचस्पति

सम्पादक, रसायन

विषय सूची

पैसे पैसे के चुटकुले

उत्तमांग रोग

शिर के रोग

शिर के रोग इतने असंख्य हैं कि उनकी परिगणना करना भी बड़ा शिर दर्द है। परन्तु यह ध्यान रहे कि शरीर में शिर उत्तमांग अंग है अतः इसके रोगों के प्रति कभी उदासीनता और आलस्य न किया जाय, क्योंकि इसका परिणाम बड़ा भयंकर होता है।

प्रतिश्याय

कण्ठमार्ग द्वारा गिरने वाली आर्द्रता को नजला और नासिका द्वारा गिरने वाली को जुकाम कहते हैं। नजला जुकाम से अधिक कष्टकर और भयंकर होता है। कारण यह है कि नजले का विषैला द्रव्य अन्दर गिरने से विभिन्न रोगों को उत्पन्न करता है जैसे—सिल, पसली दर्द, यकृत विकृति, आधा सीसी, चेहरे और तालु की सूजन और कान, दांत, छाती तथा जोड़ों का दर्द इत्यादि। इसी कारण से प्राचीन विशेषज्ञों का मत है कि नजला और जुकाम बड़े भयंकर और बुरे रोग हैं। यदि दाहयुक्त और पीतवर्णयुक्त आर्द्रता निकले तब गर्मी का लक्षण है। इसके विपरीत सर्दी विशेष समझें। स्थाई नजला और जुकाम मस्तिष्क को दुर्बल और बेकार बना देते हैं। अब आपकी सेवा में ऐसे योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि अनुभूत होने के अतिरिक्त केवल पैसों की लागत में तैयार हो सकते हैं।

चमत्कारी नस्य

यदि नाक बन्द हो गया हो और सांस बड़े कष्ट से आता हो तो ईश्वर का नाम लेकर 'चमत्कारी नस्य' सूंघ लें। छींक आकर मस्तिष्क में रुका हुआ मल निकल जायगा। मस्तक पुष्प के सदृश हो जायगा।

विधि—कायफल १५ ग्राम और पोटाश परमगनास १० ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर शीशी में भर लें। यथासमय प्रयोग करें और इसका प्रयोग देखें।

२. नजला तथा जुकाम का दिवसान्त उपचार

यदि रोगी नजला तथा जुकाम से बहुत संतप्त हो तब निम्न लिखित योग को काम में लावें। एक दिन में नजला जुकाम का अन्त हो जायगा।

विधि—बारीक की हुई हल्दी का धूम्र एक नलकी द्वारा नासिका मार्ग से बलपूर्वक ऊपर को खेंचे। दिन में दो तीन बार इसी प्रक्रिया को करें। प्रातः, सायं एक-एक रत्ती अफीम पानी के साथ खिलावें। दिन भर खाने के लिए कुछ न दें। ईश्वरानुग्रह से एक ही दिन में रोग का नाश हो जायगा। रोगी को समझा दिया जाये कि पानी पीते समय नाक बन्द रखे।

३. अक्सीरी तैल

यह तैल जुकाम के निवारण में सर्वथा अनुपम है। तैयार करके इसके अद्वितीय गुणों का अनुभव कीजिए। केवल इसी तैल के उपयोग से आप संसार का अमित उपकार कर सकते हैं। यह तैल अपना जोड़ नहीं रखता।

विधि—कुसुम के पत्तों का रस १०ग्राम और तिलों का तैल २०ग्राम। दोनों को मिलाकर कलईदार देगची में डालकर आग पर रखें। जब कुसुम-पल्लवरस जल जावे और केवल तैल शेष रहे तब नीचे उतार लें। ठण्डा होने पर मलमल के कपड़े से छानकर शीशी में सुरक्षित रखें। समयानुसार प्रयोग में लावें। प्रातः सायं रोगी को दो दो बून्द की नस्य दें। ईश्वरेच्छा से एक दो दिन में आराम हो जायगा। ध्यान रहे तैल का खरपाक न हो।

४. स्थाई नजला तथा जुकाम का अपूर्व उपचार

आपकी सेवा में एक बिलकुल नवीन और अभूतपूर्व योग प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके दो सप्ताह के निरन्तर सेवन से बहुत पुराने नजला और जुकाम का सर्वनाश हो जाता है। विधि अत्यन्त सरल है और अपने अनुपम गुणों से योग है भी अनुपम।

विधि—भुने हुए चने नग सात और काली मिर्च नग एक। इनको प्रातःकाल निराहार मुख खा लिया करें। चार दिन पश्चात भुने चने चौदह और काली मिर्च दो की संख्या में लेना प्रारम्भ करें। एक सप्ताह के बाद भुने हुए चने इक्कीस और काली मिर्च तीन की संख्या में लेना प्रारम्भ करें। दो सप्ताह तक इस क्रिया को इसी प्रकार करते रहें। ईश्वरानुग्रह से अति पुराने नजला और जुकाम का अन्त हो जायगा। अत्यन्त सरल और अनुभूत योग है।

५. टंकण का जादू

अब आपके सामने मैं अपना हृदयान्तरगत और प्रमुख योग प्रस्तुत कर

रहा है। इसके सेवन व ईश्वरानुग्रह से प्रतिवर्ष सैकड़ों रोगी इस भयंकर रोग के पंजे से मुक्त होते हैं। नुस्खा अनुभूत है। बनाकर अनुभव करें और लाभ उठायें।

विधि—आवश्यकतानुसार टंकण लेकर इसे भून लें, फिर बारीक पीस कर शीशी में भर लें। २ से ४ रत्ती तक की मात्रा गर्म चाय या गर्म पानी के साथ दिन में तीन बार दिया करें। या तो पहले दिन या दूसरे दिन रोग मिट जायगा। सहस्रों बार की अनुभूत और अचूक औषधि है।

६. नजले के लिए काढ़ा

रात को सोते समय निम्नलिखित काढ़े का सेवन करें। आशा है पहिले दिन ही आराम होगा और यदि कुछ कमी रहे तो दूसरे दिन इसी तरह करें। अवश्य आराम होगा।

विधि—देशी अजवायन १० ग्राम, गुड़ १० ग्राम। दोनों को आधा किलो जल में खूब उबालें। जब आधे से कुछ अधिक पानी जल जावे तब नीचे उतार लें और मल कर छान लें। गर्म-गर्म पिलावें। यदि रोगी की प्रकृति पित्त प्रधान हो तो ठंडा करके पिलावें। वरना गर्म पिलायें और ऊपर कपड़ा ओढ़ाकर रोगी को सुला दें।

शिरशूल

प्राचीन आयुर्वेद विशारदों ने शिरदर्द के अनेकानेक भेद किये हैं। परन्तु इस स्थान पर उनकी परिगणना करना अनुपादेय है। तथापि विशेष भेदों का उल्लेख किया जाता है। ज्वर, कोष्ठबद्धता, बदहजमी, नजला, जुकाम, वीर्याल्पता, उत्तमांगों की दुर्बलता इत्यादि शिर दर्द के विशिष्ट कारण हैं। अतः लक्षणों को विचार कर उपचार करना चाहिए। जिस रोग विशेष से शिरदर्द हो उस रोग का निराकरण सर्वप्रथम किया जाय। तदुपरांत शिर-दर्द स्वय मिट जायगा। उदाहरण के लिए ले लीजिए कि यदि ज्वर के कारण शिरदर्द है तो प्रथम ज्वर का उपचार किया जाय। यदि कोष्ठबद्धता (कब्ज) के कारण शिरदर्द हो तो कब्जनाशक औषधि सेवन कराइए। मल त्याग के बाद दर्द मिट जायगा। नीचे केवल ऐसे योग लिखे गए हैं जो साधारणतः देखने में आते हैं। अपनी आवश्यकतानुसार नुस्खा तैयार कर सकते हैं।

७. शिरशूलारि

निस्सन्देह आपने शिरदर्द के सम्बन्ध में अनेक योग देखे, बनाये और अनुभव किये होंगे परन्तु ऐसा सरल और प्रभावोत्पादक योग आपके अनुभव में कदाचित ही आया होगा। स्वल्प परिश्रम से बनायें और प्रकृति का

चमत्कार देखें। आपको आश्चर्य होगा कि साधारण सी वस्तु में इतना विचित्र प्रभाव ? इसके साथ-साथ यह कान और दांत के दर्द की अचूक दवा है। गुणज्ञान केवल अनुभव द्वारा हो सकता है।

विधि—१० ग्राम नौशादर को खूब बारीक पीस कर २० ग्राम पानी में भलीभांति घोल लें और सावधानी से शीशी में डाल लें। शिरदर्द से ग्रस्त रोगी के कान में एक या दो बून्द टपका दें। ईश्वरानुग्रह से शिरदर्द उसी समय मिट जायगा। कान और दांत के रोगियों के दूसरी तरफ के कान में दो बून्दें टपकायें। उसी समय दर्द मिट जायगा। असाधारण योग है।

८. दारचीनी का काढ़ा

यह सर्दी के शिरदर्द के लिए अत्यन्त गुणकारक है। उसी समय दर्द को रोकता है। चीखते और चिल्लाते रोगी थोड़ी देर में हंसने लगते हैं।

विधि—३ ग्राम दारचीनी को २५० ग्राम पानी में औटायें। जब आधा पानी शेष रहे तब उतार कर थोड़ा गर्म-गर्म सा रोगी को पिला दें। यदि इसके साथ एक रत्ती एस्प्रीन दी जाये तो और भी अधिक अच्छा है।

९. धनिये का लेप

यह लेप गर्मी के शिरदर्द के लिए बड़ा गुणकारक है। केवल लेप करने की देर है। रोगी ऐसा अनुभव करेगा जैसे कि उसे कभी शिरदर्द हुआ हो नहीं। बहुत शीघ्र प्रभाव दिखाने वाली साधारण औषधि है।

विधि—१५ ग्राम धनिये को खूब बारीक पीस कर पानी के साथ लेप सा तैयार करें और मस्तिष्क पर लेप करें। तुरन्त आराम होगा।

अन्य—शिरदर्द चाहे गर्मी से हो या सरदी से हो यह लेप अत्यन्त उपयोगी है। मैंने इसका अनेक वार अनुभव किया और इसके प्रभाव को अद्भुत पाया। योग निम्न प्रकार है—

विधि—मुचकुन्द के फूल ६ ग्राम, छोटी इलायची का छिलका ३ ग्राम इन दोनों को बारीक पीस कर मस्तिष्क पर लेप करें। तत्काल आराम होगा।

१०. बनफशा का योग

योग देने वाले सज्जन का कथन है कि मैं चिरकाल तक शिरदर्द से ग्रसित रहा। अनेक उपचार और उपाय दिए गए परन्तु सब व्यर्थ रहे। अन्त में सौभाग्यवश एक सन्यासी जी के दर्शन हुए। उन्होंने मेरे संकट का निवारण किया। उन्होंने इस योग को बतलाते समय कहा था कि या तो पहिले ही दिन आराम हो जायगा अन्यथा तीन दिन में तो अवश्य आराम हो जायगा।

विधि—बनफशा के १५ ग्राम पत्तों को बारीक पीसकर कुछ गर्म कर

मस्तिष्क पर लेप करें। ईश्वरानुग्रह से पहिले ही दिन आराम हो जायगा अन्यथा तीन दिन में तो शिरदर्द बिलकुल न रहेगा।

११. कर्पूरी नस्य

मैंने इस नस्य का कम से कम सैकड़ों बार अनुभव किया है और नित्य इसके गुणों को श्लाघ्य पाया है। जन-साधारण के उपकार की दृष्टि से इस का विवरण नीचे दे रहा हूं।

विधि—नौशादर ५ ग्राम, कर्पूर एक ग्राम। पहिले नौसादर को बारीक पीस लें और फिर कर्पूर में मिला लें। इसे शीशी में भर कर रखें और आवश्यकतानुसार काम में लावें। नस्य की भांति रोगी को सुंघावें। उसी समय आराम होगा।

१२. शिरदर्द नाशक

जो पुराना शिरदर्द डाक्टरों और वैद्यों की अनथक कोशिशों से भी न गया हो वह इसकी केवल एक दो मात्राओं से पूर्णतया मिट जाता है। वह योग प्रकृति के रहस्यों का प्रवक्ता है। हमें आश्चर्य होता है कि छोटी सी वस्तु में प्रकृति ने क्या-क्या रहस्य छिपा रखे हैं। कथित योग यह है।

विधि—सांप की कैंचुली १० ग्राम को खूब बारीक पीसकर १० ग्राम कूजा मिश्री के साथ मिलाकर खूब अच्छी तरह से घुटाई करें और सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। यथासमय इस शुभ औषधि में से केवल एक रत्ती की मात्रा लेकर बताशे में डालकर निगलवा ऊपर से तीन चार घूंट पानी पिला दें। यदि कैपसूल में डाल कर सेवन करायें तो और भी अधिक अच्छा है। आसानी से निगला जायगा। पुराने से पुराना शिरदर्द केवल एक दो मात्राओं से दूर हो जायगा और सदा के लिये छुटकारा मिलेगा। आश्चर्यान्वित योग है।

१३. जादू की बोतल

इस अनुपम औषधि की प्रशंसा हम स्वयं नहीं करते। जो महानुभाव इसे तैयार करके इसका अनुभव करेंगे वे स्वयं इसकी प्रशंसा करते हुए न थकेंगे। हमारे पास यह हर मौसम में तैयार मिलती है। सदा ही इसका बहुत से रोगियों पर अनुभव होता रहता है। कभी इसका प्रभाव कम नहीं रहता। आप भी बनाकर इससे लाभ उठायें।

विधि—थोड़ा सा नौशादर खरीद लावें और इसके बराबर ही चूना कलई। दोनों को बारीक पीस लें और शीशी में भर रखें। यथा समय रोगी को शीशी का मुंह खोलकर सुंघा दें। ईश्वरानुग्रह से दो ही मिनट में आराम हो जायगा। इसके अतिरिक्त उल्ल की पीड़ा, आधासीसी, नजला और जुकाम

के लिए भी यह अचूक दवा है। परन्तु ध्यान रहे कि पहिले एक औषधि को वारीक पीसकर शीशी में डालें और वाद में दूसरी और वोतल को अच्छी तरह हिलाकर आपस में मिला लें। शीशी का मुंह अधिक देर तक खुला न रहने दें अन्यथा औषधि का प्रभाव नष्ट हो जायगा। यदि किसी कारण से औषधि में पूरा प्रभाव न रहा हो तो वोतल को एक दो घण्टे धूप में रख दें। उतना ही प्रभाव पुनः हो जायगा। आपने देखा होगा कि शहरों में लैक्चरार लोग इसी औषधि को चीख चीख कर वेचा करते हैं और ३० ग्राम की शीशी के ८० पैसे लिया करते हैं। परन्तु वह अर्क के रूप में होती है। यदि इसमें पानी मिला लिया जाय तो यह वैसा ही वन जाता है।

अर्धावभेदक

यह एक ऐसा रोग है जो शिर के आधे भाग में हुआ करता है। प्रायः यह रोग पैतृक होता है। परन्तु कई वार नजला और जुकाम के विगड़ जानेपर भी हो जाता है। इस रोग का लक्षण यह है कि पहिले शिर पर चिनगारियां सी उड़ने लगती हैं और फिर कनपटियों की रगें जोर जोर से तड़पने लग जाती हैं, दर्द के कारण शिर फूटने लगता है और प्रकाश वहुत वुरा मालूम होता है।

१४. विचित्र नस्य

आधा सीसी के लिये निम्नलिखित नस्य अत्यन्त गुणप्रद है। वनाकर अनुभव करें। अनुभूत योग है।

विधि—नौशादर की १२ ग्राम की डली लेकर आग पर रखें। जव वह आधी रह जाय तो उतार कर ३ ग्राम लाल गेरू मिलाकर वारीक पीसकर रखें। यथासमय पर काम लावें। एक से दो रत्ती तक नस्य रूप में दें। उसी समय छींकें आयेंगी और मस्तिष्क से मवाद निकलकर दर्द मिट जायगा। अनेक वार अनुभव में आया हुआ योग है।

१५. आधासीसी का उपचार

यह आधासीसी के लिए अत्यन्त लाभप्रद और शतशः अनुभूत औषधि है। इससे लाभ उसी समय होता है।

विधि—कपड़ा धोने का एक रीठा लें। इसका छिलका लेकर थोड़े पानी में खूव मलें। जव पानी झागदार हो जाये तव थोड़ा सा गर्म करके दोनों नासिकाओं में थोड़ा सा टपकायें। तुरन्त आराम हो जायगा।

१६. घृत नस्य

[illegible]र औषधि से भी शिर का दर्द उसी समय कम होकर मिट जाता है।

यदि एक सप्ताह तक निरन्तर इसका प्रयोग किया जाये तो सदा के लिए इस अशुभ रोग से छुटकारा मिल जाता है। बनाकर अनुभव करें और लाभ उठायें।

विधि—भूरी मिर्च जो साधारणतया काली मिर्चों से उपलब्ध होती है, एक ग्राम लें। बारीक पीसकर ३ ग्राम गोघृत में अच्छी प्रकार घोल लें और किसी शीशी में रख छोड़ें। दोनों समय दो-दो बून्द के लगभग नस्य के समान सुड़क लें। बड़ी प्रभाव दिखाने वाली औषधि है।

१७. आधासीसी की स्वादु औषधि

इसके कुछ दिन के सेवन से बहुत पुरानी आधाशीशी नष्ट हो जाती है और पुनः होने की कोई आशंका नहीं रहती।

विधि—खोया और गुड़ ५०-५० ग्राम। दोनों को हावनदस्ते में खूब कूटकर रख छोड़ें। प्रातःकाल १२ ग्राम की मात्रा ६ ग्राम धनिये के पानी के साथ दिया करें। ६ ग्राम धनिये को लेकर खूब घोटो और लगभग २५० ग्राम पानी में मिला करके बिना मीठा मिलाये हुए दें। इससे बहुत पुराने आधा-सीसी रोग का सर्वनाश हो जाता है।

१८. आधासीसी का विज्ञ उपचार

यह ऐसा अनुभूत और उपयोगी योग है कि जिसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। इसका अनुभव करने के बाद आप स्वयं इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करेंगे।

विधि—बाजार से २० ग्राम उस्तेखद्दूस खरीद लावें। समान तोल की इसकी चार पुड़ियां बनालें। प्रतिदिन सूर्य निकलने से पहले एक पुड़िया जल में घोटकर बिना मीठा मिलाये पी लिया करें। यदि ३ ग्राम धनिया और दो काली मिर्चें मिला ली जायें तो और भी अच्छा है। इसमें सन्देह नही कि केवल चार दिन मे पुराने से पुराना आधासीसी रोग जड़ से मिट जायगा। यह अनेक बार मेरे अनुभव में आया है और आधासीसी वालों को मैं सदा यही योग बताया करता हू। ईश्वरानुग्रह से सबको आराम हो जाता है। आज तक कभी किसी ने शिकायत नहीं की अपितु बहुत अधिक प्रशंसा करते हैं।

अन्य

जो चमत्कारिक नस्य नजला और जुकाम के विषय में बताई जा चुकी है, वह भी आधासीसी का अन्तिम उपाय है। केवल २ रत्ती सूंघने से मस्तिष्क का मल निकलकर मस्तिष्क हल्का हो जाता है और रोगी ऐसा अनुभव

करता है कि उसे कभी दर्द हुआ ही नहीं था। चीखते चिल्लाते हुए रोगी क्षणों में स्वस्थ हो जाते हैं।

अनन्तवात

यह रोग भी आधासीसी का एक विभेद है और वड़ा भयंकर है। परमात्मा इस रोग से हर एक को वचाये। यह ऐसा अशुभ रोग है कि इसके कारण प्रायः आंख जैसे उत्तमांग की भी हानि हो जाती है और मानव जीवन दुःखमय वन जाता है। कई वार इस रोग के ऐसे रोगी आये हैं जिनका क्रन्दन मनुष्य को रुला देता था। दर्द के कारण विलकुल चैन नहीं मिलता। इस रोग के उपचार में विलकुल देर न करें अन्यथा इसके परिणाम वड़े भयंकर हो सकते हैं। नीचे इसके कुछेक प्रसिद्ध योग लिखे जा रहे हैं। ये योग अनुभूत और शीघ्र प्रभाव दिखाने वाले हैं।

१९. अनंतवात का अनुभूत उपचार

आपकी सेवा में हम अपना गुप्त योग रख रहे हैं जिससे कि हमने आज तक बहुत रुपये कमाए हैं। यह वही योग है जिसे चक्षु रोगों के इलाज करने वाले महोदय वहुत मूल्यवान समझते हैं। वास्तव में यह योग ज़िला जालन्धर और होशियारपुर की तरफ से आने वाले रावल जाति का है। ये लोग अपने देश में तो भिक्षावृत्ति करते हैं परन्तु इधर आकर वैद्य वन जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि इनका यह इलाज प्रशंसा के योग्य है। हमारे इलाके में आकर ये लोग इसी योग के कारण एक एक गांव से वहुत रुपये कमा ले जाते हैं। इसमें विशेषता यह है कि एक दिन थोड़ा सा कष्ट उठाने के वाद इस रोग से सारे जीवन भर के लिए छुटकारा मिल जाता है। इस योग को हमने वड़े परिश्रम से पाया था और हमने बहुत वार अनुभव किया है। सदा पूर्ण सफलता मिली है। अव यह आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि जनता को अधिकाधिक लाभ पहुँच सके। परन्तु सदा यह ध्यान रहे कि दवा आंख में न गिरने पावे।

विधि—जमालगोटे के एक वीज को थोड़ा सा पानी डालकर किसी पत्थर के टुकड़े पर रगड़ें और कनपटियों की तड़पती हुई रगों पर थोड़ा-थोड़ा लेप करदें। ज्योंही दवा सूखी और आराम आया। कई वार इस दवा से कनपटियों पर छाले पड़ जाते हैं। यदि ऐसा हो तो अगले दिन सुई से छेद करके पानी निकाल दें। ईश्वरानुग्रह से सारे जीवन के लिए इस रोग से छुटकारा मिल जायगा।

२०—तूतिया का चमत्कार

यह योग भी उपर्युक्त योग से किसी प्रकार कम नहीं है। वह एक पूज्य महानुभाव से प्राप्त हुआ था। अचूक और प्रभावोत्पादक योग है। बनाकर अनुभव करें।

विधि—आवश्यकतानुसार नीलाथोथा लेकर लोहे के तवे पर रखकर भून लें। औषधि तैयार है। आवश्यकता के समय रोगी का गला कपड़े से घोटें। तुरन्त कनपटी पर एक रग प्रकट होगी। एक रत्ती भुना हुआ नीलाथोथा इस रग पर रख कर ऊपर से एक बूंद पानी डालें। बहुत शीघ्र एक छाला पैदा होगा। उसी समय आराम हो जायगा। इसमें पांच-दस मिनट का कष्ट अवश्य है, परन्तु अनुपम योग है। बनाकर अनुभव करें और प्रकृति का चमत्कार देखें।

अपथ्य—शुष्क चीजें, आलू, बैंगन, उड़द की दाल, प्याज, रात के समय जागने से परहेज करें। दर्द के समय यदि कुछ भी खाने को न दें तो अच्छा है।

आहार—चावल, मूंग की दाल, चपाती और गेहूं इत्यादि इस रोग में लाभप्रद हैं। जो नस्वारें (नस्य) नजला, जुकाम और आधाशीशी के विषय में लिखी हैं वे सब की सब ईश्वरानुग्रह से इस रोग के लिए भी बहुत लाभप्रद हैं। समय पर अपने प्रभाव से रोगी और वैद्य दोनों को प्रसन्न कर देती है।

स्मृति भ्रंश

इस रोग के रोगी की स्मरण-शक्ति बिलकुल नष्ट हो जाती है। इस रोग का रोगी एक तरफ तो बात करता है और दूसरी तरफ जो कुछ कहा सुना था वह सब भूल जाता है। बात याद रखने की बड़ी कोशिश करता है, परन्तु बेबसी के कारण भूल ही जाता है। इधर बात की, उधर भूल गया। यह लक्षण पित्त की प्रधानता का है। इसके विपरीत यह होता है जिसमें याद अधिक रहता है और भूलता कम है। यह रोग प्रायः मस्तिष्क की दुर्बलता या मस्तिष्क में अधिक कफ के एकत्रित होने की अवस्था में होता है। यदि इस रोग का कारण मस्तिष्क की दुर्बलता हो तो मस्तिष्क को शक्ति पहुचाने वाली औषधियों का सेवन करायें। यहां हम बहुत सरल और साधारण चुटकले लिख रहे हैं।

२१—कुण्ठित बुद्धि के लिये

विधि—आवश्यकतानुसार मालकंगनी लें ऊपर का छिलका उतार दें और जो गिरी हो उसका तेल बादाम रोगन की तरह निकालें। और शीशी

में रख छोड़ें। विस्मरण के रोगी को प्रतिदिन प्रातःकाल निराहार मुख बताशे में एक से पांच बूंद तक डाल कर निगल लेना चाहिये। कुछ दिनों के सेवन से बहुत दिनों के कुण्ठित बुद्धि और सुस्ती इत्यादि रोग मिट जायेंगे, परन्तु याद रहे कि बाजारी तेल निकृष्ट होता है। बड़े परिश्रम से स्वयं तैयार करें और फिर देखें कि रोग मिटता है या कि नहीं। (मात्रा एक से पांच बूंद—बलाबल अनुसार।)

२२—विस्मरण अकसीर

योग बताने वाले महानुभाव का कथन है कि मैं बहुत समय तक इस रोग में ग्रस्त रहा। अन्त में मुझे यह योग मिला और अनुभव करने पर बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ। वही योग आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

विधि—वच आवश्यकतानुसार लें और इसको बारीक पीस लें। इसमें इसके बराबर शक्कर मिला लें और किसी शीशी इत्यादि में भरकर रख लें। नित्य प्रति प्रातःकाल ३ ग्राम के लगभग पानी के साथ फांक लिया करें। ८–१० दिनों में पूर्ण आराम हो जायगा। अथवा वच को चाकू से जरा-जरा छील कर २ ग्राम के लगभग भोजन करने के उपरान्त मुख में रख लिया करें और इसके रस को चूसते रहें। इस प्रकार भी यह बहुत लाभप्रद है। सुविधा अनुकूल करें।

२३—अन्य

निम्नलिखित योग भी स्मृति भ्रंश को जड़से उड़ा देता है। चन्द पैसों की दवा प्रतिदिन पर्याप्त होगी।

विधि—प्रतिदिन प्रातःकाल ३ ग्राम दारचीनी ले लिया करें। जल्दी ही इस रोग से छुटकारा मिलेगा।

२४—एक वनौषधि का प्रभाव

इसके कुछ दिन के निरन्तर सेवन से वर्षों का पुराना यह रोग नष्ट हो जायगा और बहुत पहिले की भूली हुई बातें याद आने लग जायेंगी। इसके साथ साथ यह रक्त शोधक भी है।

विधि—छाया में सुखाई हुई ब्रह्मी बूटी ६० ग्राम और काली मिर्च ३ ग्राम। दोनों को खूब बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन २ ग्राम की मात्रा गाय के दूध के साथ प्रातःकाल निराहार मुख रोगी को दिया करें। यदि दूध न मिल सके तो पानी ही सही। बड़ी अनुपम वस्तु है। अनुभव करने से ही इसके गुणों का ज्ञान हो सकेगा।

मस्तिष्क दुर्बलता

यह रोग प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी अधिक परिश्रम, रुधिर की अल्पता, मैथुन बाहुल्यता और हृदय दुर्बलता इत्यादि कारणों से होता है। अधिक तम्बाकू और चाय का पान भी इसके कारण हैं। यह बड़ा अशुभ रोग है। इससे शिरदर्द, नजला, जुकाम और विस्मृति इत्यादि रोग पैदा हो जाते हैं। इस विकार के कारण पुनः विभिन्न भयंकर रोग हो जाते हैं।

रोग के लक्षण

दृष्टि बड़ी दुर्बल हो जाती है और एक चीज की अनेक चीजें दीखने लगती हैं। कानों में बाजा बजने की सी आवाज आया करती है। शिर के पिछले भाग में दर्द रहता है। विस्मरण रोग की तरह इस रोग में भी बातचीत याद नहीं रहती। हर समय चित्त उचाट सा रहता है। किसी काम में मन नहीं लगता। नीचे इसके कुछ नुस्खे दिये जा रहे हैं। बनाकर लाभान्वित हों।

२५. सौंफ का अमृतोपम प्रभाव

इससे मस्तिष्क बलवान और दृष्टि बड़ी तेज हो जाती है। सत्पुरुषों का वचन है कि मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों में सौंफ के समान गुणकारक और लाभप्रद वस्तु अन्य नहीं है। नीचे एक बड़ा सरल योग लिखते हैं। बनाकर अनुभव करें और इसके गुणों को देखें।

विधि—आवश्यकतानुसार सौंफ कूटकर चावल निकाल लें और प्रतिदिन ५ ग्राम प्रातः और सायंकाल पानी के साथ दिया करें। यदि रोगी को कब्ज की शिकायत हो तो किसी कब्जनाशक दवा के साथ सेवन करायें। तब आप देखेंगे कि मस्तिष्क की दुर्बलता कितनी शीघ्र दूर होती है। हमारे घर का यह नियम है कि सदा सायंकाल के समय सब बच्चों को एक दो ग्राम सौंफ के चावल दिया करते हैं। इसी तरह इनका सेवन सारे वर्ष होता रहता है। यह योग बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ है। मेरा मत है कि हर घर में सौंफ का प्रयोग होना आवश्यक है।

२६. धनिया चूर्ण

यह चूर्ण भी प्राय मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों के लिये बडा हितकर और उत्तम सिद्ध हुआ है। इसके दो तीन सप्ताह के निरन्तर सेवन से मस्तिष्क सम्बन्धी सब रोग मिट जाते हैं और हर काम में मन लगा रहता है। किसी समय भी चित्त उचाट नहीं रहता। योग नीचे लिखते हैं।

विधि—५० ग्राम धनिया और २० ग्राम बडी हरड की छाल को खूब

बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। यदि इसके बराबर शक्कर भी इसमें मिला ली जाय तो बहुत अच्छा हो। आवश्यकता के समय प्रातः सायं ५-५ ग्राम की मात्रा पानी के साथ फांक लिया करें। प्रातःकाल मल त्याग भी खुलकर होगा। सारा दिन चित्त बड़ा प्रसन्न रहेगा और आलस्य आपके पास नहीं फटकेगा।

सन्निपात

यह बड़ा भयंकर रोग है। इससे मस्तिष्क पर या मस्तिष्क के पर्दों के अन्दर एक प्रकार की सूजन सी आ जाती है। यदि सूजन विशेषतः मस्तिष्क पर अधिक हो तो तापांश अधिक होता है और आंखों में बड़ा भारी दर्द होता है। यदि मस्तिष्क के अगले भाग पर सूजन हो तो रोगी की आंखें खुली रहती हैं और वह मुखपर बार बार हाथ मारता है। यदि यह सूजन शिर के मध्य भाग में हो तो रोगी व्यर्थ और बेजोड़ की बातें अधिक करता है जिसे प्रलाप के नाम से पुकारते हैं। बिना इच्छा से पेशाब निकल जाता है। यदि शिर के पिछले भाग में सूजन अधिक हो तो रोगी जो बात कहता या सुनता है उसे तत्काल भूल जाता है। यदि मस्तिष्क के सभी भागों में सूजन का प्रभाव हो तब ये सब लक्षण मिलते हैं। प्राचीन आयुर्वेद विशेषज्ञों ने इस रोग के पांच भेद बतलाये हैं। उन सब का अलग-अलग वर्णन करना यहां पर अपेक्षित नहीं है। नीचे कुछ ऐसे योग लिखे जाते हैं जो सब प्रकार के सन्निपातों के लिए लाभप्रद और गुणकारक है।

२७. सन्निपात हारी पोटली

निम्नवर्णित पोटली सन्निपात के लिए अत्यधिक हितकर है। यह कई बार अनुभव में आ चुकी है और सदा बड़ी प्रभावोत्पादक रही है। जन साधारण के हितार्थ योग नीचे लिखा जा रहा है। बनाकर लाभान्वित हों।

विधि—इन्द्रायण का गूदा और फरफ्यून दोनों को आवश्यकतानुसार लेकर एक पोटली बनालें। रोगी के शिर पर गर्म-गर्म टकोर करें। सर्द सन्निपात के लिए अनेक बार की अनुभूत और अचूक औषधि है।

२८. अनुभूत वटी

यह वटी सब प्रकार के सन्निपातों के लिए गुणकारक है। अनेकों बार इसका अनुभव किया जा चुका है। हर बार इसका प्रभाव बड़ा अद्‌भुत सिद्ध हुआ है। इसका विवरण नीचे लिख रहे हैं।

विधि—माष के आटे की एक ऐसी रोटी तैयार करवायें जो कि रोगी के शिर पर अच्छी प्रकार आ जावे। फिर उसे तवे पर डाल दें। एक ओर से पकने के बाद कच्ची तरफ को तिलों के और सरसों के तेल से चुपड़ कर

गर्म गर्म रोगी के शिर पर बांधें। प्रत्येक तीन घण्टे बाद नई रोटी उपरोक्त विधि से बनाकर बदलते रहें। ईश्वरानुग्रह से केवल एक दो बार के प्रयोग से पूर्ण आराम हो जायगा। परन्तु ध्यान रखें कि रोटी रोगी के शिर से उतर न जाये। बेहोशी की दशा में रोगी रोटी को शिर से उतार कर फेंकने की कोशिश करता है।

२९—सरसाम के लिए तरेड़ा

हर प्रकार के सरसाम (सन्निपात) के रोगी के लिए तरेडा करना बड़ा लाभप्रद होता है और शिर के बालों को नमक के पानी और गेहूं की भूसी से धोना भी बड़ा लाभप्रद सिद्ध होता है। या बकरी के शिर की ताजा ताजा खाल रोगी के शिर पर बांधना भी बहुत गुणदायी है। पांच दस प्रकार के वृक्षों के पत्ते लाकर खूब पकायें और रोगी को तरेडा करें।

अपस्मार

यह भयंकर रोग दौरे से आता है। दौरे के समय रोगी बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ता है। और मुंह से झाग आने लगते हैं। बिलकुल होश नहीं रहता। इसका कारण यह है कि कफ जनित मल मस्तिष्क की गति को बन्द कर देता है। इसके कारण मनुष्य चेतना शून्य हो जाता है। हाथ पांव ऐंठ कर अकड़ जाते हैं। कई बार ऐंठन नहीं भी होती है। यदि रोगी दौरे के समय अपनी जिह्वा को निरन्तर काटने लगे तो मस्तिष्क दुर्बलता और मलाधिक्य के लक्षण हैं। यहां पर अधिक विस्तार न करके इसके निमित्त कुछेक अत्युपयोगी योग लिखते हैं। ये सब योग अनुभूत और अचूक हैं।

३०—अपस्मार नाशक अपूर्व नस्य

विधि—मिट्टी के एक कूजे में चार पांच लाल मिर्चें रख कर उसमें एक आक का टिड्डा छोड़ दें। वह एक दिन में मर जायगा। छाया में सुखा कर बारीक पीस लें और सावधानी के साथ शीशी में रख छोड़ें। यथा समय दौरे के अवसर पर रोगी की दोनों नासिकाओं में एक-एक रत्ती नस्य नलकी इत्यादि से पहुँचायें, बहुत शीघ्र होश आ जायेगा। इसी प्रकार दो तीन बार के प्रयोग से पूर्ण आराम हो जायगा।

३१—अपस्मार के लिये सन्यासी योग

नीचे एक ऐसा योग प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि अनेक बार अनुभव में आ चुका है। यह हकीम सन्तोष कुमार हकीम हाजिक कर्त्तारपुरी ने

वार्षिक अधिवेशन के समय लाहौर में प्रकट किया था। हकीम साहब का कथन था कि अपस्मार के लिए इससे अधिक प्रभावोत्पादक योग बहुत कम मिलते हैं। योग इस प्रकार हैं।

विधि—पहली बार गाय ने जो बच्चा दिया हो उस नर बछड़े का गोबर अर्थात् डासा लेकर इसको खरल में डाल कर खूब खरल करें। जब खुश्क होने को हो तब आक का दूध डाल कर खरल करें। खुश्क होने पर पुनः दूध डाल लिया करें। बीस बार हो जाने पर इसे अच्छी प्रकार सुखा लें और इसके आधे भाग के बराबर काली मिर्च मिला कर खूब बारीक पीस कर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय, जब दौरा पड़े तब आधा चावल दवाई नाक में डाल कर नलकी या ऐसी अन्य वस्तु से फूंक मारें। उसी समय रोगी को होश आ जायगा।

३२—अपस्मारघ्न चुटकुला

यह चुटकुला अपस्मार के निवारण के लिये अद्वितीय है। अनेक बार का अनुभूत है। हर बार इसका प्रभाव बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ है। योग इस प्रकार है। यथा आवश्यकता बिच्छू लेकर मिट्टी के एक ऐसे कूजे में डालें जिसको पानी इत्यादि बिलकुल न लगा हो। फिर कूजे को अच्छी तरह कपरौटी करें और सुखा लें। पूरी तरह सूख जाने पर दस पन्द्रह सेर कन्डों के बीच में रखें और आग लगा दें। प्रातःकाल तक आग ठण्डी हो जायगी। उस समय कूजे को निकाल कर देख लें और यदि कुछ कमी हो तो एक आग और दें। जब बिच्छू बिलकुल राख हो जायें तब बारीक पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय थोड़ी सी औषधि रोगी की नाक में रख कर फूंक मारें। तुरन्त होश आ जायगा। इसी प्रकार एक दो बार पुनः करने से इस रोग का सर्वनाश हो जायगा। यह औषधि सात आठ वर्ष तक के बच्चों को भी दी जा सकती है। औषधि पूर्णतः प्रभावोत्पादक और अचूक है।

३३—अपस्मार का अन्तिम तथा अनुभूत इलाज

आयुर्वेद प्रेमियों की सेवा में एक ऐसा योग रख रहा हूं जो सर्वथा अचूक है। इसके एक सप्ताह के सेवन से रोग सदा के लिए चला जायगा। योग भी ऐसा विचित्र है कि आज तक न देखा न सुना होगा। अधिक स्तुति करना व्यर्थ है, परन्तु यह अवश्य कहना पड़ेगा कि यह योग अनुभूत होने पर भी ऐसा है कि आप को सैकड़ों पुस्तकों के पृष्ठ उलटने पर भी नहीं मिलेगा। हमें यह बड़ी कठिनाइयों से प्राप्त हुआ था। आपकी सेवा में बिना भेद भाव के प्रस्तुत किया जा रहा है, योग इस प्रकार है।

विधि—पहिले एक जायफल में छेद करके रोगी के गले में बांध दें और भैंसे के खुर (सुम) जलाकर राख कर लें। नित्यप्रति ३ ग्राम की मात्रा में बारीक पीसकर पानी के साथ निराहार मुख रोगी को दें। इसके साथ गधे के खुर की अंगूठी बनाकर रोगी के दाहने हाथ वाली कनिष्टका उंगली में पहना दें। इसी प्रक्रिया को एक सप्ताह तक जारी रखें। इससे वर्षों का रोग अत्यल्प काल में समूल नष्ट हो जायगा। यह अनुभूत और अनुपम योग है वनाकर प्रकृति को देन से लाभ उठायें।

नोट—इस रोग के चिकित्सक महानुभावों से निवेदन है कि जिस रोगी का उपचार इस विधि से किया जाय उससे एक भी पैसा न लिया जाय चाहे रोगी अपनी इच्छा से भी देता हो। स्वस्थ होने वाले रोगी का कर्त्तव्य है कि ईश्वर के नाम पर अपाहिजों और भूखों को कुछ न कुछ अवश्य दे।

नेत्र रोग

ईश्वर ने हमें नेत्र सदृश अनुपम वस्तु प्रदान की है जिसके बिना सारा संसार अन्धकारमय और असार है। आप नेत्र रोगी की दारुण अवस्था का अनुमान सहज में ही लगा सकते हैं। ईश्वर ने नेत्रों को सब अंगों में मुख्य बनाया है, तब भी लोग इसकी रक्षा की तरफ पूरा ध्यान नहीं देते। इसीलिए आप नित्य देखते हैं कि अनेक मनुष्य वैद्य, डाक्टरों के पास जाकर शिकायत किया करते हैं कि मेरी दृष्टि दुर्बल है। कोई कहता है कि मेरी आंखों से पानी बहता है और दूसरा कहता है कि मेरी आंखों में कुकरे पड़ गये हैं। सारांश यह है कि कोई कुछ कहता है और कोई कुछ। परन्तु यह सब कुछ हमारी असावधानी का फल है। हमारा कर्त्तव्य है कि नेत्र रोगों का उपचार तत्काल किया जाय अन्यथा तरह तरह के रोगों में ग्रस्त होना पड़ेगा। नीचे कुछेक विशेष नेत्र रोगों के योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। समय पर ये सुधा सार से किसी प्रकार भी कम नहीं होगे।

सावधानी—उपचार बताने से पहिले मैं यह बताना आवश्यक समझता हूं कि यदि मनुष्य निम्नलिखित बातों से सावधान रहे तो वह नेत्र रोगों से प्रायः सुरक्षित रहेगा। धूल, रेत, अधिक ठंडी और अधिक गर्म वस्तुओं का सेवन, मैथुनाधिक्य, शयनाधिक्य, रोदनाधिक्य, चमकदार और तेज प्रकाश की वस्तुएं देखना, बारीक अक्षरों की पुस्तकों का अधिक पढ़ना इत्यादि से सदा बचे रहें।

नोट—यदि आंख में तीव्र वेदना हो रही हो तब या बहुत अधिक सुर्खी हो तब सलाई से औषधि कदापि न डालें। ऐसे अवसर पर ड्रापर से तरल औषधि डाली जाय।

आंखें दुःखना

प्रत्येक छोटा बड़ा इस रोग से भलीभांति परिचित है क्योंकि यह रोग बहुत अधिक होता है। प्राचीन आयुर्वेदाचार्यो ने इसके बहुत से भेद बताए हैं जिनका सविस्तार विवरण यहां पर देना पूर्णतः सम्भव नहीं है। अतः यहां पर शीघ्र प्रभाव दिखलाने वाले सरल योग हीं लिखे जायेंगे।

३४. दुःखती आंखों का शीघ्रोपचार

योग बताने वाले महानुभाव का कथन था कि एक दिन हमारे घर एक बहुत वृद्ध स्त्री आ निकली। संयोगवश मेरे बच्चे की आंख बहुत दुख रही थी। दर्द के कारण बच्चा बड़ा बेचैन था। बुढ़िया ने बच्चे की यह दशा देखी तो अपने पास से झट एक दवाई निकाली। उसने आधा रत्ती औषधि बच्चे की आंख में डाल दी। ईश्वर की अपार लीला कि बच्चा पांच सात मिनट में स्वस्थ हो गया। इस प्रकार दिन में तीन बार दवाई डालने से बच्चे की आंखें बिलकुल ठीक हो गईं। बुढिया ने बड़ी मुश्किल से यह योग अपने हृदय से निकाल कर रखा। तत्पश्चात इसका अनेक बार अनुभव किया गया और इसे अचूक पाया। हमने भी कम से कम एक सहस्र रोगियों पर इसका प्रयोग किया और सब स्थानों पर पूर्ण सफलता मिली। तीन चार वर्ष से यह हमारा अतिप्रिय योग है और दूसरे सब योगों को छोड़कर केवल इसी का उपयोग किया जाता है। इसकी प्रधान विशेषता यह है कि दस पैसे से बीसियों रोगियों को आराम हो जाता है। समय भी नष्ट नहीं होता।

विधि—कच्चा किर्मजी रंग बाजार से ले आवें। वैसे तो यह हरे रंग का होता है परन्तु पानी में घोलने से लाल हो जाता है। इसे बारीक पीसकर या तो सलाई से सुरमे की तरह लगाया करें। यदि ऐसा न हो तो रंग पानी की आधी बोतल में घोल लें। बस अनुपम गुणयुक्त लोशन तैयार है। ड्रापर इत्यादि से आंख में दो दो बूंद डाला करें। हम तो लोशन के रूप में तैयार करते हैं। यदि अर्क गुलाब में घोल लें तब तो इसके गुणों का क्या कथन है। केवल अनुभव करने से ही प्रभाव का परिचय हो सकता है।

३५. नेत्र लालिमा नाशक लेप

इस लेप से आंखों की लालिमा बहुत शीघ्र दूर होकर बिलकुल आराम हो जाता है। एक सन्यासी जी इस योग का बड़ा प्रयोग करते थे और इसी-लिए यह योग संन्यासी चमत्कार के नाम से विख्यात है। किसी प्रकार यह हमें भी प्राप्त हो गया और अनुभव करने पर अमृत के समान गुणों वाला सिद्ध हुआ है। वही आपकी सेवा में समर्पित है। योग यह है।

विधि—सफेद फिटकड़ी २ ग्राम और बकरी का दूध १२ ग्राम। दूध

को एक चमचे में डाल कर आग पर रखें। जब दूध खूब गरम हो जाये तब पहिले से बारीक की हुई फिटकड़ी चम्मच में डाल दें। जब दूध खुश्क हो जावे तो बारीक पीस कर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता पर स्त्री के दूध के साथ आंखों पर लेप कर दें। यदि किसी प्रकार स्त्री का दूध न मिले तो बकरी के दूध के साथ लेप करें। यह औषधि एक रोगी के लिए लिखी गई है। इसी अनुपात से जितने रोगियों के लिए चाहें बना लें।

३६—बिना पैसे का योग

यह दु:खती आंखों के लिए एक अनुभूत और अचूक औषधि है। जिस तरफ की आंख दु:खती हो उसके दूसरे तरफ के पांव के अंगूठे के नाखून पर आक के दूध का लेप करें। यदि दोनों आंखों में दर्द हो तो दोनों अंगूठों पर लेप करें। लेप को रात भर रखें। प्रातःकाल पानी से साफ कर दें। हर प्रकार की दु:खती आंखों का अचूक इलाज है।

३७—पटवारी की प्रसिद्धि

यह योग मेरे परम मित्र पटवारी अमरनाथ जी से प्राप्त हुआ है। इस योग के कारण वे अपने इलाके में बहुत अधिक प्रसिद्धि के अधिकारी बन चुके हैं। इनके पास रोगी दस दस कोस से दवाई लेने के लिए आते हैं और सबको एक ही दिन में आराम हो जाता है। वे अपने इलाके में प्रसिद्ध नेत्र रोग विशारद हैं। एक दिन मैंने पटवारी जी से कहा कि पटवारी जी अपना गुप्त योग तो बतलाइये। पटवारी जी ने वह योग मुझे सहर्ष बतला दिया। बनाकर अनुभव किया गया तो उनके कथन से भी अधिक लाभप्रद पाया। वह आपकी सेवा में प्रस्तुत है। बनाकर लाभ उठाइये। विशेषता यह है कि यह सब प्रकार की दु:खती आंखों के लिये समान रूप से लाभदायक है।

विधि—भुनी हुई फिटकड़ी ६ ग्राम और कलमी शोरा ६ ग्राम, दोनों को बारीक पीस लें। बरसात के एक बोतल पानी में इनको अच्छी प्रकार घोल लें। बस औषधि तैयार है। दिन में तीन बार २-२ बून्दें ड्रापर द्वारा डालने से एक ही दिन में आराम हो जाता है। यदि कुछ कमी रह जाय तो अगले दिन पुनः उसी प्रकार ३ बार औषधि डालें। तब रोग का कोई चिन्ह अवशेष न रहेगा। अनकों बार की अनुभूत औषधि है और स्त्री पुरुष आबाल, वृद्ध के लिए गुणकारक है।

३८—दु:खती आंखों के लिये पोटली

विधि—भुनी हुई फिटकड़ी एक ग्राम और अफीम एक ग्राम। दोनों को मिलाकर थोड़े से घृतकुमारी के गूदे में मिलाकर पोटली बना लें। पोटली

को बार बार आंख पर फिराते रहें। आंखों में इसकी बून्दें टपकाते रहें। इससे चीखता चिल्लाता रोगी देखते २ ठीक हो जाता है। दुःखती आंखों के दर्द को रोकने के लिए तो यह योग सर्वथा बेजोड़ और अनुभूत है।

विभिन्न नेत्र रोगों के लिये

नीचे कुछ ऐसे योग लिखे जा रहे हैं जो विभिन्न नेत्र रोगों के लिए गुणकारी हैं।

३९–नेत्र रोग निवारक अंजन

पीतल की एक बड़ी थाली लेकर इसको सरसों के तैल से चुपड़ लें। तदन्तर एक गढ़ा बनाकर उसमें आधी सूखी हुई गधे की ५ सेर लीद डाल दें। गढ़े के इधर उधर तीन चार ईंटें रख कर आग लगा दें। जब धुआं निकलने लगे तब थाली को तैल वाली तरफ से औंधा करके इस पर रख दें। जब आग ठन्डी हो जाये तब थाली उतार लें। तत्पश्चात् बिना हाथ फेरे थाली में से एक सौ एक बार पानी बहा दें। जब थाली बिलकुल खुश्क हो जाय तो लोहे के हथौड़े से खरल करना शुरू करें। जो धुआं थाली में लगा होगा वह पिसते-पिसते सुरमे के सदृश हो जायगा। यदि इस औषधि का तेल बारह ग्राम हो तो इसमें तीन ग्राम रसौत और तीन ग्राम काला सुरमा और मिला लें। खूब बारीक होने पर सावधानी से शीशी में रखें। आंखों के सब प्रकार के रोगों के लिए एकमात्र औषधि है। शाम के समय ३-३ सलाई डाला करें। धुन्ध, गुबार, जाला, पड़वाल, प्रारम्भिक लालिमा, मोतिया बिन्दु और दुःखती आंखों इत्यादि में यह गुणकारक है। इसके कुछ दिनों के प्रयोग से उपरोक्त सब रोग समूल नष्ट हो जाते हैं। इसके नित्य उपयोग करने से दृष्टि तीव्र रहेगी। अनुपम योग है।

४०–दृष्टि दुर्बलता

दृष्टि की दुर्बलता के लिए निम्नलिखित योग बड़ा ही लाभप्रद है। बहुत थोड़े समय के प्रयोग से गई हुई दृष्टि लौट आती है। अगर स्वस्थ पुरुष इसका उपयोग करें तो जीवन भर दृष्टि ठीक रहती है। योग यह है।

विधि—हल्दी २५ ग्राम और कलमी शोरा ६ ग्राम दोनों को खूब बारीक पीस कर गुबार के समान बना लें। दवा तैयार है। किसी शीशी में सुरक्षित रखें। प्रातः और सायं ३-३ सलाई डाला करें। धुन्ध, गुबार, दृष्टि दुर्बलता इत्यादि के लिए अत्याधिक लाभप्रद है। अनुभव करें।

४१–दृष्टि दुर्बलता के लिये अपूर्व सुरमा

इसके कुछ दिन प्रयोग करने से नेत्र के सब रोगों का समूल नाश

हो जाता है। विशेषतः नाखूना, कण्डू और पानी जाने के लिए बड़ा गुणकारी है।

विधि—२५ ग्राम जस्त को कड़ाही में डाल कर नीचे आग जलाना शुरू करें। साथ साथ नीम की लकड़ी से चलाते रहें। थोड़ी देर में जस्त की भस्म बन जायगी। तब इसको खरल में डाल कर एक दिन निरन्तर नीम्बू के रस के साथ खरल करें। खुश्क करके शीशी में भर लें। यथा विधि सुरमे की तरह आंखों में लगाया करें। हर प्रकार के नेत्र रोगों के लिए लाभदायक है और प्रारम्भिक मोतिया विन्दु के लिए भी लाभप्रद है।

४२—अन्य

विधि—सफेद सुरमा १० ग्राम, समुद्रझाग ५ ग्राम और नमक सैंधव ५ ग्राम। तीनों औषधियों को खरल में डालकर बिलकुल सुरमे की तरह बना लें। बस दवा तैयार है। दोनों समय सुरमे की तरह लगाया करें। दृष्टि की दुर्बलता के अतिरिक्त और बहुत से नेत्र रोगों में भी यह बड़ा लाभप्रद है। बना कर अनुभव करें और लाभ उठायें।

मोतिया बिन्दु

इस रोग में प्राकृतिक रूप से एक प्रकार का पानी उतर आता है। इसे मोतिया बिन्दु के नाम से पुकारा जाता है। परमात्मा बचाये यह बड़ा भयकर रोग है। इसकी निर्दयता से लाखों पुरुष नेत्र हीन होकर जीवित भी मृत समान हो जाते हैं। यदि प्रारम्भ में इसका उपचार किया जाय तो आसानी से चला जाता है। कुछ समय बीत जाने पर इसका इलाज बड़ा कठिन हो जाता है। अतः आवश्यक है कि इस भयकर रोग का उपचार शुरू में ही किया जाय। नीचे कुछ उपयोगी चुटकले लिखे जाते हैं। इनके प्रयोग से उतरा हुआ पानी रुक जाता है और दृष्टि बिलकुल पहिले की तरह साफ हो जाती है।

४३—अद्भुत सलाई

इससे बहुत शीघ्र प्रारम्भिक दशा का मोतिया विन्दु मिट जाता है और दृष्टि पहिले की तरह साफ हो जाती है। यह एक विशेष गुप्त और प्रमुख योग है। तैयार करके चमत्कार देखें। योग यह है।

विधि—नौशादर ठीकरी और नील के बीज ६-६ ग्राम। दोनों को बारीक पीस कर सुरमे के समान बना लें और शीशी में रख छोड़ें। यथा विधि सुरमे की तरह पहिले एक एक सलाई लगाया करें। कुछ दिनों के बाद ३-३ सलाई प्रातः और सायं लगाते रहें। ईश्वरानुग्रह से रोग बहुत शीघ्र दूर हो जायगा। अनुभूत और अचूक है।

४४—आपरेशन अनावश्यक

डाक्टर लोग मोतिया वालों का इलाज केवल आपरेशन से करते हैं और आपरेशन में बहुत कष्ट होता है। नीचे एक ऐसा योग प्रस्तुत किया जा रहा है जिसके द्वारा बिना आपरेशन मोतिया बिन्दु समूल और शीघ्र नष्ट हो जाता है। बड़ा उत्तम उपचार है, अनुभव करके देखें। योग यह है—

विधि—बरसात में वृक्षों के नीचे हरे रंग के मेंडक फिरा करते हैं। एक ऐसा मेंडक लें और इसके बराबर मात्रा में बिनौले लें। दोनों को आग में जलाकर राख बना लें और बारीक पीस कर सावधानी से शीशी में रख लें। दोनों समय ३-३ सलाई लगाया करें। बहुत शीघ्र इस रोग से स्थाई छुटकारा मिलेगा। अद्वितीय योग है।

४५—धुन्धहारी सुरमा

यह योग अत्यन्त ही प्रभावकारी है। इसके कुछ दिनों के उपयोग से धुन्ध इत्यादि सब रोग बिलकुल मिट जाते हैं। अधिक स्तुति अनुपयुक्त है। बनाकर देखें।

विधि—एक सांडा लें। यह छपकली के सदृश एक जंगली जानवर है। इसका पेट चीर कर सारा मल निकाल फेंकें। उसके बाद २५ ग्राम सुरमे की डली इसके पेट में रख कर एक मिट्टी के कूजे में बन्द करें और ऊपर से कपरौटी करें। इसे आठ किलो उपलों की आंच दें। सर्द होने पर निकाल कर बारीक पीस लें। जब बिलकुल बारीक सुरमे के समान हो जायें तब शीशी में सुरक्षित रखें। दोनों समय २-३ सलाई लगाया करें।

४६—धुन्ध का दूसरा सन्यासी योग

नीचे एक सन्यासी योग लिखा जा रहा है। यह बड़ा ही प्रभावोत्पादक और अचूक है। इसके कुछ दिन सेवन करने से धुन्ध गुबार और पानी जाना इत्यादि रोगों का नाश हो जाता है। योग यह है।

विधि—बारह सींगे के सींग को स्त्री के दूध में घिसकर दोनों आंखों में लगाया करें। अनुभूत हितकर है।

ढलका

इस रोग के कारण आंखों में हर समय एक चेपदार सी आर्द्रता बहती रहती है। इससे आंखों में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। नीचे इसके लिये कुछेक अनुभूत और सफल योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। जो इस रोग के लिए निस्सन्देह लाभकारी हैं। बनाकर लाभ उठायें।

४७—ढलका का सफल उपचार

निम्नलिखित योग से बहुत शीघ्र आराम होकर रोग जड़ से चला जाता है। फिर कभी इसका डर नहीं रहता।

विधि—पीत हरीतकी की गुठली की राख, नमक सेंधा और माजु। तीनों औषधियों को बराबर २ लेकर खूब बारीक पीस लें और सावधानी से रख छोड़ें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं ३-३ सलाई डाल लिया करें।

४८—अक्सीरी काजल

बड़ा ही अनुपम योग है। इसके कुछ दिनों के प्रयोग से पुराने से पुराना रोग बिलकुल जड़ से चला जाता है। बनाकर अनुभव में लायें।

विधि—भांगरे के पत्तों का रस निकाल कर एक आध गज कपड़े को इसमें खूब तर करके सुखा लें। सूख जाने पर काली मिर्च १० ग्राम और लाहौरी नमक १० ग्राम लेकर दोनों को बारीक पीस लें और उपरोक्त कपड़े पर छिड़कें, और इस कपड़े का फलीता बनाकर दीपक में रखें। फिर गौ-घृत डाल कर काजल प्राप्त करें। बस औषधि तैयार है। बारीक पीस कर शीशी में भर लें। नित्य प्रति सुरमे के समान काम में लावें आठ दस दिनों के प्रयोगसे आराम होना शुरू हो जायगा। अनेक वार अनुभव में आ चुका है। सदा लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

४९—गुप्त सन्यासी योग

यह गुप्त योग एक बहुत प्रसिद्ध संन्यासी जी से प्राप्त हुआ है। बड़ी सेवा के पश्चात् उन्होंने अपना यह रहस्य हृदय से निकाला था। इसकी एक सलाई लगाने से आंख से बहते हुए पानी की धारा एक दम रुक जाती है। संन्यासी जी मजाक में कहा करते थे कि यदि घर के सब छोटे बड़ों का अवसान हो जाये तब भी इसके प्रयोग से एक आंसू भी आंख से न निकलेगा। कितने भारी आश्चर्य की बात है। जन साधारण के हित सम्पादन की दृष्टि से इसे प्रस्तुत किया जा रहा है। बना कर अनुभव में लावें।

विधि—उत्तम मिश्री ३० ग्राम और नीलाथोथा ५ रत्ती। पहिले मिश्री को खरल में डाल कर खूब खरल करें। जब बिलकुल गुबार के समान हो जाय तब पुनः नीलाथोथा डाल कर खरल करें और सावधानी से शीशी में रक्खें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं दोनों समय लगायें। अनेक वार का अनुभूत योग है।

पड़वाल

इस अशुभ और भयंकर रोगसे प्रत्येक बच्चा तक परिचित है। इसका सविस्तार वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। केवल इतना बता देना पर्याप्त है कि आंखो मे अधिक बाल पैदा हो जाने को पड़वाल कहते है। जब ये बाल आखो मे पैदा हो जावें तब अत्यन्त कष्ट होता है। कुछेक विशेष प्रसिद्ध चुटकुले यहा निवेदन किये जा रहे हैं। तैयार करके इनकी सत्यता को जाचें।

५०—सरल उपचार

यह रोग पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक होता है। अतः इस रोग के कष्ट का अनुमान वे लोग ही कर सकते हैं जिन्हें कभी इस रोग से सामना करना पड़ा है। परमात्मा बचाये रखे बड़ा ही कष्ट देने वाला रोग है। नीचे इसका एक बड़ा सरल और अनुभूत चुटकला प्रस्तुत किया जा रहा है। बना कर अनुभव से देखें कि कितना लाभप्रद है। योग यह है।

विधि—आवश्यकतानुसार तेलिया सुहागा लेकर बारीक पीस लें। तत्पश्चात् इसे नीबू के रस मे भिगो दें। सूख जाने पर सुहागे को बारीक पीस कर शीशी मे भर कर रख लें। आवश्यकता के समय मोचने के द्वारा बाल उखाड़ कर थोड़ी सी दवाई मल दें। या तो एक बार के प्रयोग से ही मुक्ति मिलेगी। यदि कोई कमी रह जाय तो दोबारा बाल पैदा होने पर ठीक पहले की तरह फिर दवाई लगायें। दो तीन बार के प्रयोग से सर्वथा पूर्ण आराम हो जायगा। बड़ा ही विस्मयकारक चुटकला है।

५१—अन्य

यह योग उपरोक्त सदृश बड़ा लाभकारक है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि केवल दस-पन्द्रह मिनट में तैयार हो सकता है। योग यह है।

विधि—भुना हुआ नीला थोथा २ ग्राम और नीम का कोयला १२ ग्राम। दोनों को बारीक करके शीशी में भर लें। नित्य सुरमे के सदृश व्यवहार में लावें। इसके कुछ दिनो के निरन्तर उपयोग से यह रोग सदा के लिए मिट जायगा।

५२—सफेद दारू

यह योग भी अन्य योगों की अपेक्षा किसी प्रकार कम नहीं है। कभी-कभी तो यह बड़े-बड़े नुस्खों से बाजी ले जाता है। यह प्रायः अचूक है। बिलकुल साधारण वस्तु है, परन्तु गुण और लाभो में सर्वथा असाधारण है।

विधि—आवश्यकतानुसार नौशादर लेकर बारीक पीस लें और शीशी

में डाल रखें। जरूरत के समय बाल मोचने से उखाड़ कर उंगली के द्वारा बारीक नौशादर बाल उखड़े हुये स्थान पर लगावें। दो तीन बार ऐसा करने से पूर्ण आराम हो जायगा।

नक्तान्ध

इसको अन्धराता भी कहते हैं। यह प्राय: दृष्टि की दुर्बलता से होता है। रोगी को रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता। इसका मुख्य कारण यह है कि आमाशय से मलवाष्प उठ कर मस्तिष्क की तरफ जाते हैं इसके दोष विकार से यह रोग उत्पन्न होता है। यदि यह रोग जन्म से हो या बहुत पुराना हो तब बड़ी मुश्किल से जाता है। यदि शीघ्र उपचार किया जावे तो कुछ दिनों में ही मिट जाता है। नीचे कुछ ऐसे योग लिखे जाते हैं जो अनेक बार के अनुभूत हैं।

५३—नक्तान्ध के लिये अद्भुत योग

इसके एक ही दिन के सेवन से पूरा आराम हो जाता है। पूरे एक सप्ताह के सेवन से बहुत पुराना रोग कट जाता है। प्रशंसा का पात्र योग है।

विधि—नकछिकनी एक ग्राम, बनफशा का तैल तीन ग्राम। नकछिकनी को खूब बारीक पीस कर बनफशा के तेल में मिला लें। आवश्यकता के समय इस मिश्रण को नस्य के समान दें। एक ही दिन में आराम हो हो जायगा। परन्तु सावधानी के लिये एक सप्ताह तक अवश्य प्रयोग करायें। अत्यधिक प्रभावोत्पादक और आसान चुटकला है।

५४—एक बूटी का चमत्कार

कम से कम एकसौ रोगियों पर अनुभव करने के उपरान्त यह योग इस स्थान पर लिखा जा रहा है। बनाकर प्रकृति के चमत्कारों से लाभान्वित हों। योग यह है।

विधि—चौलाई एक प्रसिद्ध शाक है। साधारणतया लोग इसका शाक बना कर खाया करते हैं। रात के समय इसका शाक बिना नमक-मिर्च मिलाये जितना खा सकते हों घी मिला कर खायें। ३ दिन तक इसी प्रकार खाते रहें। रोग समूल नष्ट हो जायगा। उपर्युक्त साग भोजन के एक घन्टा उपरान्त खाना चाहिये।

५५—नक्तान्ध नाशक सुरमा

जब बहुत से इलाज करने पर भी इस रोग से छुटकारा न मिले तो निम्नलिखित योग बना कर प्रयोग मे लावें। इससे रोग सदा के लिये मिट जायगा। विशेष रूप से अनुभूत है।

विधि—नोशादर १० ग्राम, और भुनी हुई फिटकड़ी १० ग्राम। दोनों को पूरा एक दिन पलान्डु के रस मे खरल करके खुश्क कर लें। किसी शीशी इत्यादि मे सावधानी से डाल रखें। आवश्यकता के समय सुरमे की तरह आखों में लगाया करें। दो तीन दिनों में रोग बिलकुल न रहेगा।

५६–अन्य

साबुन एक ग्राम, कालीमिर्च नग १०, और हुक्के का मैल चार रत्ती। सब को बारीक पीस कर प्रतिदिन सलाई से आंखो में लगाया करें। कुछ दिनों के लगाने से रोग बिलकुल नष्ट हो जायगा। यदि यह औषधि सुरमे की तरह खुश्क न हो तो पानी के द्वारा मरहम सी बनाकर डिबिया में डाल लें। जरा जरा सलाई से लगा कर आंखों में लगाया करें। इस प्रकार भी लाभप्रद रहेगा।

५७–सरल योग

यह योग भी बड़ा उत्तम है। प्रसिद्ध विशेषज्ञों द्वारा प्रमाणित है कि नक्तान्ध के निवारण के लिए यह एकमात्र योग है।

विधि—सौंफ के हरे पत्तों का पानी और शुद्ध मधु। दोनों को बराबर मात्रा में लेकर आपस में खूब मिला लें। इसे किसी खुले मुंह की शीशी में डाल लें। दोनों समय २-२ सलाई डाल लिया करें।

फोला

आंखों की कालिमा पर सफेद चिन्ह पड़ जाने को फोला कहते हैं। जो हल्का हल्का आकाशवत् होता है, उसे जाला कहते हैं। यह रोग प्रायः आंख दुखने के समय अनियमित उपचार के कारण होता है। अथवा पुतली पर चोट लगने से घाव के कारण से भी हो जाया करता है। बच्चों का फोला जल्दी चला जाता है। जवानों और वृद्धों का मुश्किल से जाता है। नीचे कुछ अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

५८–फोला का अचूक उपचार

इसके प्रयोग से फोला बहुत शीघ्र दूर होकर आंख बिलकुल साफ हो जाती है। यह एक विशेष गुप्त योग है। बनाकर अनुभव में लायें और प्रकृति के निहित गुणों मे लाभ उठायें। योग यह है।

विधि—कटकारी (कटाई) की जड़ १५ ग्राम को चार नीबुओं के रस में बारीक पीस लें। सूख जाने पर कपड़े के द्वारा छान कर शीशी में सावधानी से रखें। आवश्यकता के समय एक एक सलाई ठीक फोला के ऊपर लगाया करें। कुछ दिनों के प्रयोग से पूर्ण आराम हो जायगा।

५९—अन्य

सैंधा नमक १० ग्राम, देशी साबुन १० ग्राम और सरसों का तेल ३० ग्राम। पहले तेल को किसी चम्मच इत्यादि में डाल कर आग पर रखें। जब तेल खूब गर्म हो जाये तब साबुन को चाकू से बारीक काटकर तेल में डाल दें। थोड़ी देर में बारीक किया हुआ नमक भी डाल दें। चमचे में कोई तिनका इत्यादि फिराते रहें। जब पकते पकते मरहम का रूप धारण कर ले तब आग से उतार कर सर्द होने पर किसी डिबिया में डाल दें। आवश्यकता के समय आधी रत्ती-दवा हाथ की हथेली पर रख कर अंगुली द्वारा घिस कर आंख में लगाया करें। अनुभूत है।

नोट—आग जितनी नरम होगी दवा उतनी ही अधिक लाभप्रद अवश्य बनेगी।

६०—चेचक का फोला

इसके उपयोग से प्राय: चेचक का फोला भी मिट जाता है। योग बताने वाले महानुभाव का कथन था कि आठ दस मास लगाने से पुराने से पुराना फोला चला जाता है। बड़े बड़े योग इसके समक्ष तुच्छ दीख पड़ते हैं।

विधि—काले गधे का दांत पानी के साथ पत्थर पर घिसकर फोले वाली आंख में सुरमे की तरह लगाया करें। कुछ दिनों के लगाने से आराम होना शुरू हो जायेगा।

गुहांजनी

गुहांजनी एक साधारण नेत्र रोग है। इससे भी बड़ा कष्ट होता है। नीचे इसको दूर करने के लिये कुछ सरल चुटकले लिख रहे हैं। बना कर अनुभव में लावें।

६१—गुहांजनी अकसीर

ईश्वर की विचित्र लीला देख कर मनुष्य आश्चर्यान्वित हो जाता है। उसका निरन्तर धन्यवाद करने पर भी वह अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं कर पाता। कुछ बूटियां विशेष रोगों के प्रति इतना प्रभाव दिखाती हैं कि हम यह विचारे बिना नहीं रह सकते कि ईश्वर ने यह बूटी केवल इसी रोग के हेतु पैदा की है। इस विषय में इमली के बीजों का प्रयोग बड़ा महत्वपूर्ण है। इस से रोग बिलकुल नष्ट हो जाता है। योग अनेक बार का अनुभूत है।

विधि—इमली के बीजों की गिरी को पत्थर पर घिस कर गुहांजनी पर लेप करें। तत्काल ठंडक पड़ जाती है। भविष्य के लिए यह रोग इस प्रकार उड़ जाता है जैसे गधेके सिरके सींग। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ

कि गुहांजनी के लिए इससे अधिक गुणकारी योग मिलना कठिन है। ईश्वर ने एक साधारण वस्तु में इतना महान् गुण छिपा रखा है जिसका हम सविस्तार वर्णन नहीं कर सकते। परन्तु ऐसी औषधियों का आदर केवल गुणग्राही महानुभाव ही कर सकते हैं। यदि यही औषधि किसी फैशनप्रिय व्यक्ति को बताई जाय तो वह उल्टा वैद्य जी का उपहास करेगा, क्योंकि आजकल कुछ लोग प्रत्येक वस्तु में फैशन देखना चाहते हैं। अतः जैंटलमैन लोगों की दृष्टि में केवल वही औषधि अच्छी है जिसका पैकिंग सुन्दर हो। औषधि का रंग मनोहर हो। बस वही अमृत है। लाभ चाहे रत्ती भर भी न हो। परन्तु यह निश्चयात्मक है कि जैसा प्रभाव भारतीय औषधियों में है वैसा विदेशी औषधियों में नहीं है।

६२–ऐसा ही सरल योग

यह योग बिलकुल खराब पलकों को भी पुनः ठीक करने की क्षमता रखता है।

विधि—हरी मकोय के १२ ग्राम पानी में एक ग्राम नीलाथोथा घोल करके शीशी में सावधानी से रखें। आवश्यकता के समय फुरेरी से लेप करें। तत्काल आराम होगा।

६३–अन्य

हरा कसीस एक रत्ती को एक दो मुनक्का के साथ बारीक पीसकर गुहांजनी पर लेप करें। एक दिन में आराम हो जायगा। बड़ी प्रभावोत्पादक और गुणकारी औषधि है। अनेक बार अनुभव में आ चुकी है।

बाहमनी पलक

पंजाबी में भी इसे बाहमनी के नाम से पुकारते हैं। इसका एक बड़ा सरल और अनुभूत योग है। बनाकर प्रकृति का चमत्कार देखें। मकोय और नीलाथोथा वाला योग भी बाहमनी पलक के लिए एकमात्र और अनुभूत योग है। जब आंखों की पलकें लाल और मल से दूषित होकर गिर गई हों तो ऐसी अवस्था में यह योग बड़ा लाभप्रद है। कुछ ही दिनों में दोबारा बाल उत्पन्न होकर आंखें शोभायुक्त और सुरक्षित हो जाती हैं। रोग से स्थाई छुटकारा मिल जाता है। प्रस्तुत योग यह है।

विधि—अजमोद ३ ग्राम को बारीक पीसकर मुर्गी के एक अण्डे की सफेदी में खूब घोल लें। परमात्मा का नाम लेकर पलकों पर थोड़ा-थोड़ासा लेप कर दिया करें। कुछ दिनों में सब गड़बड़ दूर हो जायगी।

६४—बाहमनी नाशक सुरमा

निम्नलिखित सुरमा बाहमनी रोग के नाश करने में अद्वितीय और विशेष प्रभाव रखता है। बाहमनी पलक के लिए अनुपम दवा है।

विधि—सफेद अभ्रक १२ ग्राम, काला सुरमा ३ ग्राम। दोनों में से प्रत्येक को खूब बारीक पीसकर गुब्बार के समान बना लें। फिर दोनों को मिलाकर घुटाई करें। प्रातः सायं ३-३ सलाई लगाया करें।

६५—आंख का घाव

यदि किसी कारण से आंख में घाव हो जावे तो निम्नलिखित योग का प्रयोग अत्यधिक लाभप्रद है। कुछ दिनों के प्रयोग से घाव बिलकुल मिट जाता है।

विधि—आवश्यकतानुसार हरी मेथी का रस निकालकर शीशी में डाल लें। यथा समय आंख में लगाया करें। अनुभूत और अचूक दवा है।

६६—कुकरे

इस योग की तुलना में कापर कास्टिक और जिकलोशन इत्यादि औषधियां बिलकुल तुच्छ हैं। बनाकर अनुभव में लायें और प्रकृति चातुर्य की महिमा का गुणगान करें। योग इस प्रकार है।

विधि—५ ग्राम सफ़ेद कत्था को खूब बारीक पीसकर शीशी में रखें। आवश्यकता के समय एक रत्ती की मात्रा आंख में डाला करें। दवाई डालने से बड़ा आराम और चैन का अनुभव होगा। ५-७ दिन में बड़े से बड़ा कुकरा जड़ से चला जायगा। यही औषधि बच्चों को भी दी जा सकती है।

६७—अन्य

विधि—सफेद फिटकरी और कूजा मिश्री समान मात्रा में लें। दोनों को बारीक पीसकर शीशी में सावधानी से डाल लें। नित्य प्रति तीन तीन सलाई डाला करें। यह भी बड़ी लाभकारी और अनुभूत औषधि है। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सबके लिए यह समान रूप से लाभ करती है।

६८—तथानुकूल

विधि—नीलाथोथा और मिश्री समान मात्रा में लेकर गुललाला के अर्क से खरल करके आंखों में लगाना बड़ा लाभप्रद है।

कर्ण रोग

शरीर के विभिन्न अवयवों में कान का एक विशिष्ट स्थान है। जिस प्रकार हम आंखों से देखते हैं, रसना से रस का आस्वादन करते हैं, त्वचा से वस्तुओं को स्पर्श करते हैं, जिव्हा से अपने विचार अन्य मनुष्यों तक पहुंचाते हैं, इसी प्रकार हम कानों से शब्द श्रवण करते हैं। इनमें से प्रत्येक का बड़ा महत्व है। इनमें से एक के न होने से ही मनुष्य अंगहीन बन जाता है और उसका सौंदर्य तथा शोभा नष्ट हो जाती है। उसका ज्ञान भी अधूरा रहता है। आंखों के बिना सारा संसार अन्धकारमय होता है। पांवों के बिना हम वृक्षों को अपेक्षा अधिक शक्ति नहीं रख सकते थे। रसना के बिना विश्व के सब स्वाद और मजे सर्वथा निरर्थक रहते। उसी प्रकार कानों के अभाव में सारा जगत हमारे लिए नीरस और शब्दहीन रहता। मानव पशु-पक्षियों से भी कम रहता, अपने विचार एक दूसरे को नहीं समझाये जा सकते थे और सुन्दर संगीत इत्यादि का जन्म भी न होता। कर्णों के न होने पर वाणी का होना भी कोई लाभ न कर सकता। इतना अनुपम महत्व होने पर कुछ लोग कानों की रक्षा की ओर ध्यान नहीं देते। जब समय बीत जाता है तब चिन्ता करते हैं, परन्तु सब व्यर्थ। नीचे कर्ण रोगों से सम्बन्धित कुछेक विशिष्ट और अनुभूत योग प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इनको अनुभव में लाकर अपना तथा जन साधारण का उपचार करें।

६९—इन्द्रायण तैल

इस तैल के प्रयोग से बहिरापन और कान की झनझनाहट इत्यादि रोग दूर होकर पूर्णतया सुनने लग जाता है। बनाकर इस साधारण वस्तु के गुणों की परीक्षा करें।

विधि—इन्द्रायण का एक कच्चा फल लें। कूटकर पानी निकाल लें। इसमें २५ ग्राम तिलों का तैल मिलाकर मन्द-मन्द आंच पर पकावें। जब पानी जल कर केवल तैल शेष रह जाये तब उतार कर ठण्डा कर लें। ठण्डा होने पर ध्यान से शीशी में रखें। आवश्यकता के समय काम में लावें।

प्रयोग विधि—कानों में तीन बूंदें डालकर कान के छिद्रों में जरा-जरा रुई लगा दिया करें। थोड़ी देर बाद रुई निकलवा कर फैंक दिया करें। इस प्रकार कुछ दिनों के उपयोग द्वारा ईश्वरानुग्रह से पूर्ण आराम हो जायगा।

७०—अन्य योग

मूली का पानी ५० ग्राम और तिलों का तैल २० ग्राम। दोनों को मन्द-मन्द आग पर रख कर पकायें। जब पानी जलकर केवल तैल शेष रह जाये तब उतार लें। अच्छी प्रकार शीशी में डाल लें। आवश्यकता के समय काम में लावें। कानों में दो बून्दें डाला करें। बहुत शीघ्र आराम हो जायगा।

७१—कर्ण घाव

सुहागा बारीक पीस लें। कान में दो रत्ती डालकर ऊपर से नींबू के रस की पाँच-छः बून्दें डालें। तुरन्त एक प्राकृतिक गैस पैदा होगी और सारा मल निकल जायगा। इसी प्रकार समुद्रझाग और कपर्दी भस्म थोड़ी मात्रा में कान में डालकर नींबू के रस की बून्दें ऊपर से डालें। एक प्रकार का उबाल उठकर मल निकल जायगा। कान बिलकुल साफ हो जायगा।

७२—कान से पीप निकलना

निम्नोक्त विधि कान से पीप को निकालने के लिए बड़ी प्रभावोत्पादक है। एक दो बार के उपयोग से कान बिलकुल साफ हो जाता है। बड़ा विचित्र और विस्मयकारक योग है। आप भी इसका परीक्षण करें।

विधि—अंजरूत (लाही) को थोड़ा बारीक करके इसमें थोड़ा सा मधु मिलायें। रूई की एक बत्ती तर करके कान में रखें। ईश्वरानुग्रह से एक दो बार के लगाने से कान का सारा मल निकल जायगा और कान बिलकुल साफ हो जायगा। सदा के लिए इस रोग का भय टल जाता है। सुगम और लाभप्रद चुटकला है।

७३—बच्चे का कान बहना

विधि—रसौंत और आमलासार गन्धक दोनों को समान मात्रा में लें। आवश्यकता के समय पहिले कान को नीम के पत्ते उबले हुए पानी से साफ कर लें। कान के सूख जाने पर कान में एक रत्ती औषधि डालें और नलकी इत्यादि से फूंक मार कर दवाई को कान में घुसा दें। एक मास के निरन्तर प्रयोग से नासूर (नाड़ीव्रण) को भी आराम आ जाता है।

७४—कर्णस्राव

यह योग एक बार हमारे 'रसायन' मासिक में प्रकाशित हो चुका है। बहुत प्रशंसा का पात्र रहा है। इसकी विधि यह है।

नीम के हरे पत्ते बारीक करके मधु मिला करके खूब अच्छी तरह

पीस लें। इसे किसी कपड़े से छान करके सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय दिन में तीन बार दवाई डाला करें। तीन-चार दिन के प्रयोग से पूर्ण आराम हो जायगा।

७५—कर्ण कृमि

नीचे एक ऐसा योग लिख रहे हैं जिससे कान के कीड़े अवश्य निकल जाते हैं। इसके उपयोग से कान के सब कीड़े निकलकर कान ठीक हो जाता है और पीड़ा मिट जाती है। योग यह है।—

विधि—एलवा ५ ग्राम, पलाण्डु का रस १० ग्राम। एलवा पलाण्डु के रस में अच्छी प्रकार घोल लें। आवश्यकता के समय थोड़ा सा कानों में डालें। सारे कीड़े मर कर बाहिर गिर पड़ेगे। यह बड़ा प्रभाव दिखाता है।

७६—द्वितीय योग

आक के पत्तों का रुवां, हरे पुदीना का अर्क और सिरका। तीनों औषधियों को समान मात्रा में लें। आवश्यकता के समय कान में चार-चार रत्ती डाला करें। ईश्वर कृपा से एक दो दिन में सब कीड़े निकल पड़ेंगे और आराम हो जायगा। अति सरल चुटकला है।

७७—कर्ण पीड़ा

विधि—तिलों का तेल २५ ग्राम, नीम के हरे पत्ते ६ ग्राम और मोर का पंजा एक नग। नीम के पत्ते और पंजे को उपर्युक्त तेल में जलायें। तेल को कपड़े से छानकर शीशी में डाल लें। आवश्यकता पर कान में ३-३ बून्दें डालें। ३-४ दिन में सर्व प्रकार की कर्ण पीड़ा समूल नष्ट हो जायगी।

७८—कर्ण पीड़ा के लिये अनुपम योग

एक रत्ती अफीम को थोड़े से स्त्री के दूध में घोल करके कान में डालें। उसी समय दर्द दूर हो जायगा। बड़ा सरल और अनुभूत योग है।

७९—अन्य योग

१२ ग्राम गो घृत में लहसुन की तीन पोथियां जलायें। जब खूब जल जायें तब बाहिर फेंक दें। गौ घृत को शीशी में डाल दें। सदा दो-तीन बून्द कानों में डाला करें। इससे सर्व प्रकार की कर्ण पीड़ा मिट जायगी। पीप निकलना इत्यादि बन्द हो जायगी। शतशः बार की अनुभूत और अचूक दवा है।

८०—सरल योग

सुखदर्शन के पत्तों का रस १२ ग्राम और समुद्र झाग ३ ग्राम। दोनों

को भलीभांति मिलाकर सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय चार-चार रत्ती डाला करें। इसके उपयोग से बहिरापन, पीड़ा, सूजन इत्यादि सब रोग मिट जायेंगे। अनेकों बार की अनुभूत औषधि है।

८१—कर्ण पीड़ा का अचूक उपचार

वैसे तो ऊपर बहुत से योग इस सम्बन्ध में लिखे जा चुके हैं परन्तु यह योग भी अपने गुणों में अनुपम है। चाहे कितने ही जोर की कर्ण पीड़ा हो और चाहे कितनी ही पुरानी हो इसके तीन-चार बार के प्रयोग से पीड़ा का सर्वनाश हो जायगा। बनाकर इसके अद्भुत गुणों का परीक्षण करें।

विधि—शुद्ध मधु ३ ग्राम, तांबे का जंगार २ ग्राम, सिरका ७ ग्राम। जंगार को बारीक करके मधु और सिरका में मिला दें। बत्ती के द्वारा कान में रखें। हर प्रकार की कर्ण पीड़ा के लिए अनुभूत उपचार है। अनार का छिलका मनुष्य के मूत्र में घिस कर लगाना भी कर्ण पीड़ा को मिटाता है।

नासिका रोग

परमात्मा ने हमें नाक ही ऐसा साधन दिया है जिसके द्वारा हमें सुगन्धि और दुर्गन्धि का ज्ञान होता है। नाक के अभाव में हमारे लिए सुगन्धि और दुर्गन्धि एक समान होते। इसी के मार्ग से अनावश्यक और मैला द्रव्य शरीर से बाहिर निकलता है। आप भली भांति समझ गए कि ईश्वर नाक न देता तो सुगन्धि दुर्गन्धि के अतिरिक्त मस्तिष्क से मल के निकलने का भी अन्य मार्ग न था। नाक के रोग तो अनेक हैं, परन्तु नीचे साधारणतया होने वाले रोगों के उपचार लिखे जायेंगे।

८२—नकसीर रोकने का चुटकला

इसके द्वारा नाक से बहते हुए खून की धारा तत्काल बन्द हो जाती है। यदि निरन्तर एक सप्ताह तक प्रयोग करते रहें तो नक्सीर का आना सदा के लिए बन्द हो जाता है। बड़ा सुगम और गुणान्वित चुटकला है। परीक्षण द्वारा लाभ उठायें।

विधि—पीले रंग की २० ग्राम कौड़ियां लेकर आग में जलालें। फिर बारीक पीस कर शीशी में रखें। आवश्यकता के समय एक रत्ती मात्रा थोड़े से घी में मिला कर के नाक में चढ़ायें। तत्काल आराम हो जायगा।

८३—मुलतानी मिट्टी का चमत्कार

यदि किसी भी उपचार के करने से नक्सीर बन्द न होती हो और सब उपचार निष्फल हो जायें, उस समय निम्नलिखित इलाज की शरण लें। नदी के समान बहती हुई रक्त धारा उसी समय बन्द हो जायगी। जिनको दिन रात में कई-कई बार नक्सीर छुटती हो उनके लिए यह औषधि संजीवनी से उत्तम है। बनाकर प्रकृति चातुर्य को देखें।

विधि—१५ ग्राम मुलतानी मिट्टी को रात के समय मिट्टी के कूंजा में आधा किलो पानी में डालकर भिगो दिया करें। प्रातः समय पानी नितार कर पिलाया करें। वर्षों का पुराना रोग सदा के लिए समूल नष्ट हो जायगा।

८४—नक्सीर निवारक

इस आसान से चुटकले को हम अनेक बार अनुभव में ला चुके हैं।

नक्सीर को उसी समय बन्द कर देता है। समय पर बड़े-बड़े योगों से बढ़कर गुण दिखाता है। योग है भी बड़ा सरल।

विधि—३ ग्राम सुहागा को पानी में घोल कर के दोनों नासिकारन्ध्रों पर लेप कर दें, तत्काल नक्सीर बन्द हो जायगी। यह अनुभूत योग है।

८५-अन्य योग

रेहां के बीज १० ग्राम प्रातः समय निराहार मुख दूध की लस्सी के साथ दिया करें। नक्सीर बन्द करने के लिए अनुपम योग है। अनुभव करने से इसके गुणों का अधिक प्रकाश होगा।

८६-सुगम चुटकला

चार ग्राम गोंद कतीरा को रात के समय पानी में भिगो दें। प्रातःकाल मीठा मिलाकर पिलाया करें। तीन-चार दिनों में पूर्ण आराम हो जायगा। बड़ा सरल और अचूक चुटकला है।

८७-नाक की दुर्गन्धि

कड़वे कद्दू का गूदा निचोड़ कर पानी निकाल लें। यदि ताजा कद्दू मिलने की ऋतु न हो तो सूखे कद्दू के टुकड़े लेकर पानी में खूब उबाल लें। जब अच्छी तरह पक चुकें तब मलकर छान लें और शीशी में डाल रखें। प्रति दिन एक-एक बून्द नाक में डाला करें। एक सप्ताह में नाक की दुर्गन्धि मिट जायगी।

८८-नाक की सूजन

कई बार नाक में सूजन होकर बड़ा कष्ट होता है। नीचे एक सरल और अनुभूत चुटकला प्रस्तुत किया जायगा। सूजन तत्काल दूर हो जायगी।

विधि—बंदालडोडा १० ग्राम, घोड़े की ताजा लीद ५ ग्राम। दोनों को १०० ग्राम पानी में भिगो दें। दोनों औषधियों के गल जाने पर कपड़े से खूब दबा कर निचोड़ लें। इसमें ४० ग्राम तिलों का तैल डालकर नर्म-नर्म आग पर सिद्ध करें। केवल तैल शेष रहे तब उतारकर ठण्डा होने पर शीशी में डाल दें। आवश्यकता के समय रुई की फुरेरी से लगाया करें, कुछ बार लगाने से सूजन मिट जायगी।

८९-नाक की बवासीर

यह रोग पूर्णतया बवासीर के मस्सों के सदृश होता है जिससे बड़ा असह्य कष्ट होता है। नीचे इस रोग के लिए एक बड़ा सरल और अनुभूत चुटकला प्रस्तुत किया जा रहा है। बनाकर अनुभव से जांचें।

विधि—बाजार से तांबे का जंगार लाकर शुद्ध मधु में घोट लें। इसे किसी खुले मुंह की शीशी में डालकर रखें। आवश्यकता के समय एक बत्ती बनाकर उसे उपरोक्त औषधि में गीला करके नाक में रखें। कुछ दिनों के प्रयोग से पूर्ण आराम हो जायगा। यह योग सर्वदा अचूक सिद्ध हुआ है।

९०-द्वितीय योग

आवश्यकतानुसार रसौत लेकर पानी के द्वारा मरहम सी बना लें। इसमें बत्ती तर करके नाक में रखें। ईश्वर कृपा से अनावश्यक मांसांकुर निकल कर नाक बिलकुल साफ हो जाती है।

९१-नाक कृमि

यदि दुर्भाग्यवश नाक में कीड़े पड़ जायें तो बहुत शीघ्र उपचार करने का प्रयत्न करें। ऐसा न हो कि ये कीड़े मस्तिस्क तक पहुँच जायें। अन्यथा रोगी का जीवन शंका ग्रस्त हो जायगा। इस रोग के लिए नीचे एक योग लिख रहे हैं। इससे सब कीड़े मर कर बाहिर आ पड़ेंगे। यह योग अनुभूत है। आप स्वयं बनाकर निर्णय करें।

विधि—कनेर के पत्ते, आड़ू के पत्ते और नौशादर तीनों को बराबर मात्रा में लें। खूब बारीक पीसकर ध्यानपूर्वक शीशी में डाल लें। आवश्यकता के समय नस्य (नसवार) की तरह सुंघावें। बहुत शीघ्र आराम होगा।

९२-लुप्त घ्राण शक्ति

इस रोग से रोगी के सूंघने की शक्ति सर्वथा नष्ट हो जाती है। रोगी को अच्छी बुरी वस्तुओं से किसी भी प्रकार की गन्ध नहीं आती। इसके लिएं एक अत्यन्त सरल योग लिखा जा रहा है। अनुभव में लाकर जनता का उपकार करें।

विधि—कलौंजी १० ग्राम और ऊंट का मूत्र ३० ग्राम। कलौंजी को ऊंट के मूत्र में यहां तक पकावें कि केवल १० ग्राम मूत्र शेष रहे। मल कर कपड़े में से छान लें। दिन में तीन बार दो-दो रत्ती सुंघावें। कुछ दिनों में रोग जड़ से चला जायगा। इस रोग के लिये अण्डे के तेल का सूंघना भी हितकर है।

९३-नाक का घाव

कई बार नाक के अन्दर या ऊपर घाव हो जाने से बड़ा कष्ट होता है। इसके लिए एक प्रभावोत्पादक चुटकला प्रस्तुत किया जा रहा है। आप स्वयं बनाकर प्रकृति की लीला के वैचित्र्य को देखें। योग यह है :—

विधि—मोम ५ ग्राम और तिलों का तैल १० ग्राम। पहिले तैल को किसी चम्मच आदि में डालकर नर्म आग पर रखें। जब खूब गर्म हो जाय तब मोम डाल दें। थोड़ी देर बाद मोम बिलकुल घुल मिल जायगी। नीचे उतार कर ठण्डा कर लें। अब यह मरहम की तरह हो जायगा। किसी डिबिया में बन्द कर रखें। आवश्यकतानुसार दोनों समय घाव पर लगाया करें। एक दो दिन में ही आराम मालूम हो जायगा। यदि घाव को पहिले नीम के पत्तों के पानी से साफ करलें तो और भी अच्छा है। अन्यथा वैसे भी लगा सकते हैं।

९४-छींकें अधिक आना

कई बार देखा गया है कि एक रोग विशेष से बहुत अधिक छींकें आया करती हैं। यहां तक होता है कि रोगी बेहोश हो जाता है। शिर में हर समय दर्द रहता है और चित्त बड़ा बेचैन रहता है। नीचे इसके लिए एक अनुभूत योग लिखा जा रहा है। अनुभव करें।

विधि—प्रतिदिन नाक में गुलाब के तेल की एक-एक बून्द डाला करें। शीघ्र ही आराम हो जायगा। तिलों के तैल की कुछ बून्दें कानों में और थोडा गरम पानी शिर पर डालना भी हितकर है।

दान्तों के रोग

दांत भी ईश्वर की महान देन है। दांतो द्वारा हम भोजन का आनन्द उठाते हैं और स्पष्ट भाषण कर सकते हैं। दांत न होते तो न हम भोजन का आनन्द ले सकते थे और न स्पष्ट भाषण कर सकते थे। भाषा का अस्तित्व ही असम्भव था। इसके लाभ अत्यन्त हैं। यदि हम सदा दांतों का ध्यान रखें तो बहुत से रोगों से बच सकते हैं। एक प्रसिद्ध विशेषज्ञ का कथन है कि अस्सी प्रतिशत पागल केवल दांतों की खराबी से हुआ करते हैं। कारण यह है कि दांतों का मस्तिष्क से घनिष्ट सम्बन्ध है। दांतों को साफ न करके मैल कुचैल से गन्दा रखना मस्तिष्क को गन्दा रखना है। हमारा परम कर्तव्य है कि इस सम्पत्ति की रक्षा करें और किसी भी रोग में इसे ग्रस्त न होने दें। दांतों को सदा दातुन इत्यादि से साफ रखना अत्यन्त आवश्यक है। जो महानुभाव दातुन करने के अभ्यस्त हैं, वे बहुत से रोगों से सुरक्षित रहते हैं। दांतों के रोग तो अनेक हैं परन्तु यहां पर केवल प्रायेण होने वाले रोगों के लिए योग प्रस्तुत करते हैं। बनाकर अनुभव में लायें और जन साधारण का उपकार करें। परन्तु यह बात पुनः कहता हूं कि दांतों को दातुन से साफ रखना सौ औषधियों की एक औषधि है। दातुन साफ और तन्तुयुक्त हो, जैसे कीकर, नीम, पीलू और मौलश्री इत्यादि की। इनसे दांत साफ होने के अतिरिक्त गन्दा मल भी निकल जाता है।

९५-दन्त पीड़ा

दांत पीड़ा के लिए यह विचित्र औषधि बड़ी लाभप्रद और प्रभावोत्पादक है। इसके दो दिन के प्रयोग से पीड़ा बिलकुल मिट जाती है। बड़ा सुगम और अचूक योग है। बनाकर सत्यता को जांचें।

विधि—उत्तम श्रेणी का तम्बाकू, लाल गेरू और काली मिर्च। तीनों औषधियों को समान मात्रा मे लेकर बारीक पीस लें। किसी कपड़े से छानकर शीशी में डाल लें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं दांतों पर मला करें। लगभग आध घण्टे के उपरान्त कुल्ली इत्यादि किया करें। हर प्रकार की दांत पीड़ा के लिए समान रूप से गुणकारक है।

९६-दांत पीड़ा का अचूक चुटकला

यह योग भी बड़ा अनुपम और प्रभावोत्पादक है। यह योग अनेक

बार अनुभव में आ चुका है। इसका प्रभाव सदा अचूक रहता है।

विधि—५ ग्राम काली मिर्च को बारीक पीसकर शीशी में डाल रखें। आवश्यकता के समय केवल १ रत्ती औषधि पानी की कुछ बून्दों में घोलकर कान में डालें इससे पीड़ा तुरन्त मिट जायगी। जब पीड़ा मिट जाये तब उस कान में थोड़ा सा घृत डालें। इससे सूजन भी दूर हो जायगी और पीड़ा को आराम हो जायगा। यह योग अनेक बार अनुभव में आ चुका है। पूर्णतः अचूक है।

९७-दाढ़ पीड़ा

विधि—अफीम १ रत्ती और नौशादर १ रत्ती। दोनों को मिलाकर गोली सी बनालें। इसे दाढ़ के छिद्र पर रख कर थोड़ा सा दबा दें अर्थात् उपर्युक्त दवा को छिद्र में भर दें। ईश्वरानुग्रह से यह पीड़ा पुनः कभी न होगी। छिद्र भी बन्द हो जायगा। बड़ा ही विस्मयकारक और परीक्षित योग है। दाढ़ के लिये संजीवनी है।

९८-दाढ़ का संन्यासी योग

आंक की ताजा जड़ दातुन जितनी मोटी लेकर नर्म राख में दबा दें। जब वह भुर्ता सा हो जावे तब निकाल लें। थोड़े गर्म की दातुन करें। एक दो बार के प्रयोग से पूरा आराम हो जावेगा। पीड़ा और सूजन का निशान भी न रहेगा।

९९-दन्त कृमि

दांत या दाढ़ में कीड़े लग जाने से बड़ा कष्ट होता है। मनुष्य न कुछ खा सकता है और न पी सकता है। नीचे एक बड़ा अनुभूत योग लिख रहे हैं।

उपचार—किरयाजोट आयल एक प्रसिद्ध एलोपैथिक दवा है और एलोपैथ दवा विक्रेताओं से साधारणतः मिल जाती है। इसको थोड़ी मात्रा में फुरेरी पर लगाकर पीड़ा के स्थान दाढ़ के छिद्र में लगावें। ईश्वानुग्रह से कृमि नष्ट हो जावेंगे। तत्काल दर्द मिट जायगा। इसी प्रकार कारबालिक एसिड की फुरेरी लगाने से भी दर्द उसी समय बन्द हो जाता है। परन्तु कारबालिक एसिड और क्रियाजोट को केवल दर्द के स्थान पर लगाया जाये।

१००-दांतों का हिलना

इसके उपयोग से हिलते हुए दांत सुदृढ़ हो जाते हैं और सब प्रकार की पीड़ा दूर हो जाती है।

योग—कीकर की छाल २५ ग्राम और सोंठ ३ ग्राम । दोनों को बारीक पीसकर दोनों समय दांतों पर मला करें । थोड़े समय के लगाने से पूर्ण आराम हो जायगा । दांत बिलकुल सुदृढ़ हो जायेंगे ।

१०१-अन्य उपयोग

सुपारी, माजू और भिलावा तीनों औषधियों को समान मात्रा में लेकर किसी बर्तन में रखकर जला लें । फिर बारीक पीसकर शीशी में सावधानी से रखें । आवश्यकता पड़ने पर दोनों समय दांतों पर मला करें । तीन-चार दिनों के लगाने से पूर्ण आराम हो जायगा ।

१०२ दांतों का खट्टापन

कई बार किसी खट्टी वस्तु के खाने से या वैसे ही दांत बड़े खट्टे हो जाते हैं । उस समय मनुष्य खाने में असमर्थ हो जाता है । जब दांत आपस में मिलते हैं तब एक विचित्र प्रकार का कष्ट होता है, जिसका वर्णन करना कठिन है । इसके लिये हम नीचे एक अति सरल और सस्ता योग प्रस्तुत करते हैं । इसके उपयोग से दांतों का खट्टापन तुरन्त मिट जाता है ।

विधि—१० ग्राम तिल लेकर शक्कर मिलाकर चबायें । उसी समय खट्टापन मिट जायगा । इसी प्रकार रोटी के गर्म गर्म एक दो ग्रास खाने से भी, खट्टापन मिट जाता है ।

१०३-दांतों से खून बंद करना

कभी-कभी ऐसा होता है कि दांतों की जड़ों में कृमि पैदा होकर दांतों से हर समय खून जारी रहता है । धीरे-धीरे दांत हिलने लग जाते हैं । यदि इसका शीघ्र उपचार न किया जाय तो पायरिया इत्यादि रोग आ घेरते हैं । वैसे तो उपरोक्त मंजन दांतों के सब रोगों के लिये लाभप्रद है, किन्तु मैं खून बन्द करने का एक अनुपम उपाय बतलाता हूं जिससे दांतों का निकलता हुआ खून बन्द होकर मसूढ़े पुष्ट हो जाते हैं ।

विधि—परमैगनेट पोटास, जो कि हर एक अंग्रेजी दवा विक्रेता से मिल सकता है, लाकर रखलें । प्रति दिन प्रातःकाल ४-६ दाने थोड़े गर्मपानी में घोल करके खूब अच्छी तरह से गरारे कराया करें । ईश्वरानुग्रह से पहिले ही दिन खून बन्द हो जायगा । तथापि सावधानी के लिए एक सप्ताह तक इसी क्रिया को करते रहें । मसूढ़ों के सब कीड़े मर कर रोग नाश हो जायगा ।

१०४-दांत पीसना

रात को सोया हुआ रोगी बहुत बार दांत पीसता रहता है । उसे

स्वयं कोई ज्ञान नहीं होता। यह रोग प्रायः दोनों जबड़ों के दुर्बल और इनके अवयवों में पूर्ण शक्ति न होने के कारण होता है अथवा जिनके पेट में कीड़े हों उनको अधिक होता है। इस रोग के निवारण के लिए एक योग प्रस्तुत किया जा रहा है। यह अनुभूत और अचूक है। पहले यह देखना आवश्यक है कि रोगी के मस्तिष्क या आमाशय में तो किसी प्रकार का विकार नहीं है। यदि कोई हो तो पहिले उनको निवारण करना चाहिए। तत्पश्चात् इस योग को उपयोग में लावें। अवश्य शीघ्र आराम होगा।

विधि—कड़वी कुठ के तेल की एक फुरेरी तर करके रोगी की गर्दन पर मला करें। एक सप्ताह तक अवश्य लगाते रहें। सदा के लिए आराम हो जायगा।

विभिन्न प्रकार के मंजन

ये मंजन सब प्रकार के दन्त रोगों के लिए हितकर हैं। यथेच्छा बनाकर पूर्ण लाभ उठावें। हर प्रकार के कष्ट से बचे रहेंगे।

१०५-आसान मंजन

दान्त पीड़ा, मसूढ़ों से खून बहना, दांतों का हिलना इत्यादि रोगों के अतिरिक्त यह मंजन दांतों को स्वच्छ और चमकदार बनाता है। प्रति दिन भोजन के उपरान्त उपयोग किया करें। दांत सदा मोतियों के सदृश स्वच्छ रहेंगे।

विधि—बादाम के छिलके का कोयला १२ ग्राम, भुनी हुई फिटकड़ी ६ ग्राम, लाहौरी नमक ३ ग्राम और काली मिर्च १ ग्राम। सबको सुरमे जैसा बारीक पीसलें। नित्य प्रति प्रातः सायं उंगली से दांतों पर खूब मला करें। मंजन मलने के आध घन्टे के बाद कुल्ली किया करें। यदि उसी समय कुल्ली की जावे तो मैल इत्यादि साफ नहीं होता।

१०६-अन्य योग

विधि—सैंधा नमक और समुद्र झाग। दोनों को सम भाग मात्रा में लेकर खरल में डालकर खूब खरल करें। बहुत बारीक होने पर शीशी इत्यादि में डालें। यथाविधि मंजन के रूप में उपयोग करें। मैल कुचैल से भरे हुए और खराब दांत दो तीन दिन के उपयोग से मोती के समान उज्ज्वल हो जायेंगे।

१०७-अन्य

सर्व प्रकार के दन्त रोगों के लिए यह अचूक और एकमात्र दवा है।

विशेषत: हिलते हुए दांतों को अपने स्थान पर जमा देना इसका एक साधारण चमत्कार है। आप भी बनाकर प्रकृति की लीला को देखें।

विधि—१० ग्राम सीसा लेकर किसी लोहे की कड़छी में डाल कर आग पर रखें। जब पिघल जाय तब उसमें आक की जड़ की ताजा लकड़ी फिराते रहें। थोड़ी देर पश्चात् सीसे की भस्म बन जायगी। अब इसमें एक ग्राम काली मिर्च, तीन ग्राम नमक मिलाकर बारीक पीस लें। इसे सावधानी से किसी शीशी में रखलें। दोनों समय दांतों पर उंगली से मला करें। दांतों के सब रोगों का नाश हो जायगा।

१०८-मुक्ता मंजन

इसको कुछ दिनों तक लगाते रहने से बहुत मैले और खराब दांत मोतियों जैसे चमकदार बन जाते हैं। मुख की दुर्गन्धि इत्यादि भी नष्ट हो जाती है।

विधि—बड़ी हरड़ का कोयला ६ ग्राम, हीरा कसीस २ ग्राम, खानें का नमक ३ ग्राम और काली मिर्च १ ग्राम। सबको बारीक पीसकर रख छोड़ें। प्रति दिन दांतों पर मला करें। यदि ब्रुश द्वारा उपयोग में लाया जावे तो और भी अच्छा है।

१०९-सुगंधित मिस्सी

दन्त रोगों के लिये यह एक अचूक औषधि है। दांतों को सफेद और चमकदार बनाना इसका साधारण सा काम है।

विधि—सेलखड़ी ६ ग्राम, छोटी इलायची १ ग्राम और नमक ३ ग्राम। सबको बारीक पीसकर यथाविधि दोनों समय दांतों पर मला करें। दांत बड़े सुन्दर निकल आयेंगे।

मुख तथा कण्ठ रोग

मुख के छाले

मुख की झिल्ली लाल या सफेद होकर उस पर सूजन सी आ जाती है। तदुपरान्त छोटे-छोटे छाले से निकल आते हैं। इनके कारण रोगी खाने पीने के अतिरिक्त बातचीत करने में भी असमर्थ होता है। जब यह रोग पुराना हो जाता है तब इसकी चिकित्सा में कठिनाई होती है। अधिकतर यह रोग तम्बाकू या सिगरेट के सेवन के कारण होता है अथवा तेज मसाले-दार चीजें, कब्ज और अजीर्ण भी इसके कारण बन जाते हैं। मूत्रकृच्छ और उपदंश रोगों में पारद मिश्रित योगों के सेवन से भी यह रोग प्रायः हो जाता है। नीचे कुछ ऐसे योग प्रस्तुत करता हूँ जिनके उपयोग द्वारा इससे शीघ्र छुटकारा मिल जाता है।

११०-अचूक योग

विधि—बड़ी इलायची का दाना और पान में प्रयुक्त की जाने वाली सुपारी। दोनों को आवश्यकतानुसार लेकर जलायें। इसके पश्चात् बारीक पीसकर शीशी में डाल लें। यथासमय मुख के छालों पर छिड़कें। थोड़ी देर तक जिव्हा को छालों पर फिराते रहें, एक दो दिन इसी प्रकार करने से आराम हो जायगा।

१११-अनुपम चुटकी

इस औषधि से पुराने से पुराने छाले केवल दो दिन के प्रयोग से ही चले जाते हैं। बनाकर अनुभव में लायें और जनता का हित सम्पादन करें।

विधि—कागज की राख, सफेद कत्था और फिटकड़ी। तीनों औष-धियों को समान मात्रा में लेकर बारीक पीस लें। आवश्यकता के समय एक चुटकी मुख में डालकर जिव्हा की नोंक से छालों पर लगालें। थूक को थोड़ी देर मुख में बन्द करके थूक दें। दिन में तीन चार बार और विशेषतः सोते समय उपयोग करना बड़ा गुणकारी है। कौड़ियों का योग है, परन्तु गुणों की पिटारी है।

११२-अन्य योग

सृष्टिकर्त्ता ने साधारण सी औषधि में इतने गुण भर रखे हैं जिनका

कोई अन्त नहीं। निम्नलिखित औषधि इतना शीघ्र प्रभाव दिखाती है कि आप विस्मित रह जायेंगे। आपके मुख से बलात् यह शब्द निकल पड़ेंगे कि औषधि क्या है कोई चमत्कार है। यह योग अनुभूत है।

विधि—सफेद जीरा १ ग्राम, सफेद कत्था ४ रत्ती। पहिले जीरा को मुख में डालकर चबायें। थूक सा पैदा होगा। थोड़ी देर बाद कत्था को चबायें। उपर्युक्त थूक को जिव्हा द्वारा छालों पर लगाते रहें। थोड़ी-थोड़ी देर में थूक बाहिर भी फेंकते रहें। ईश्वरानुग्रह से केवल एक ही बार से आराम हो जायगा।

११३-अनुभूत गरारे

यह मुख के सब प्रकार के छालों के लिए एकमात्र उपचार है। छाले चाहे किसी भी कारण से उत्पन्न हुए हों, एक दो बार गरारे करने से छालों का निशान भी नहीं रहता। अनुभूत और परीक्षित इलाज है।

विधि—कीकर की छाल २५ ग्राम, गोंदनी की छाल २५ ग्राम। दोनों को एक किलो पानी में डालकर पकावें। जब पानी आधा रह जावे तब उतार कर समोष्ण पानी से गरारे करायें। हर प्रकार के छाले मिट जायेंगे।

११४-अन्य

अरहर के पत्ते तथा धनियां २५-२५ ग्राम। दोनों को एक किलो पानी में उबालें। जब पानी आधा रह जाये तब नीचे उतार लें। थोड़ा ठण्डा होने पर यथाविधि गरारे करायें। उसी समय छाले मिट जायेंगे।

११५-मुख की दुर्गन्धि

प्राय: आमाशय की खराबी से मुख में से दुर्गन्ध आया करती है। अत: पहिले आमाशय का इलाज करें। मुख को सदा मंजन या दातुन इत्यादि से साफ रखें। स्वयं ही मुख की दुर्गन्ध चली जायगी। नीचे इसके लिए एक दो योग भी प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इनके उपयोग से मुख की दुर्गन्धि बिलकुल न रहेगी।

११६-मुख दुर्गन्धि हारी बूटी

इसके सेवन से मुख की दुर्गन्धि अवश्यमेव दूर हो जाती है। इसके साथ-साथ यह वाणी को स्पष्ट और मधुर बना देती है। गाने वालों के लिए तो यह अत्यावश्यक वस्तु है। विकृत स्वर को कुछ दिनों में मधुर और कर्ण-प्रिय बना देना इसके लिए साधारण सी बात है। बनाकर परीक्षा करें।

विधि—पान की जड़ १० ग्राम, नागरमोथा १० ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर मधु के साथ मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। सूख

जाने पर सावधानी से रखें। दिन में ... र एक-एक गोली निगलते रहें। एक सप्ताह के निरन्तर सेवन से दुर्गन्धि दूर होकर स्वर भी मधुर और कर्ण-प्रिय बन जायगा।

११७-अन्य

विधि—१५ ग्राम मधु, २५० ग्राम पानी में मिलाकर गरारे किया करें। ३-४ दिन इस प्रकार करते रहने से मुख की दुर्गन्धि मिट जायगी।

११८-स्वर भंग

नजला का गन्दा मल नीचे गिरने से या जल परिवर्तन होने से गला बैठ जाता है। यह भी बड़ा कष्टप्रद होता है। बेचारा रोगी कुछ कहना चाहे तो कह नहीं सकता। संकेतों से ही बातचीत करता है तो बड़ा उपहास का पात्र बनना पड़ता है। नीचे इसके लिए एक दो सरल चुटकले लिख रहे हैं।

११९-अदरक का चमत्कार

विधि—१५ ग्राम वजन की अदरक की गाठ में छिद्र करके उसमें एक ग्राम हींग और दो ग्राम नमक बारीक करके भर दें उसमें से शेष छिद्र को, निकले हुए भाग से भर दें। फिर इसको आटे में लपेट कर भूभल में दबा दें। जब आटा लाल हो जाये तब निकालकर ठण्डा होने पर ऊपर से आटा अलग करके अदरक को निकाल लें। बारीक करके आठ गोलियां बनालें। प्रातः सायं एक-एक गोली मुख में रखकर रस चूसते रहें। पहले दिन ही काफी आराम मालूम होगा। अनेक बार की अनुभूत औषधि है।

१२०-अन्य

यदि अधिक गाने या जोर-जोर से बातचीत करने से आवाज बैठ जाये तो निम्नोक्त योग से लाभ उठायें। यह तो मिनटों में अपना प्रभाव दिखाता है।

विधि—कच्चा सुहागा १५ ग्राम खूब बारीक पीसकर शीशी में रख लें। आवश्यकता के समय ४ रत्ती दवा मुख में रखें। इसका रस चूसते रहें।

१२१-अनुपम चुटकुला

यह तो पहिले ही बताया जा चुका है कि रेशा गिरने या जल परिवर्तन से यह रोग उत्पन्न होता है। कुछ योग भी इसके सम्बन्ध में बतलाये जा चुके हैं। अब जो चुटकला प्रस्तुत किया जा रहा है यह भी इस रोग के निवारण के लिए अनुपम प्रभाव रखता है।

विधि—४ रत्ती हींग लेकर २५० ग्राम थोड़े गरम पानी में घोल करके खूब अच्छी तरह से गरारे करायें। एक दो बार के प्रयोग से आराम हो जायगा।

१२२-गला पड़ना

गर्म खाना खाने के बाद ठण्डा पानी पीने से यह रोग प्रायः हो जाया करता है। बड़ों की अपेक्षा बच्चों को यह रोग अधिक होता है। नीचे एक अनुभूत योग प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके सेवन से तुरन्त आराम हो जायगा।

विधि—सोते समय पान में एक ग्राम मुलहठी का आटा डालकर कुछ देर चबाते रहें। फिर वैसे ही मुख में रखकर सो जायें। प्रातःकाल तक आराम हो जायगा। आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे। ऐसा समझेंगे कि यह रोग कभी था ही नहीं। अनुपम वस्तु है।

१२३-अधिक थूक आना

बार-बार थूकना भी एक बुरा रोग है। सभ्य पुरुषों के मध्य बैठना भी कठिन हो जाता है। इस रोग के लिए यह अनुभूत और अचूक योग है।

विधि—सुपारी और छोटी इलायची को समान मात्रा में लेकर बारीक पीसकर शीशी में रखें। आवश्यकता के समय १ ग्राम मुख में रखकर रस निगलते रहें। एक दो दिन में रोग दूर हो जायगा।

१२४-तुतलापन का उपचार

इसके रोगी को बड़ी कठिनाई होती है। बेचारा ठीक तौर से बात नहीं कर सकता। कई बार तो बीच में अटके मिनटों गुजर जाते हैं और श्रोतागण प्रतीक्षा में रहते हैं, फिर भी कुछ समझ में नहीं आता। नीचे मैं इस रोग का अद्भुत उपचार लिखता हूँ। कुछ लम्बा अवश्य है परन्तु अनुभव करने से आपको इसके अनुपम गुणों का ज्ञान होगा।

विधि—रात को सोते समय २ ग्राम भुनी हुई फिटकड़ी बारीक की हुई रोगी के मुख में रखकर सुलाया करें। एक मास के निरन्तर सेवन से पूरा आराम हो जायगा।

खुनाक (कंठरोहिणी)

वह वह भयंकर रोग है जिससे सांस लेना या कोई औषधि या भोजन निगलना कठिन ही नहीं अपितु दूभर हो जाता है। जीवन भय ग्रस्त हो जाता है। यह भयंकर रोग भोजन की नाली के अवयवों में सूजन के कारण हुआ करता है। कई बार श्वास की नली या कवे की सूजनके कारण भी होता है।

यह प्रसिद्ध रोग है। अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है। सांस का रुक रुक कर आना, पानी या भोजन का कठिनाई से निगलना इत्यादि इसके लक्षण हैं। नजला या खराशदार वस्तु का गले में उतर जाना, शरीर में खून वा पित्त का आधिक्य, गन्दी और आर्द्र वायु में निवास इत्यादि-इत्यादि इस रोग के मुख्य कारण हैं। नीचे इसके लिये कुछ विशेष अनुभूत और परीक्षित चुटकले प्रस्तुत किये जा रहे हैं। आप भी अनुभव में लाकर प्रकृति के वैचित्र्य का अनुमान लगायें।

१२५-अकसीर खुनाक (कण्ठ शोथ)

निम्नोक्त अति साधारण योग इस भयंकर रोग के लिए अत्यधिक लाभप्रद और प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ है। खराब से खराब दशाओं में इस विचित्र औषधि ने ऐसा उत्तम गुण दिखाया है कि बड़े-बड़े डाक्टरों और प्रख्यात वैद्य हकीमों ने दांतों तले अंगुली दबा ली। यह बिलकुल साधारण सी वस्तु है। परन्तु धन्य है उस सृष्टिकर्त्ता को, जिसने इतनी तुच्छ वस्तुओं में ऐसे-ऐसे गुण छिपा रखे हैं कि जिनकी गहराई तक पहुँचना हमारे लिए पूर्णत सम्भव नहीं। यह सब कुछ हमारे हित के लिए है। परन्तु हम स्वयं ऐसे कृतघ्न हैं कि उस महान कलाकार को भूल जाते हैं। ईश्वर ने हमारे लिए अनेकानेक जड़ी-बूटियां उत्पन्न की हैं और उनमें अनन्त गुण भर रखे हैं। हम इस विषय में जितना अधिक अनुसन्धान करते हैं उतना ही अपने अज्ञान को अधिक समझते जाते हैं। नीचे एक ऐसा योग लिख रहे हैं जो इस रोग के लिए अनेक बार का अनुभूत है और अपने गुणों में अनुपम है।

विधि—रीठे लाकर गुठली निकाल दें। छिलके (त्वक) को बारीक पीसकर ३०० ग्राम पानी में ५ ग्राम घोलकर रोगी को गरारे करायें। उक्त रीठे का १५ ग्राम चूर्ण पानी मिलाकर सूजन वाले स्थान पर लेप करें। तत्काल आराम हो जायगा। बहुत बार का अनुभूत है। यदि रोगी बेहोश हो तो कुछ बून्दें पानी की रोगी के मुख में डालकर हिला दें ताकि दवा अन्दर चली जाये। एक दो बार इसी प्रकार करने से बन्द गला खुल जायगा। औषधि, पानी इत्यादि आसानी से अन्दर जा सकेगी।

इसके एक दो बार के सेवन से खुनाक का अन्त हो जाता है। गले की सूजन, गले का बन्द होना इत्यादि दूर होकर पूरा आराम हो जायगा।

१२६-सरलोपचार

विधि—महुवा की खली आवश्यकतानुसार लेकर इसे बारीक पीसलें। आवश्यकता के समय ३ ग्राम की मात्रा लेकर रोगी के मुख में डालें और ऊपर

से एक दो घूंट पानी पिलादें। ईश्वरानुग्रह से केवल एक दो बार के सेवन से पूर्ण आराम हो जायगा।

१२७-लाभप्रद गरारे

इन गरारों से भी बहुत शीघ्र आराम हो जाता है। ये भी कई बार अनुभव में आ चुके है। समय पर ऐसा प्रभाव दिखाते हैं कि मनुष्य विस्मित रह जाता है।

विधि—अमलतास का गूदा १५ ग्राम, २५० ग्राम समोष्ण पानी में घोलकर गरारे करायें। दिन में दो तीन बार गरारे कराने से पूरा आराम हो जायगा। इसी को पानी में पीसकर थोड़ा-थोड़ा गर्म-गर्म सूजन पर लेप कर दें।

१२८-हितकारी लेप

इस लेप से सूजन बहुत शीघ्र द्रवित हो जाती है। यदि पक गई हो तो फूटकर सारा मल निकल जाता है। खुनाक के लिए बड़ा अनुभूत योग है।

विधि—नौशादर ५ ग्राम, मुर्ग की विष्टा ५ ग्राम दोनों को सिरका में पीसकर सूजन पर लेप करें। एक दो बार लेप से आराम हो जायगा। केवल अमलतास को खाने, लेप और गरारे करने से भी ९० प्रतिशत आराम हो जाता है।

कण्ठमाला

इसको प्रायः हंजीरा या कण्ठमाला भी कहते हैं। यह बड़ा कष्टप्रद रोग है। इस रोग से गर्दन के चारों ओर गांठें सी निकलकर बड़ा कष्ट पहुँचाती हैं। कई बार कुछ समय के बाद फूट जाती हैं और कई रोगियों के वैसे ही रहती हैं। कुछेक प्रसिद्ध डाक्टरों का विश्वास है कि सिल और कण्ठमाला के कीटाणु एक ही हैं। इस रोग से सिल (उरःक्षत) का हो जाना बड़ी बात नहीं है। इस अशुभ रोग के रोगी प्रायः सिल में ग्रस्त होकर प्राण त्यागते हैं। अतः कण्ठमाला के रोग में आलस्य कदापि न किया जाय अपितु जहां तक हो सके इसके उपचार में शीघ्रता करें। नीचे इसके लिये कुछ अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इनमें से हरएक योग दूसरे से बढ़ चढ़कर मिलेगा। इनको अनुभव में लाकर अपना तथा जन-साधारण का हित-सम्पादन करें।

१२९-कण्ठमाला संजीवनी

यह योग कण्ठमाला के लिये अत्यन्त गुणकारी उपचार है। एक सप्ताह के सेवन से बहुत पुराना रोग भी जड़ से चला जाता है।

विधि—गूगल १२ ग्राम, काली मिर्च ३ ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर इनमें इतना सुरमा डालें कि मरहम सी बन जावे। बस औषधि तैयार है। किसी खुले मुंह की शीशी में डाल रखें। आवश्यकता के समय कण्ठमाला की गांठों पर लगाया करें। इसके साथ निम्नोक्त खाने का योग भी प्रयोग करें। आठ-दस दिनों के सेवन से लाभ प्रतीत होगा।

योग—सफेद भंगड़ा के बीज ६ ग्राम, काली मिर्च २ नग। दोनों को प्रात: समय घोट छानकर और लगभग २५० ग्राम पानी मिलाकर पिलाया करें। ऊपर वाली मरहम प्रतिदिन साथ-साथ लगाते रहें।

१३०—कण्ठमाला नाशक योग

जब कण्ठमाला का उपचार कराते-कराते थक जायें और सब तरफ से निराशा का मुंह देखना पड़े उस समय निम्नलिखित योग को बनाकर अवश्य अनुभव में लावें। असफलता का चित्र सफलता का रूप धारण कर लेगा। अनेकों बार का अनुभूत योग है। यह बड़ी कठिनाई द्वारा एक तहसीलदार महोदय से प्राप्त किया गया था। सौभाग्यवश इसी गुप्त योग के कारण तहसीलदार महोदय अच्छी प्रसिद्धि के स्वामी थे। मुझे यह योग इस शर्त पर बताया था कि इसे पुस्तक इत्यादि में प्रकाशित न कराया जाये। परन्तु मेरा यह मत नहीं कि कोई योग छिपाकर रखा जाये। मुझे तो हर समय यह ध्यान रहता है कि कोई अच्छे से अच्छा योग मिले तो उसे जन-साधारण की भलाई के लिए "रसायन" में प्रकाशित करूं ताकि इच्छुक सज्जन बनाकर जनता का हित सम्पादन कर सकें।

अत: इसी दृष्टिकोण से नीचे का योग आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। बनाकर अनुभव में लायें और परोपकार करें।

विधि—२० साबुत पीपल लेकर एक छछूंदर का पेट चीरकर इनको उसमें भर दें। पेट का मल इत्यादि निकालने की बिलकुल आवश्यकता नहीं है। अब इसको मिट्टी के कच्चे कूजे में बन्द करके खूब अच्छी तरह कपरोटी करें और अठारह दिनों तक इसे बन्द रखें। तत्पश्चात् पीपल बारीक पीसकर सावधानी से शीशी में डाल लें। आवश्यकता के समय नलिका के द्वारा एक-एक रत्ती दोनों नासिकाओं में डालकर फूंक दिया करें। एक सप्ताह के निरन्तर उपयोग से अवश्यमेव आराम हो जायगा। साथ-साथ नीचे लिखा मरहम भी लगाते रहें।

एक छिपकली लेकर ४० ग्राम तिलों के तैल में डालकर आग पर रखें और खूब जला लें। जब अच्छी तरह जल चुके तब बारीक पीस लें। प्रतिदिन

किसी फुरेरी इत्यादि से कण्ठमाला पर लगाया कर। एक सप्ताह तक लगाने से पुराने से पुराना रोग भी नष्ट हो जायगा।

१३१-कण्ठमाला लेप

इसका कुछ दिनों तक उपयोग करने से पूर्णतया आराम होकर रोग का निशान भी अवशेष न रहेगा। अनेक बार अनुभव में लाने से प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ है। स्तुत्य योग यह है :—

विधि—एक छोटा बैंगन लेकर इसमें १२ ग्राम बन्दूक का बारूद भर लें। इसे खूब अच्छी तरह कपरोटी करके भूभल में दबा दें। जब भुर्ता के समान हो जावे तब निकाल लें। ऊपर से मिट्टी इत्यादि दूर करके बैंगन को बारूद समेत खरल करलें और किसी डिबिया इत्यादि में सावधानी से भरकर रखें। आवश्यकता के समय ईश्वर पर भरोसा रखते हुए इसका कण्ठमाला की गांठों पर लेप करें। कुछ ही बार के लगाने से रोग समूल नष्ट हो जायगा।

१३२-अन्य योग

गाय का खुर और सींग जलाकर बारीक पीसलें। इसे अलसी के तैल में मिलाकर सदा कण्ठमाला पर लगाया करें। ईश्वरानुग्रह से बहुत शीघ्र आराम हो जायगा और रोग की पुनः कभी आशंका भी नहीं रहेगी।

१३३-कण्ठमाला नाशक माजून

यह अत्यन्त अनुभूत और अनुपम योग है। अपने गुणों और प्रभावों में यह अद्वितीय है। कुछ दिनों तक सेवन करने से रोग पूर्णतः नष्ट हो जाता है। पुनः यह रोग कभी प्रकट न होगा। योग यह है :—

विधि—सिरस के बीज आवश्यकतानुसार लेकर खूब बारीक पीसलें। इसमें दुगना मधु मिला लें। तदुपरान्त किसी मिट्टी के कूजे में डालकर इसका मुख उड़द (माष) के आटे मे अच्छी तरह बन्द करदें। इसे दो सप्ताह तक धूप में रहने दें। तत्पश्चात् प्रतिदिन ७ ग्राम की मात्रा में प्रातःकाल खिलाया करें। ईश्वर कृपा से दो सप्ताह में इस अशुभ रोग से छुटकारा प्राप्त हो जायगा।

फेफड़े और छाती के रोग

खांसी

यह एक प्रसिद्ध रोग है। इस रोग की उत्पत्ति के अनेक कारण हैं जो आयुर्वेद के ग्रन्थों में विस्तार से मिलते हैं। सबसे बड़े दो कारण हैं।

पहिला खुश्क और दूसरा तर। दोनों के लक्षण यह हैं। अधिक भूख और प्यास की अवस्था में खांसी अधिक हुआ करती है। बार-बार खांसी आने से भी अन्दर से कुछ नहीं निकलता। इसको खुश्क खांसी कहते हैं। यदि खांसने से कफ इत्यादि निकले तो उसको तर खांसी कहते हैं। इसमें प्यास बहुत कम लगती है। गर्म वायु और गर्म वस्तुओं से रोगी को आराम सा मिलता है। नीचे कुछ ऐसे योग लिखे जा रहे हैं जो कि दोनों प्रकार की खांसियों के लिए अनुभूत हैं। इन योगों को अनेक बार अनुभव में लाया जा चुका है। आप भी इनका परीक्षण करें और जन साधारण का हित सम्पादन करें।

१३४-अकसीर खांसी

पुराने से पुरानी खांसी केवल तीन-चार दिनों के सेवन से नष्ट हो जाती है। इसका प्रभाव इतना है कि यदि दो सप्ताह तक निरन्तर सेवन करते रहें तो श्वास रोग (दमा) भी दूर हो जाता है। बड़ी अचूक और अनुपम औषधि है। अनेकों बार अनुभव में आ चुकी है।

विधि—१५ ग्राम अजमोद को बारीक पीसकर आक के ऐसे पत्तों पर लेप करें जो स्वयं गिर गये हों। लेप करने के बाद एक दूसरे के ऊपर रखकर तह सी बनालें। अब इनको लोहे के तवे पर रखकर और ऊपर ढक्कन देकर नीचे आग जलानी शुरू करदें। यहां तक कि औषधि जलकर बिलकुल राख हो जावे उस समय उतार लें। इसमें इसके बराबर मुलहठी का सत्व मिलाकर बारीक कर लें। बस औषधि तैयार है। आवश्यकता के समय प्रातः सायं एक से दो रत्ती तक पानी के साथ दिया करें। ईश्वरानुग्रह से कुछ हीदिनों के सेवन से आराम हो जायगा। हर प्रकार की खटाई, गुड़, शक्कर, तेल की बनी चीजों से परहेज करें। हर प्रकार की खांसी के लिए अनुभूत योग है।

१३५-अन्य योग

यह योग भी खांसी को दूर करने में बड़ा प्रभावशाली है। बहुत समय से अनुभव में आ रहा है। आप भी बनाकर परीक्षण करें।

विधि—धतूरा के बीज और पीपल। दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक पीसकर, गोंद के पानी के साथ उड़द के दाने के बराबर गोलियां बनावें। सुखाकर शीशी में रखें। यथा समय दो गोली प्रातःकाल ताजा पानी के साथ दिया करें। कुछ दिनों के सेवन से सब प्रकार की खांसी जड़ से चली जायगी।

१३६-खांसी का सन्यासी योग

बड़ा ही लाभकारी और अचूक योग है। अनेकों बार अनुभव की कसौटी पर कसा जा चुका है। आजतक अनेकों रोगी इस योग के कारण स्वास्थ्य लाभ कर चुके हैं। हर प्रकार की खांसी को केवल तीन-चार दिनों में जड़ से उखाड़ कर फैंक देना इसका एक साधारण सा चमत्कार है। आशा है आप भी इस योग से पूर्ण लाभ उठायेंगे तथा जनता की भलाई के लिए उपयोग में लावेंगे।

विधि—घीकवार (घृतकुमारी) का गूदा एक किलो लें। किसी रूमाल इत्यादि में डालकर इसका रस निकाल लें। अब इसको कलईदार देगची में डालकर आग पर रखें। जब आधा जल जाय तब ३५ ग्राम सेंधव नमक बारीक पीसकर मिला दें। इसे चम्मच इत्यादि से हिलाते रहें। जब घीकुवार का सारा रस जल जाये तब उतारकर बारीक पीसलें। औषधि तैयार है। किसी शीशी में भर रखें। आवश्यकता के समय काम में लावें। प्रातःकाल निराहार मुख ४ रत्ती से १ ग्राम तक दवा पानी के साथ दिया करें। हानिकारक वस्तुओं से परहेज करें।

१३७-प्रभावोत्पादक योग

यह योग भी उपरोक्त योग की तरह बड़ा गुणकारक है। जो गुण उपर्युक्त योग में हैं वे सब इसमें विद्यमान हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि जो खांसी किसी अन्य योग से न जाये उसके लिए इनमें से एक को बनाकर प्रकृति की लीला का कौतुक देखें।

विधि—कटाई (जिसको संस्कृत में कंटकारी के नाम से पुकारा जाता है) के फल १२० ग्राम लेकर कूट लें। इसके दो भाग करलें। पहले एक भाग को मिट्टी के एक कूजे में डालकर उसके ऊपर ३० ग्राम नमक पीसकर विछावें। दूसरा भाग उसके ऊपर देकर कपरोटी करें। सूख जाने पर दस

किलो उपलों की आग दें। ठन्डा होने पर जो कुछ भी कूजे में मिले निकाल लें। बारीक करके शीशी में डाल रखें। आवश्यकता के समय रात को सोते समय ४ रत्ती औषधि मुख में रखकर सो जायें। कैसी ही पुरानी और किसी भी प्रकार की खांसी हो केवल एक सप्ताह के सेवन से नष्ट हो जायगी।

१३८-खांसी का सरलोपचार

यह बिलकुल आसान सा योग भी खांसी के लिए लाभप्रद है। बच्चों और बूढ़ों सबके लिए समान रूप से गुणकारक है।

विधि—पिस्ते के फूल और पीली हरड़ का छिलका। दोनों को समान मात्रा में लेकर अदरक के पानी के साथ घोटकर अनुमानत: दो दो रत्ती की गोलियां बनायें। रात को सोते समय एक गोली मुख में रखकर रस चूसें। ईश्वरेच्छा से खांसी शीघ्र ही मिटकर आराम हो जायगा। बच्चों को आयु के अनुसार एक रत्ती से आधी रत्ती तक वैसे ही पानी के साथ दिया करें।

१३९-अन्य योग

यह साधारण सी औषधि भी बड़े-बड़े गुणों से भरपूर है। समय पर बड़े-बड़े योगों से यह बाजी ले जाती है। बनाकर अनुभव में लावें और परीक्षा करें। इस छोटी सी वस्तु से भी अवश्य लाभ उठावें।

विधि—आवश्यकतानुसार काकड़ासींगी लेकर बारीक पीस लें। फिर पानी के साथ घोटकर एक-एक रत्ती की गोलियां बनायें। प्रातः सायं दो-दो गोलियां पानी के साथ दिया करें।

१४०-कफजनित खांसी का अनुभूत योग

कफजनित खांसी के लिये अनेकों योगों में से यह विशेष योग है। इससे बहुत थोड़े समय में लाभ हो जाता है। यहां तक कि श्वास रोग के लिये भी यह संजीवनी बूटी से कम नहीं है। यह योग श्री दीवान बोधाराम ने अपने गुप्त योगों में से निकालकर प्रदान किया था। उनका कथन था कि कफजनित खांसी और दमा के लिए यह योग अद्वितीय है। यह आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

विधि—आवश्यकतानुसार अत्युत्तम खांड या बूरा लेकर किसी चीनी की प्याली में डालें। इसमें आक का दूध इतना डालें कि खांड तर हो जावे। इसे किसी कपड़े से ढक कर रख दें। जब स्वयं खुश्क हो जावे तब पुनः तर करके खुश्क करें। फिर इसको तवे पर रखकर नीचे आग जलायें। जब जल जावे तब उतारकर बारीक पीस लें। प्रतिदिन एक समय एक चावल से एक रत्ती तक मक्खन में रखकर दिया करें। वर्षों की खांसी एक सप्ताह में चली जायगी।

श्वास रोग

यह ऐसा भयंकर रोग है कि जब किसी को आ लगता है तब बड़ा कष्ट देता है और पीछा छुड़ाना बड़ा कठिन काम होता है। सांस में तंगी उत्पन्न होकर घबराहट सी पैदा होती है। गले में से एक प्रकार की सांय-सांय की ध्वनि निकलती रहती है। छाती में खिचावट सी रहती है। रोगी को बातचीत करते समय कष्ट होता है। यदि कोई बात करे तो कठिनाई से पूरी करता है और बीच में ही खांसने लगता है। कफ का निकास न होने के कारण सांस फूल जाता है। प्रायः यह रोग दौरा के साथ होता है। इस रोग के दो भेद हैं। खुश्क और तर। खुश्क में केवल श्वास नलिकाओं और श्वास अवयवों में ऐंठन सी होती है। तर में ऐंठन नहीं होती। श्वास की नलिकाओं में कफ एकत्रित हो जाता है। इसके कारण श्वास लेने में बड़ी कठिनाई का अनुभव होता है। पेट अन्दर की ओर धंस जाता है। माथे पर पसीना और कभी सारे शरीर पर पसीना आ जाया करता है। आंखें चौड़ी, जिव्हा मैली और लाल, मुख का वर्ण कभी पीला और कभी मलीन सा रहता है। प्रारम्भ में मूत्र का रंग सफेद होता है और मूत्र बहुत आता है। शरीर में हर समय थोड़ा सा ताप रहता है। दौरा पड़ने के समय रोगी बड़ा व्याकुल हो जाता है। जब तक कफ न निकले उस समय तक रोगी तड़पता रहता है। नींद बिलकुल नहीं आती। दौरे की अवधि ६ से १२ घन्टे तक होती है। तदुपरान्त थोड़ा-थोड़ा कफ निकलने लगता है। उस समय बेचैनी भी कुछ कम हो जाती है। जब रोग पुराना हो जाता है तो रोगी बड़ा दुर्बल और पतला हो जाता है। दौरे भी थोड़े-थोड़े समय से आने लगते हैं। इस सम्बन्ध में बड़े अच्छे-अच्छे योग 'अनुभूत योग चिन्तामणी' में लिख चुका हूं। यहां पर केवल ऐसे योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो स्वल्प मूल्य से तैयार हो सकते हैं। परन्तु ये सब योग भी अनुभूत और अचूक हैं। यथेच्छा बनाकर अनुभव में लावें।

१४१-श्वास रोग पर वटी

यह अनेक बार अनुभव में आ चुकी है और अपना प्रभाव दिखाने में अचूक रही है। आप भी बनाकर परीक्षण करें और जन साधारण के उपकार का सुकार्य करें।

विधि—आक की कौंपल १८ ग्राम और देशी अजवायन १२ ग्राम। दोनों को बारीक पीस करके ३० ग्राम गुड़ मिलाकर दो-दो ग्राम की गोलियां तैयार करलें। एक गोली प्रातःकाल निराहार मुख खाया करें। बहुत शीघ्र रोग समूल नष्ट हो जायगा।

१४२-अन्य योग

१५ ग्राम सीपी को कूट करके एक मिट्टी के कूजे में डालकर इसमें ५० ग्राम घीकुवार का गूदा डालें। कूजे को भलीभांति कपरोटी करके सुखालें। तदुपरांत ५ किलो उपलों की आंच दें। प्रातः निकालकर बारीक करके अदरक के अर्क में घोटकर चने के समान गोलियां बनालें। सावधानी से शीशी में रखलें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं एक-एक गोली दिया करें। रोग का समूल नाश होकर बहुत शीघ्र आराम हो जायगा। सांस की तंगी, छाती की घबराहट और गले की सांय-सांय इत्यादि सबका निवारण हो जायगा।

१४३-पीत चुटकी

कफजनित खांसी और श्वास रोग के लिये यह अक्सीर के समान है। इसकी विशेषता यह है कि केवल पांच मिनट में ही तैयार हो जाती है। किसी प्रकार की हानि कदापि नहीं होती। तर और खुश्क दमा के लिये समान रूप से लाभकारी है। हर प्रकृति के व्यक्ति के लिए हर ऋतु मे निशक होकर प्रयोग में ला सकते हैं। श्वास रोग के नाश के लिये यह अपने गुणों में अद्वितीय है।

विधि—गेहूँ और हल्दी समान मात्रा में लेकर मिट्टी के कोरे वर्तन में दोनों को बारी-बारी से अधभुना करलें। तदुपरांत आपस में मिलालें। बारीक पीसकर सावधानी के साथ शीशी में रख छोड़ें। औषधि तैयार है। आवश्यकता के समय पहिले दिन ५ ग्राम दवा पानी के साथ दें। फिर प्रतिदिन एक रत्ती औषधि अधिक दिया करें। बहुत शीघ्र आराम हो जायगा।

१४४-सज्जी का अनुपम प्रभाव

यह साधारण सी औषधि श्वास रोग के लिए इतनी लाभप्रद है कि आपको आश्चर्य होगा। इसके कुछ दिनों के सेवन से वर्षों का पुराना रोग जड़ से मिट जाता है। औषधि क्या है बस आयुर्वेद का गौरव है। प्रयोग करने से इसका प्रभाव सजीवनी बूटी से कम नहीं रहता है। यह अनेक बार अनुभव में आ चुकी है। नया श्वास रोग तो एक ही सप्ताह के सेवन से जड़

जाता है। पुराना कुछ देर से जाता है। परन्तु दोनों के लिए रामबाण औषधि है।

विधि—सज्जी जिससे कपड़े धोया करते हैं, ५० ग्राम लेकर बारीक करलें। इस पर आक का दूध इतना डालें कि सज्जी से दूध एक अंगुल ऊंचा रहे। इसे एक सप्ताह तक आक के दूध में इसी प्रकार तर रखें। तत्पश्चात् कूजे को कपरोटी करके रात के समय १५ किलो उपलों की आग दें। प्रातः-काल ठंडा होने पर निकाल लें। अन्दर से जो सज्जी निकले उसको बारीक पीसकर सावधानी से शीशी में रखें। आवश्यकता के समय एक रत्ती से दो रत्ती तक औषधि बताशे में रखकर दिया करें। हर प्रकार के श्वास के रोग के लिये अमृत के समान है।

१४५-श्वास रोगहर वटी

यद्यपि इससे पूर्व आपकी सेवा में अच्छे-अच्छे योग प्रस्तुत किये जा चुके हैं तथापि निम्न योग भी श्वास रोग के लिये बड़ा ही गुणकारी है। अनेक बार अनुभव द्वारा परीक्षित है।

खिरनी के बीज ५ ग्राम और काली मिर्च १० ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर गोदनी के रस से १-१ रत्ती की गोलियां बनालें और सावधानी से शीशी में रखें। आवश्यकता के समय काम में लावें। दिन में तीन से चार गोली पानी के साथ दिया करें। बहुत शीघ्र आराम होगा। बड़ी उत्तम औषधि है।

१४६-अन्य योग

निम्नलिखित योग पुराने से पुराने और सर्व प्रकार के श्वास रोग को दूर करता है। योग प्रदाता का कथन था कि मैंने इसी योग से एक बुढ़िया का उपचार किया था जिसको लगभग दस-बारह वर्ष से श्वास रोग था। बेचारी चल-फिर भी नहीं सकती थी। ईश्वरानुग्रह से वह केवल इसी योग के प्रताप से स्वस्थ हो गई। परन्तु इसमें समय कुछ अधिक लगता है। लगभग एक मास में पूरा स्वास्थ्य लाभ होता है। बहुत ही सरल विधि है। किसी प्रकार की कठिनाई और अड़चन नहीं होती।

विधि—प्रातःकाल साबत ईसबगोल एक मुट्ठी भर गाय के दूध के साथ दिया करें। यदि दूध न मिल सके तो केवल सादा पानी के साथ ही दिया करें। केवल एक मास के सतत सेवन से रोग समूल नष्ट हो जायगा।

१४७-श्वास रोग का यूनानी उपचार

एक जंगली कबूतर लेकर पेट चीरकर अन्दर से मल इत्यादि निकाल

दें। तत्पश्चात् ६० ग्राम काला नमक को १२० ग्राम आक के दूध के साथ खूब घोटें। कबूतर के पेट में इसको भरकर गेहूं के आटे से अच्छी प्रकार बन्द कर दें। तदुपरांत मिट्टी के कूजे में डालकर कपरोटी करें। जब खुश्क हो जावे तब ४० किलो जंगली उपलों की आग दें। ठंडा होने पर कूजे को उपलों की राख के बीच से निकाल लें। जला हुआ आटा इत्यादि दूर करके बारीक खरल करें। शीशी में सावधानी से रखें। आवश्यकता के समय १ रत्ती से २ रत्ती तक औषधि पानी के साथ दें। हर प्रकार का श्वास रोग जाता रहेगा।

१४८-मूंगा भस्म

यह भस्म भी श्वास रोग के निवारण के लिये अत्यधिक हितकारी है और शीघ्र ही प्रभाव दिखाती है। एक साधारण सी औषधि में ईश्वर ने अत्यन्त गुण भर रखे हैं। अनुभव से सत्यता प्रमाणित होती है। आप भी बनाकर प्रकृति के रहस्य का परीक्षण करें।

विधि—मूंगा की जड़ १० ग्राम और आक का दूध ३० ग्राम। उपर्युक्त जड़ को आक के दूध में खरल करके टिकिया बनाएं। एक कूजे में कपरोटी करके सुखालें। तीन-चार किलो जंगली उपलों की आग दें। ठंडा होने पर भस्म को निकाल लें। बारीक पीसकर सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। प्रातः सायं एक-एक रत्ती की मात्रा पान या बताशे में खिलाया करें। हर प्रकार के श्वास रोग के लिए गुणकारी है। हानिकारक वस्तुओं से परहेज रखें।

१४९-कफजनित श्वास रोग

जो योग पहिले बताये जा चुके हैं, वे सब प्रकार के श्वास रोगों के लिए समान रूप से लाभकारक हैं। परन्तु निम्नोक्त योग केवल कफजनित श्वास रोग के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। पहिले एक-एक दिन के अन्तर से तीन-चार वमन करायें। तदुपरान्त इस औषधि का सेवन करायें। केवल कुछ ही दिनों के सेवन से पूर्ण आराम हो जायगा।

विधि—१५ ग्राम कुचला लेकर घी में भून लें। परन्तु ध्यान रहे कि यह अधिक न जल जावे। जब लाल हो जाये तब उतार कर खरल में बारीक करें। बस औषधि तैयार है। सावधानी से शीशी में डालकर रखें। आवश्यकता के समय एक रत्ती से दो रत्ती तक की मात्रा दूध या ताजा पानी के साथ दें। इसका स्वाद कटु होता है। अतः इसमें थोड़ी सी खांड रखकर दिया करें। परन्तु पहिले तीन-चार बार वमन अवश्य कराना चाहिए। तत्पश्चात् औषधि अपना पूरा लाभ दिखा सकेगी।

१५०-अन्य योग

यह योग भी बड़ा प्रभावोत्पादक है। खुश्क और तर दोनों प्रकार के श्वास रोग के लिये समान रूप से गुणकारी है। साधारण खांसी तो एक दो बार सेवन से ही उड़ जाती है। पन्द्रह दिनों के निरन्तर सेवन से बहुत पुरानी खांसी और श्वास रोग भी समूल नष्ट हो जाते हैं। बड़ा लाभप्रद और अनुपम योग है।

विधि—तम्बाकू का गुल, जो कि हुक्का पीने के उपरांत चिलम से निकला करता है, लेकर इसको आग में जलाकर सफेद करलें। इसके आधे भाग के बराबर भुनी हुई फिटकरी मिला लें। बारीक पीसकर सावधानी से रखें। आवश्यकता के समय दो से तीन रत्ती तक पान या बताशा में रखकर दिया करें। बड़ी ही लाभप्रद औषधि है। खट्टी और वातकारक वस्तुओं से परहेज करें।

१५१-संन्यासी योग

यह योग एक संन्यासी जी ने प्रदान किया था। वे इसकी बड़ी प्रशंसा करते थे और उनका कथन था कि हर प्रकार के श्वास रोग के लिए यह अचूक योग है।

विधि—थुहर की एक मोटी सी ताजा लकड़ी लेकर इसको चाकू आदि से खोखली करलें। इसमें २५ ग्राम सफेद फिटकड़ी भर दें। अच्छी प्रकार कपरोटी करके चार किलो उपलों की आग दें। ठण्डा होने पर निकाल लें और फ़िटकड़ी को बारीक पीसकर शीशी में डाल लें। आवश्यकता के समय सेवन करें। प्रात सायं दो-दो रत्ती औषधि जल के साथ दिया करें। थोड़े ही समय में रोग समूल नष्ट हो जायगा।

१५२-श्वास रोग का अन्तिम उपचार

एक रोहू मछली लें जिसका वजन १२० ग्राम से कम न हो, उसका पेट चीर करके बिना मल निकाले निम्नोक्त औषधि भर दें। खुरासानी अजवायन, कण्टकारी (कण्डयारी) के पक्के हुए फल १२-१२ ग्राम और सैंधव नमक ३ ग्राम। इनको मछली के पेट में भरकर सी दें और मिट्टी के कूजे में बन्द करके कपरोटी करें। जब खुश्क हो जाये तब दस किलो उपलों की आग में रखें। शीतल होने पर निकाल कर बारीक खरल करके शीशी में डाल लें। शीत ऋतु मे चार रत्ती की मात्रा १२-ग्राम मधु में मिलाकर दिया करें। ग्रीष्म ऋतु में दो रत्ती की मात्रा पानी के साथ दिया करें। चालीस दिनों तक निरन्तर सेवन करते रहें। पूरा-पूरा परहेज रखें। पौष्टिक

आहार खिलाते रहें। चालीस दिनों के सेवन से पुराने से पुराना श्वास रोग जड़ से मिट जाता है। अनेकों बार का अनुभूत और अचूक योग है। परन्तु सेवन काल में पूरा-पूरा पथ्य (परहेज) रखना आवश्यक है। तदुपरान्त अनुकूल वस्तुएं खिला सकते हैं। किसी सज्जन ने यह योग अन्य नाम से रजिस्टर्ड करा रखा है, जो कि प्रचुर मात्रा में बिकता है। बनाकर अनुभव में लावें।

श्वास रोगियों के लिए अमृतोपदेश

१—भोजन के पश्चात् कम से कम एक घण्टा तक पानी न पीना चाहिए।

२—एक ही समय डटकर पानी न पियें। अपितु थोड़ा-थोड़ा और रुक-रुक कर पीना श्रेयस्कर है।

३—दिन के समय कदापि न सोना चाहिए। यदि सोना ही हो तो बहुत थोड़े समय के लिये।

४—मल मूत्र के वेग को बिलकुल न रोकें।

५—दोनों समय वायु सेवन के लिये खुली और शुद्ध वायु में अवश्य जाया करें।

उपर्युक्त बातों पर ध्यान रखने और आचरण करने से बड़ा बचाव रहता है।

अपथ्य—अधिक सोने, ठंडी और खट्टी वस्तुओं के सेवन से बचे रहें। सेब, अंगूर, नारंगी, ठंडे पानी का अधिक सेवन, धूप में अधिक चलना फिरना और गुड़, शक्कर, लाल मिर्च, तेल की बनी हुई वस्तुओं से सख्त परहेज रखें। अधिक परिश्रम भी न किया करें।

पथ्य—मूंग या अरहर की दाल गेहूं की चपाती के साथ दिया करें। बथुआ की भुजिया, कद्दू और चुकन्दर आदि भी दे सकते हैं।

नोट—क्योंकि यह रोग दौरे के साथ आता है अतः उसी समय दौरा रोकने का प्रयास करें और आराम के समय रोग के मूल कारण को दूर करने का उपाय करें।

दौरे को तत्काल रोकना

यदि दौरे को तत्काल रोकना हो तो हमारी सर्वप्रिय पुस्तक 'अनुभूत योग प्रकाश' मंगाकर अनुभव में लावें। इसमें दौरे को तत्काल रोकने के लिये हमारे अनुभूत और परीक्षित योग मिलेंगे। मूल्य केवल १० रुपये।

रक्त थूकना

इस रोग में खांसने से वलगम के साथ खून आया करता है और छाती पर खरखराहट सी रहती है। यदि रक्त का वर्ण लाल और कफयुक्त हो तथा विना कष्ट के आता हो तो यह रक्त फेफड़े से आया करता है और वड़ा भयकर होता है। इसमे वहुत शीघ्र उरक्षत रोग के होने का डर रहता है। यदि रक्त का वर्ण काला हो तो यह छाती से आया करता है किन्तु यह विशेष भयंकर नहीं होता। इस रोग के अनेक कारण हुआ करते हैं जो कि आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थो मे वर्णित है। यहां कुछेक योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि इस रोग के लिये विशेष रूप से लाभप्रद हैं।

१५३-अचूक चूर्ण

इसके तीन-चार दिनों के सेवन से अत्यधिक निकलता रक्त भी बन्द हो जाता है। भविष्य के लिये रोगी इस रोग से बचा रहता है।

विधि—सेलखड़ी की भस्म और लाल गेरू। दोनों को समान मात्रा में लेकर वारीक पीस लें। बस औषधि तैयार है। शीशी में सावधानी से रखें। आवश्यकता के समय प्रातःकाल निराहार मुख दो ग्राम चूर्ण ठंडे पानी के साथ दिया करें। दो-तीन दिनों में ही रक्त आना बन्द हो जायगा। बड़ा अद्वितीय योग है।

१५४-अन्य योग

यह योग भी इस रोग के लिए अनेक बार का अनुभूत और प्रभावोत्पादक योग है। चाहे कितना ही रक्त क्यों न आता हो, केवल दो ही दिन में बन्द हो जायगा।

विधि—कहरवाशमई आवश्यकतानुसार लेकर वारीक करके शीशी में भरलें। ;बस जादू समान प्रभाव वाली औषधि तैयार है। आवश्यकता पड़ने पर प्रतिदिन प्रातःकाल ४ रत्ती से १ ग्राम तक की मात्रा दूध की पतली लस्सी के साथ दिया करें। ईश्वरानुग्रह से केवल दो-तीन दिन में रोग में आराम हो जायगा।

१५५-सरलोपचार

परमपिता प्रभु ने अति साधारण सी वस्तुओं में इतने गुण भर रखे हैं कि जिनका विवरण लिखना लेखनी की शक्ति से वाहिर है। अतः जिस वस्तु

का प्रसंग है वह वस्तु देखने में बड़ी साधारण और तुच्छ सी मालूम होती है, परन्तु अनुभव से ज्ञात होता है कि यह कितनी उपयोगी है। रक्त थूकने वाले रोगी के लिये यह औषधि सजीवनी से किसी प्रकार कम नहीं है। योग परीक्षित है।

विधि—गिले अर्मनी, जो कि एक बहुत सस्ती वस्तु है, बाजार से ख़रीद लावें। लगभग ५ ग्राम की मात्रा प्रातः समय पानी के साथ घोल करके पिलाया करें। बहुत समय का रोग केवल कुछ ही दिनों में दूर हो जायगा। हर प्रकार की गर्म तेज और खट्टी वस्तुओं से परहेज करायें।

१५६-धनिया चूर्ण

धनिये का चूर्ण भी इस रोग के लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध होता है। इसकी विधि नीचे लिखी जाती है।

विधि—आवश्यकता के अनुसार धनिया लेकर बारीक पीस लें। प्रातः समय ५ ग्राम की मात्रा ठंडे पानी से दिया करें। तीन-चार दिन के सेवन से अत्यन्त लाभ होगा। बड़ा सरल और अनुपम योग है।

१५७-मूंगा भस्म

मूंगा (प्रवाल) भस्म जो कि श्वास रोग के प्रसंग में लिखी जा चुकी है रक्त थूकने वाले रोगी के लिए भी अत्यन्त लाभप्रद है। अनुभव आवश्यक है। इसकी सेवन विधि यह है कि एक रत्ती से २ रत्ती तक की मात्रा प्रातःकाल ठंडे पानी के साथ दिया करें। रक्त थूकने वालों के लिए सफल योग है।

पार्श्वशूल और न्यूमोनिया

साधारणतया पार्श्वशूल और न्यूमोनिया को एक ही रोग कहा जाता है, परन्तु वास्तव में ये दोनों रोग सर्वथा भिन्न-भिन्न हैं। पार्श्वशूल एक झिल्ली का शोथ है और न्यूमोनिया एक फेफड़े का शोथ है। ये दोनों रोग बहुत भयंकर और घातक हैं। अतः इनके उपचार में कदापि आलस्य न किया जाय। जहां तक सम्भव हो उपचार में शीघ्रता करें। क्योंकि प्राचीन आचार्यों का मत है कि इनका रोगी आठवें दिन प्राणोत्सर्ग कर देता है। इनके लक्षण और कारण अनेक होते हैं जो कि यहां पर नहीं दिये जा सकते। अतः उनको छोड़कर यहां पर केवल ऐसे योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि दोनों रोगों को दूर करने के लिये अत्यधिक उपयोगी और अनुभूत हैं।

१५८-पार्श्वशूल और न्यूमोनिया संजीवनी

वैसे तो यह योग वैद्यक ग्रन्थों में प्रायेण मिलता है परन्तु अन्तर केवल इतना है कि कुछेक महानुभाव तैयार करके इसके गुणों से परिचित हो जाते हैं और अन्य इसे तुच्छ समझकर बिलकुल ध्यान नहीं देते। इस योग को जितने रोगियों को दिया गया सबको पूर्ण आराम हुआ। जो सज्जन एक बार इस योग को तैयार करके इसके गुणों को पहिचान लेंगे, वे कभी अन्य योग का नाम तक नहीं लेंगे। हमारा यह सर्वप्रिय योग है, इसकी अधिक प्रशंसा करना निरर्थक है।

विधि—बारहसींगे का सींग २५ ग्राम को घीकुवार की १२५ ग्राम लुगदी में रखकर कपरोटी करें। इसे पन्द्रह किलो उपलों की आग में रखदें। ठंडा होने पर निकाल लें जो कि सफेद रंग की भस्म होगी। बारीक करके शीशी में डाल लें। यदि भस्म कच्ची रह जाये तो पुनः आग दें। एक से दो रत्ती तक की मात्रा अजवायन के अर्क या थोड़े गर्म पानी के साथ दें। दो, तीन बार देने से आराम हो जायगा।

१५९-क्वाथ

यह न्यूमोनिया और पार्श्वशूल दोनों रोगों के लिए बड़ा लाभप्रद है। इसके सेवन से मरणासन्न रोगी भी स्वस्थ हो जाता है। अनेकों बार अनुभव में आ चुका है। हर बार यह पूर्णतः सफल रहा है।

विधि—सौंठ ३ ग्राम और अरंड के बीज ७ ग्राम। दोनों को आधा किलो पानी में औटाएं। जब पानी १२५ ग्राम के लगभग शेष रहे तब मल छानकर थोड़ा गर्म-गर्म पिलायें। निराशाजनक दशा में भी यह अपना जादू भरा प्रभाव दिखाता है।

१६०-गुणकारी लेप

यह लेप भी बड़ा प्रभावोत्पादक है। समय पर हजारों रुपये की औषधि से उत्तम गुण करता है। दोनों रोगों में अपना जादू भरा प्रभाव दिखाकर निराशा को आशा में परिवर्तित कर देता है।

विधि—२५ ग्राम चिकनी मिट्टी को बारीक पीसकर भेड़ के दूध के साथ पीड़ा वाले स्थान पर लेप करें। ईश्वर कृपा से जरा सा खुश्क होते ही चीखते चिल्लाते रोगी को आराम मिल जाता है।

१६१-अनुभूत वटी

यह वटी न्यूमोनिया के लिए अमृत से कम नहीं है। केवल एक दो बार के सेवन से पूर्ण आराम हो जाता है। बड़ी अनुपम और अचूक गोलियां हैं। समय पड़ने पर निपुण वैद्य का काम देती है।

विधि—भुना हुआ सुहागा १२ ग्राम और भुना हुआ नीलाथोथा एक ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर और थोड़ा पानी डालकर मूंग के दाने के बराबर गोलियां बनावें। खुश्क करके सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय पानी के साथ एक एक गोली दिया करें।

१६२-पार्श्वशूल लेपन

इसके लगाने से उसी समय आराम हो जाता है। हथेली पर सरसों जमाने की लोकोक्ति इसके सम्बन्ध में पूर्णतः चरितार्थ होती है। पांच-दस मिनट के बाद रोगी ऐसा अनुभव करता है कि कभी रोग हुआ ही नहीं था।

विधि—१० ग्राम नौशादर को सूक्ष्म पीसकर थोड़े से मधु में मिला करके पीड़ा स्थान पर लेप करें। ऊपर कागज चिपका करके गर्म नमदे या

रूई से टकोर करें। तत्काल आराम होगा। इसके साथ निम्नलिखित गोली का सेवन करायें। यह सोने पर सुहागे का काम देगी।

विधि—लाहौरी नमक १० ग्राम, श्रृंग भस्म १० ग्राम। दोनों को किसी पक्की खरल में डालकर खूब जोरदार हाथों से खरल करें। तत्पश्चात् चने के बराबर गोलियां बनायें। प्रातः सायं एक-एक गोली पानी के साथ दें। पार्श्वशूल के लिए एममात्र उपचार है।

१६३—सरल लेप

यह लेप भी पार्श्वशूल के लिये बड़ा लाभप्रद है। तड़पते हुए रोगी को स्वास्थ्य प्रदान करता है। कई बार यह अच्छे-अच्छे योगों से बढ़ चढ़ कर प्रभाव दिखाता है।

विधि—अलसी ५ ग्राम और राई ५ ग्राम। दोनों को बारीक पीस करके पीड़ा के स्थान पर लेप करदें। ऊपर कागज रखकर गर्म ईंट या रूई से टकोर करें। आध घण्टे में आराम हो जायगा।

हृदय रोग

हृदय उत्तमांगों का शिरोमणि है। शरीर में तीन उत्तमांग हैं, मस्तिष्क, हृदय और यकृत। परन्तु जो स्थान हृदय को प्राप्त है वह अन्यों को नहीं है। यही शरीर का सम्राट है। मनुष्य और पशुओं का जीवन केवल हृदय पर ही आश्रित है। इसके रोगग्रस्त हो जाने से सारा शरीर भयग्रस्त हो जाता है। ईश्वर ने आत्मा का निवास स्थान भी हृदय को बनाया है। इसी स्थान से शरीर के अन्य अंगों को रक्त पहुँचता है। हृदय के कारण शरीर में उष्णता और नाड़ी की गति स्थिर रहती है। अब आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि इसके रोगग्रस्त होने से जीवन की क्या दशा होगी। नीचे कुछ ऐसे योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि कुछ पैसों में तैयार हो सकते हैं और बड़े-बड़े मूल्यवान योगों से उत्तम प्रभाव दिखाते हैं। धनिक लोग तो हृद्रोग पर सहस्रों रुपये खर्च कर देते हैं। क्योंकि साधारण और सस्ती वस्तु उन्हें अच्छी नहीं जंचती और न उन्हें विश्वास होता है। जब कुछ पैसे की औषधि से आराम हो तो सहस्रों रुपये नष्ट करने से क्या लाभ ? अच्छा यह है कि उपचार एक पैसे की औषधि से किया जाय और शेष धन परोपकार के कामों में लगाया जाय। औषधि का प्रभाव केवल विश्वास पर आश्रित है। साधारण लोग साधारण औषधियों पर विश्वास करके उनका उपयोग प्रारम्भ करते हैं और ईश्वर कृपा से उन्हें पूर्ण लाभ होता है।

१६४—हृत्कम्प

इस रोग में हृदय बहुत जोर-जोर से धड़कता है और रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि हृदय डूबता जा रहा है। आंखों के सामने अंधेरा सा छाया रहता है। किसी भय या क्रोध की दशा में अधिक धड़कने लगता है। नाड़ी एक मिनट में लगभग १५० बार गति करती है। यह रोग पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक हुआ करता है। इसका मूल कारण पुट्ठों की दुर्बलता होती है। जो खूनी बवासीर से ग्रस्त हों उनको यह रोग दौरे से हुआ करता है। इसके लिए अत्यन्त लाभप्रद और अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। अनुभव में लाकर आप भी जनता का हित-सम्पादन करें।

१६५—हृत्कम्प संजीवनी

यह सस्ती और गुणों से भरपूर औषधि हृदय के रोगों के लिये बड़ी गुणकारी है। यथा हृदय-दुर्बलता, हृत्कम्प, दोष और चेतनता शून्य इत्यादि रोगों के लिये अत्यधिक हितकारी है। आवश्यकता के समय बनाकर इसका जादू भरा प्रभाव देखें।

विधि—आवश्यकतानुसार सूखा आंवला लेकर खूब बारीक कर लें। इसके बराबर मिश्री मिलाकर सावधानी से रखें। जरूरत पड़ने पर प्रातः समय निराहार मुख सात ग्राम की मात्रा प्रतिदिन पानी के साथ दिया करें। कुछ दिनों में हृदय के सब रोग दूर हो जायेंगे। बड़ा सरल और अनुपम योग है।

१६६—अन्य योग

यह साधारण सी औषधि भी हृदरोगों के लिए अपने गुणों में अद्वितीय है। एक सप्ताह के सेवन से हृदय का ताप, हृदय दुर्बलता और हृत्कम्प इत्यादि रोग दूर होकर पूरा आराम हो जाता है।

विधि—रेहां के बीज ५ ग्राम लें। रात के समय एक कूजे में डाल कर ऊपर आधा किलो पानी डालें। रात भर बाहिर हवा में पड़ा रहने दें। प्रातः समय थोड़ा सा मीठा मिलाकर सेवन किया जाय। एक सप्ताह के सेवन मे रोग मिटना आरम्भ हो जायगा।

१६७—हृदय ताप शामक

यह योग अति स्तुत्य है। हृदय के सब रोगों के लिये एकमात्र और अनुभूत उपचार है। अनेक बार का अनुभूत और परीक्षित है। इसके एक सप्ताह के सेवन से हृदय के सब रोगों का नाश हो जाता है।

विधि—तरबूज के बीज २५ ग्राम को रात के समय पानी में भिगोकर रखें। प्रातःकाल भलीभांति घोट पीस कर थोड़ी खांड मिलायें। कपड़े से छानकर पिलाया करें। इसके समक्ष अति मूल्यवान औषधियां पानी भरती हैं।

१६८—हृदय पीड़ा

हृदय की पीड़ा भी बहुत भयंकर रोग है। इसके उपचार करने में कभी भी आलस्य न किया जाये। इसके लिए एक अत्यन्त सरल और अनुभूत योग प्रस्तुत किया जा रहा है।

विधि—हिरण के सींग का भीतरी भाग (गूदा) आवश्यकतानुसार ले लें। इसे एक मिट्टी के कूजे में बन्द करके आग में भस्म बनालें। बारीक पीसकर सावधानी से शीशी में डाल लें। जरूरत पड़ने पर प्रातः समय एक से दो माशा की मात्रा ठण्डे पानी के साथ दिया करें।

१६६—अन्य योग

आवश्यकतानुसार पुष्करमूल लेकर बारीक करके शीशी में रखें। आवश्यकता के समय ४ रत्ती से ८ रत्ती तक मधु में मिलाकर दिया करें। इससे भी हृदय पीड़ा को आराम होता है और यह लेप हृदय पीड़ा और हृत्कम्प के लिये अत्यधिक लाभप्रद है। रेवन्द चीनी को पानी में घोल करके दोनों कन्धों के मध्य लेप करें। बड़ी गुणकारी औषधि है।

आमाशय रोग

आमाशय एक कद्दू के आकार का अवयव है। इसमें हमारा खाया हुआ भोजन पहुँच कर पचता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आमाशय को ठीक रखना अत्यावश्यक है। मनुष्य का स्वास्थ्य और शक्ति आमाशय पर निर्भर है। ईश्वर ने आमाशय को मनुष्य का पाचक बनाया है। यदि आमाशय स्वस्थ और बिल्कुल ठीक हो तो साधारण से साधारण भोजन भलींभांति पच कर शरीर को बलवान बनाता है। यदि आमाशय में किसी प्रकार का दोष हो तो अच्छे से अच्छा भोजन भी लाभप्रद सिद्ध नहीं होता। हमें आमाशय रोगों से बचने का प्रयास करना चाहिये। यदि इसमें किसी प्रकार का विकार हो तो तुरन्त उपचार कराना चाहिए। अन्यथा विभिन्न रोगों में ग्रस्त होना पड़ेगा। नीचे इस रोग के लिए अत्युत्तम और अनुभूत योग लिख रहा हूं। बनाकर लाभ उठावें।

१७०—आमाशय पीड़ानाशक

यह योग आमाशय की पीड़ा का नाश करके उसे प्राकृतिक अवस्था में लाता है। भूख खूब लगती है। सख्त से सख्त भोजन शीघ्र पच जाता है। अनुभूत और अचूक योग है। बनाकर लाभ उठावें।

विधि—देशी अजवायन १२ ग्राम, काला नमक ३ ग्राम और हींग २ रत्ती। सबको बारीक पीसकर शीशी में डाल लें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं ४ रत्ती से १ ग्राम तक की मात्रा थोड़े गर्म पानी के साथ दिया करें। सब हृद्रोगों के लिये अनुपम औषधि है।

१७१—आमाशय पीड़ाहारी चूर्ण

आमवात और कफ के कारण होने वाली आमाशय पीड़ा के लिए यह बड़ा लाभप्रद है। इसके सेवन से भूख अच्छी लगती है। खाया हुआ भोजन अच्छी प्रकार पचकर शरीर का अंग बन जाता है।

विधि—सोंठ और देशी अजवायन को समान मात्रा में लेकर बारीक पीस लें। थोड़ा सा सैंधा नमक मिलाकर रख छोड़ें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं भोजनोपरांत एक से दो ग्राम तक की मात्रा पानी के साथ दिया करें। कुछ ही दिनों में सब प्रकार के आमाशय रोगों से मुक्ति मिलेगी।

१७२–आमाशय पीड़ानिवारक चुटकला

यह योग भी आमाशय पीड़ा के लिये बड़ा लाभप्रद है। इसके गुण अनुभव से ज्ञात होते हैं।

विधि—आवश्यकतानुसार रेवन्द खताई लेकर बारीक पीसकर शीशी में डाल लें। आवश्यकता के समय १ से २ ग्राम तक की मात्रा १५ ग्राम गुलकन्द में मिलाकर खिलाया करें। यदि इससे वमन हो जायगी तब भी आराम हो जायगा। अन्यथा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगा। औषधि के बाद एक दो घूंट गर्म पानी पिला दिया करें। अनुपम और अचूक चुटकला है।

१७३–आमाशय दुर्बलता का उपचार

आमाशय को शक्ति पहुँचाने वाला सस्ता और गुणों से भरपूर योग है।

विधि—एक सेब लेकर इसके चारों ओर जितने लौंग आ सकें, चुभा दें। यदि पहिले सेब को छील लिया जाय तो बहुत अच्छा हो। अब उपर्युक्त सेब को चालीस दिन तक सुरक्षित स्थान पर रखें। तत्पश्चात् लौंग निकालकर शीशी में रख दें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं भोजनोपरान्त एक-एक लौंग दिया करें। इससे इतना लाभ होगा कि विस्मित रह जायेंगे।

१७४-स्वास्थ्यवर्द्धक चूर्ण

यह चूर्ण पाचन शक्ति को ठीक करता है, आमाशय को बल प्रदान करता है। पेट दर्द और गन्दे डकारों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। सारांश यह है कि आमाशय सम्बन्धी सर्व रोग इस चूर्ण के सेवन से समूल नष्ट हो जाते हैं।

विधि—आवश्यकतानुसार सोंठ और अजवायन लेकर इनमें नींबू का अर्क इतना डालें कि दोनों तर हो जायें। इसे छाया में सुखाकर बारीक पीस लें। इनमें थोड़ा सा नमक मिलाकर सावधानी से रख छोड़ें। दोनों समय ४ रत्ती से १ ग्राम तक की मात्रा पानी के साथ दिया करें। इस चूर्ण के सेवन से आमाशय के सब विकार दूर होकर पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होगा।

१७५-अन्य योग

यह चूर्ण भी गुणों से भरपूर है। आमाशय के अधिकतर रोगों के लिए यह अनुभूत औषधि है। यथा आमाशय पीड़ा, उदर पीड़ा, अफारा, भोजन न पचना, गन्दे डकार तथा विशूचिका इत्यादि रोगों के लिए यह अत्यधिक लाभप्रद है। यदि स्वस्थ मनुष्य इसका सेवन करें तो सब प्रकार

के आमाशय रोगों से बचे रहते हैं। योग नीचे लिख रहे हैं। बनाकर अनुभव में लायें।

विधि—अनारदाना १० ग्राम, पुदीना के सूखे पत्ते ५ ग्राम और स्वाद के अनुसार सैंधा नमक। तीनों औषधियों को बारीक पीसकर किसी शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय १ से २ ग्राम तक दोनों समय भोजन के उपरांत दिया करें। कुछ दिनों के सेवन से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होगा।

१७६ सरल चूर्ण

निम्नोक्त चूर्ण भी आमाशय रोगों के लिये बड़ा गुणकारी है। कुछ दिनों के सेवन से हर प्रकार का दर्द, शूल, अफारा इत्यादि दूर हो जाते हैं। जिन्हें भोजन से उपरति हो गई हो या भोजन करने के पश्चात् वमन हो जाता हो, उनके लिए यह अत्यधिक लाभप्रद है। अनेक बार के अनुभव के बाद आपकी सेवा मे प्रस्तुत किया जा रहा है। यह हर बार सफल रहा है।

विधि—सौंफ १० ग्राम और सफेद जीरा ५ ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर थोड़ी सी खांड मिला कर के रखें। आवश्यकता के समय काम में लायें। प्रातः सायं एक-एक ग्राम वजन की पुड़िया ठण्डे पानी के साथ दिया करें। सब प्रकार के आमाशय रोगों का निराकरण हो जायगा।

१७७-पाचक गुटी

यह योग हमारे प्रयोग में प्रायः आता रहता है और इसकी औषधि हर समय तैयार मिलती है। अनेकों रोगों पर रोगियों के कष्टों का निवारण करता है। आमाशय रोगों में संजीवनी से कम नहीं हैं। यह अपना जादू-भरा प्रभाव केवल पांच ही मिनट में दिखा देता है।

विधि—आक के ताजा लौंग ५ ग्राम, काली मिर्च २ ग्राम और अमचूर १० ग्राम। सब औषधियों को खूब बारीक पीसकर पानी से मटर के दाने के बराबर गोलियां बनालें। छाया में सुखाकर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय एक से दो गोली थोड़े गर्म पानी के साथ दें। सर्व प्रकार के आमाशय रोगों के लिए यह अनुपम और अचूक योग है। बनाकर इसके गुणों से लाभ उठावें।

विशूचिका

ईश्वर रक्षा करे। विशूचिका बड़ा भयंकर और घातक रोग है। प्रायेण महामारी के रूप में यह अनेक निर्दोषों के प्राणों का हनन कर लेता है। चेचक और प्लेग की तरह यह भी अपना भीषण नृत्य करता है। प्राचीन आचार्यों ने इसके दो भेद माने हैं। एक खुला और दूसरा बन्द। खुले में दस्त पानी की तरह और बड़े जोर से वमन होता है। बन्द में दस्त और वमन नहीं होते। पहिले नाड़ी तेज हो जाती है। तब दस्त पानी की तरह बहने लगते हैं। इससे रोगी बड़ा दुर्बल हो जाता है और शरीर ठण्डा पड़ जाता है। आंखें अन्दर धंस जाती हैं। शरीर में ऐंठन और त्वचा पर झुर्रियां प्रकट हो जाती हैं। शरीर का रंग नीला और आवाज बैठ जाती है। कभी वमन और दस्त होकर ज्वर हो जाता है। उस समय रोगी की दशा बड़ी चिन्ताजनक हो जाती है। खुले की अपेक्षा बन्द अधिक भयंकर होता है। दस्त और वमन से पहिले ही रोगी चल बसता है।

इसके कारण और लक्षणों के विस्तार में न जाकर केवल इतना कहना पर्याप्त है कि इसके उपचार में एक क्षण का भी विलम्ब न किया जाये क्योंकि यह पिशाच मानव-जीवन को अविलम्ब समाप्त कर डालता है। यदि किसी अनुभवी विशेषज्ञ का उपचार हो तो अच्छा है, अन्यथा ईश्वर पर विश्वास रख करके स्वयं ही उपचार करें सौ गुरों का एक गुर यह है कि विशूचिका के रोगी के पास शोर कदापि न हो। रोगी के पास ऐसी बात भी न करें जिससे रोगी के दिल को धक्का लगे। अच्छी बातें सुनाकर रोगी का उत्साह बढ़ाते रहें और मन प्रसन्न रखें। यह भी अत्यन्त हितकर है।

नीचे कुछ ऐसे योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि बड़े लाभप्रद हैं और अनेक बार अनुभव में आ चुके हैं। अवसर पड़ने पर बनाकर जनता का हित सम्पादन करें।

१७८-अनुभूत गुटी

एक बार हमारे पास के एक गांव में बड़े जोर से विशूचिका ने आक्रमण किया। कोई ऐसा घर न था जिसमें दो-तीन मनुष्य इस रोग में ग्रस्त न हों। दैवदुर्विपाक से वहां कोई चिकित्सक भी नहीं था जो कि उपचार

करता। वहां पर एक अनपढ़ पंसारी रहता था। उस समय वह किसी के बताये हुये योग के अनुसार गोलियां तैयार करके २५ पैसे प्रति गोली के हिसाब से बेचने लगा। जिस रोगी ने गोली खाई, वही स्वस्थ हो गया। इस अवसर पर पंसारी ने अच्छा धन कमाया और आसपास यह प्रसिद्धि हो गई कि योग क्या है जादू है। सबके हृदय में यह उत्कण्ठा हुई कि किसी प्रकार योग हाथ लग जाये। परन्तु पंसारी भी ऐसा पक्का निकला कि बताने का नाम तक न लेता था। मेरे एक मित्र का पंसारी से घनिष्ट सम्बन्ध था। बड़े प्रयत्न के बाद मुश्किल से योग का पता लगा ही लिया। उस समय से हम प्रायः इसी योग को प्रयोग में लाते रहे हैं। वही गुप्त योग आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। जो महानुभाव एक बार इस योग से लाभान्वित होंगे वे कभी अन्य योग का नाम तक नहीं लेंगे।

विधि—आक की ताजा जड़ का छिलका ५ ग्राम, आक के लौंग ५ ग्राम, काली मिर्च ५ ग्राम और काला नमक १० ग्राम। सबको खूब बारीक करके जंगली बेरके बराबर गोलियां बनालें। छायामें सुखाकर शीशीमें डाललें। आवश्यकता के समय एक-एक गोली एक-एक घन्टा के अन्तर से देते रहें। निम्नलिखित विधि से गर्म किया हुआ पानी थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पिलाते रहें।

१५ ग्राम पुदीना को दो किलो पानी में औटायें। जब एक किलो शेष रहे तब उतार लें और कपड़े में से छानकर बर्तन में रख छोड़ें। जब पानी की आवश्यकता हो तो यही पिलायें। ईश्वरानुग्रह से एक दिन में आराम हो जायगा। अनुभूत और अचूक योग है।

१७९-द्वितीय योग

यह योग भी बड़ा लाभप्रद है और अनेक बार अनुभव में आ चुका है। अनेकों निराश रोगी इससे जीवन पा चुके हैं।

विधि—पुदीना के पत्ते २० ग्राम और बड़ी इलायची ५ नग। दोनों को कूट करके १ किलो पानी में डालकर औटायें। आधा पानी जल जाने के बाद उतार लें। फिर किसी शुद्ध कपड़े में से छानकर रख छोड़ें। इसमें से २५-२५ ग्राम पानी थोड़े-थोड़े अन्तर से देते रहें। इससे दस्त और वमन को आराम होकर चित्त बिलकुल ठीक हो जायगा।

१८०-विशुचिका का अक्सीर इलाज

एक चाय के चम्मच में थोड़ी सी शक्कर डालकर कर्पूर सत्व की तीन चार बूंद मिलाकर पिलावें। लगभग पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के अन्तर से यही क्रिया करते रहें। इससे आंतों का-ताप दूर होकर पूर्ण आराम हो जायगा।

१८१-विशुचिका का अन्तिम उपचार

मरणासन्न रोगी को जीवन प्रदान करने वाला प्रभावोत्पादक योग है। अत्यन्त चिन्ताजनक दशामें अपना जादूका सा प्रभाव दिखाता है। आप इसका आशु प्रभाव देखकर विस्मित रह जायेंगे।

विधि—उत्तम कपूर १ ग्राम को पलांडु रस १२५ ग्राम में मिलाकर शीशी में डालकर सुदृढ़ कार्क लगादें। आवश्यकता के समय ईश्वर का नाम लेकर सेवन कराना प्रारम्भ करें। ५ ग्राम दवा एक चम्मच में निकालकर थोड़ी सी मिश्री मिलाकर देते रहें। ईश्वर कृपा से एक ही दिन में आराम हो जायगा।

१८२-बन्द विशुचिका

इस योग के एक दो बार के सेवन से ही आराम हो जाता है और समस्त दोष दूर हो जाते हैं। बनाकर इसका परीक्षण करें।

विधि—कबाबचीनी और नीम के फूल दोनों तीन-तीन ग्राम, काली मिर्च १ ग्राम और सेंधा नमक १० ग्राम। सबको कूट करके एक किलो पानी में औटायें। जब आधा शेष रहे तब उतार कर रख छोड़ें। थोड़े-थोड़े अन्तर से पिलाते रहें। ईश्वर कृपा से शीघ्र आराम हो जायगा।

१८३-विशुचिका हिचकियों का उपचार

कई बार विशूचिका में रोगी को हिचकियों के कारण बड़ा कष्ट होता है। इसके लिए नीचे दो अनुभूत योग प्रस्तुत कर रहा हूं। तैयार करके अनुभव में लावें।

विधि—मुलैठी ६ ग्राम और कूजा मिश्री ६ ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर मिलालें और इस औषधि की ५-५ ग्राम की तीन पुड़ियां बनालें। ३-३ घंटे के अन्तर से एक ही दिन में खिला दें। अवश्य आराम हो जायगा।

१८४-द्वितीय योग

५ ग्राम कलौंजी बारीक पीसकर १० ग्राम मक्खन में मिलाकर रोगी को चटायें। आधे घंटे के अन्दर आराम हो जायगा।

१८५-एक संन्यासी का गुप्त योग

यदि इस योग को जादू के नाम से पुकारा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। यह इसके लिए सर्वथा उपयुक्त होगा। संन्यासी जी ने इस योग से सहस्रों रोगियों को जीवनदान दिया है। संन्यासी जी का मेरे से बड़ा गहरा सम्बन्ध था, तथापि छिपाते रहे। एक बार हमारे घरों में एक लड़का

विशूचिका रोग से ग्रस्त हुआ और सब उसके जीवन की आशा छोड़ बैठे। उस समय संन्यासी जी सौभाग्यवश वहीं पर थे। संन्यासी जी से इसके उपचार के लिए प्रार्थना की गई। संन्यासी जी ने रोगी को देखा और योग बता दिया और कहा कि एक-एक घंटे के अन्तर से एक-एक गोली देते रहें। ईश्वर-कृपा से आराम हो जायगा। उन्होंने इसी प्रकार किया। लगभग दो घंटे में रोगी बिलकुल ठीक हो गया। वही योग आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

विधि—आवश्यकतानुसार लाल मिर्च लें। खरल में बारीक पीसकर पानी से जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। जरूरत पड़ने पर ५ लौंग २५० ग्राम पानी में औटायें। जब आधा पानी शेष रहे तब इस पानी के साथ एक गोली दें। इसी विधि से एक-एक घंटे के अन्तर से देते रहें। अत्यन्त चिन्ताजनक अवस्था में भी यह सफल सिद्ध होता है। ठंडे पानी से परहेज करायें।

१८६-वमन रोधक

कई बार विशूचिका का रोगी वमन के कारण बड़ा व्याकुल होता है, परन्तु यह ध्यान रखें कि जब तक अन्दर से सारा विष न निकले तब तक वमन रोकने का प्रयत्न न करें। अन्यथा विष अन्दर रहने के कारण बड़ी हानि करेगा। कुछेक कमसमझ लोग उसी समय वमन रोकने का प्रयास करने लगते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। जब भीतर से सारा विष निकल जाये तब निम्नलिखित विधि से वमन रोका जाय तो कोई हानि नहीं होगी।

विधि—कपूर एक ग्राम और भंग के पत्ते चार रत्ती। दोनों को मिलाकर उड़द के दाने के बराबर गोलियां बनालें। एक गोली पानी के साथ दिया करें। उसी समय वमन बन्द हो जायगी। अनेक बार का अनुभूत योग है।

१८७-द्वितीय योग

यह संन्यासी योग भी वमन को तत्काल बन्द कर देता है। यह अनेक बार अनुभव द्वारा परीक्षित है और लाभप्रद सिद्ध हुआ है। चाहे किसी कारण से भी वमन क्यों न आती हो उसके लिए हितकर है।

विधि—आवश्यकतानुसार सौंफ लेकर घीकुवार के गूदे में खरल करके मटर के दाने के बराबर गोलियां बनावें। आवश्यकता के समय प्रातः सायं एक-एक गोली भोजनोपरांत दिया करें। सरल और सफल योग है।

१८८-तृतीय योग

दो ग्राम काकड़ासिंगी बारीक पीसकर पानी से फंका दें। उसी समय वमन रुक जायगा।

१८९-मूत्रावरोध पर

प्रायः ऐसा देखने में आया करता है कि तृषा आदि के दूर होने पर रोगी का मूत्र बन्द हो जाता है। इधर रोग से कुछ चैन मिलता है तो उधर मूत्र बन्द होने के कारण बड़ी बेचैनी हो जाती है। नीचे कुछ ऐसे योग लिख रहे हैं जिनसे मूत्र खुलकर आने लगता है और रोगी को आराम हो जाता है।

विधि—कलमी शोरा और चूहे की मैंगनी समान मात्रा में लेकर पानी के साथ खूब बारीक पीसकर पेड़ू पर लेप कर दें। बहुत शीघ्र मूत्र खुलकर आयेगा। सब प्रकार के मूत्रावरोध के लिए सरल और अचूक उपाय है।

१९०-सफल टकोर

यह टकोर भी सर्व प्रकार के मूत्रावरोध को उसी समय खोल देती है। जिन रोगियों को चिकित्सक छोड़ चुके हों उन्हें इस टकोर के प्रभाव से पांच मिनट में मूत्र खुलकर आने लगता है और रोगी को आराम हो जाता है। अनुपम और अचूक योग है। अनुभव द्वारा परीक्षण करें।

विधि—केसू के फूल १५ ग्राम लेकर एक किलो पानी में औटायें। अच्छी प्रकार औटाये जाने के उपरान्त किसी लोटा में पानी को डालकर थोड़ा गर्म-गर्म पेड़ू पर धीरे-धीरे टपकावें। मूत्र तत्काल खुलकर आने लगेगा।

१९१-तृषा शामक चुटकला

जोर की प्यास के लिए बड़ा ही अनुभूत और अचूक योग है। इसके प्रयोग से उसी समय प्यास दूर हो जाती है। बनाकर लाभ उठावें।

विधि—दो जायफलों को कूट करके एक लीटर पानी में औटायें। जब आधा पानी जल चुके तब उतारकर कपड़े में से छान, मिट्टी के कोरे कूजे में डालकर ठण्डा करलें। थोड़े-थोड़े अन्तर से घूंट-घूंट पिलाते रहें। प्यास को दूर करने के अतिरिक्त विशूचिका के लिये भी अमृतोपम है।

१९२-शरीर गर्म करने की मालिश

प्रायः विशूचिका में रोगी का शरीर बिलकुल ठण्डा हो जाता है और यह दशा चिन्ताजनक होती है। ईश्वर पर विश्वास रखते हुए निम्न विधि से मालिश करें। शीघ्र आराम हो जायगा।

विधि—एक जायफल को २५ ग्राम तिलों के तैल में जलालें। जब बिलकुल जल चुके तब खरल करलें। यहां तक कि जायफल अच्छी तरह मिल जावे। तत्पश्चात् सारे शरीर पर मालिश करें। हाथ और पांव की हथेलियों पर विशेष रूप से करें। इससे शरीर की सर्दी और ऐंठन दूर होकर पूर्ण आराम हो जायगा।

१९३-द्वितीय योग

देशी अजवायन ५ ग्राम को सरसों के २० ग्राम तैल में जलाकर बारीक पीसलें। इसकी सारे शरीर पर और विशेषतः हाथ और पांव के तलुओं पर मालिश करें। रूई गर्म करके जो-जो अंग अधिक ठण्डे हों उन पर टकोर करें। इस विधि से शरीर की सर्दी दूर होकर शरीर बहुत शीघ्र गर्म हो जायगा। बड़ा सरल और सफल योग है।

कौड़ी की पीड़ा

यह भी बड़ा कष्टप्रद रोग है। इसके कष्ट का वे लोग अनुमान कर सकते हैं जो इसमें ग्रस्त रह चुके हों। प्राय: यह वातप्रधान वस्तुओं के अधिक सेवन से होता है। नीचे इसके लिए कुछेक अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इनकी परीक्षा कर लाभ उठायें।

१९४-आसान चुटकला

विधि—आवश्यकतानुसार सौंफ लेकर वारीक खरल करके शीशी में रखें। बस औषधि तैयार है। जरूरत पड़ने पर प्रात: समय ५ ग्राम के लगभग चूर्ण ठंडे पानी से फंका दें। ईश्वरानुग्रह से एक ही बार के सेवन से दर्द मिट जायगा। दूसरी बार सेवन करने की प्राय: आवश्यकता नहीं पड़ती। अनेक बार का अनुभूत योग है।

१९५-द्वितीय योग

यह योग भी अनेक बार के अनुभव द्वारा सफल सिद्ध हुआ है। इसका प्रभाव सर्वथा अचूक है। आप भी परीक्षण करके जनता का उपकार करें।

विधि—एक रत्ती हीरा हींग मुनक्का में रखकर सेवन करा दें। इसके एक ही बार के सेवन से पूर्ण आराम हो जाता है। चावल, कच्चा दूध, छाछ, दही आदि से परहेज रखें।

गेहूँ की रोटी, मूंग की दाल और गेहूं का दलिया आदि खाने के लिये दें। भोजन के बाद ३ घंटे रोगी को सोने न दें।

१९६-अनुभूत लेप

ईसबगोल का गाढ़ा सा लुआब निकालकर पीड़ा पर लेप करके ऊपर कागज चिपका दें।

आमाशय रोगों के अनुभूत योग

हिचकी

वैसे तो विशूचिका के प्रसंग में कुछ योग लिखे जा चुके हैं तथापि एक दो योग और भी प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

१९७-हिचकी का चुटकला

यह सहस्रों बार का अनुभूत योग है। इसकी प्रथम मात्रा जादू जैसा प्रभाव दिखाती है। अनुपम योग है।

विधि—३ ग्राम छोटी इलायची लेकर कूटलें। आधा किलो पानी में डालकर औटायें। जब २०० ग्राम के लगभग पानी शेष रहे तब उतारकर कपड़े में मे छानकर थोड़ा गर्म-गर्म रोगी को पिलादें। हिचकी तत्काल बन्द हो जायेगी।

१९८-नस्य

यह नस्य भी हिचकी के लिये बड़ी लाभप्रद है। यह अनेक बार अनुभव में आ चुकी है और पूर्णतः सफल रही है। योग यह है।

विधि—२० ग्राम नकछींकनी को बारीक पीसकर कपड़े में से छान लें और सावधानी से शीशी में रखें। जरूरत पड़ने पर रोगी को नस्य की भांति सुंघावें। दो चार छींकें आकर हिचकी चली जायगी। सरल और अनुपम योग है।

१९९-रक्तवमन

खून थूकने के प्रसंग में जो योग पहले लिखे जा चुके हैं वे सब के सब इसके लिये लाभप्रद हैं। यहां पर एक दो योग रक्त वमन के लिये प्रस्तुत किये जा रहे हैं। ये भी अपने गुणों में अद्वितीय हैं।

२००-रक्तवमन संजीवनी

इसकी एक दो मात्राओं से लाभ होने लगता है। विशेषतः यह कि तीन-चार बार के सेवन से यह रोग मिट जाता है। स्तुत्य योग यह है :—

विधि—अनार के पत्ते और अंजबार की जड़ प्रत्येक ५–५ ग्राम लेकर बारीक पीसकर के २५० ग्राम पानी मिलाकर पिलायें। आशा है कि एक ही मात्रा से लाभ हो जायगा। यदि कुछ शेष रह जाय तो एक-दो मात्रा और दे दें।

२०१-लाभप्रद लेप

यह लेप भी बड़ा अचूक है। आज तक अनेकों रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर चुका है। यह सदा सफल रहा है।

विधि—माजूफल १० ग्राम, कीकर के पत्ते ५ ग्राम और बेर के पत्ते ५ ग्राम। तीनों औषधियों को पानी के साथ बारीक पीस करके गाढ़ा सा लेप तैयार करें। आमाशय पर लेप करें।

२०२-जी मिचलाना

विधि—कपूरकचरी आवश्यकतानुसार लें। बारीक करके शीशी में डाल लें। जरूरत पड़ने पर उपयोग करें। दो चार रत्ती तक की मात्रा पानी के साथ दिया करें। जी मिचलाना तत्काल बन्द हो जायगा।

२०३-द्वितीय योग

यह सरल सा योग भी हर प्रकार के जी मिचलाने के लिए बड़ा लाभप्रद है। बड़ा प्रभावोत्पादक है। यथावसर बनाकर लाभ उठायें।

विधि—वटवृक्ष की दाढ़ी जलाकर इसके बराबर कुजा मिश्री लें। दोनों को आपस में खूब घोट पीसकर शीशी में डाल लें। जरूरत पड़ने पर एक ग्राम की मात्रा पानी के साथ दें। वमन और जी मिचलाने के लिए अत्यधिक लाभप्रद है।

उदर रोग

२०४-उदर पीड़ा

विधि—पुदीना के सात ताजा पत्ते और छोटी इलायची एक। दोनों को पान में रखकर खाने से उदर पीडा तत्काल दूर हो जाती है।

२०५-उदर शूल

विधि—करंजवा की एक कच्ची मींगी और एक भुनी हुई। दोनों को पानी में घोट करके रोगी को पिला दें। उसी समय आराम हो जायेगा।

२०६-द्वितीय योग

विधि—काली मूसली ३ ग्राम को बारीक करके थोड़ा सा गोघृत मिलाकर खिलावें। इससे शूल और छाती का दर्द दूर हो जाता है।

२०७-उदर कृमी

विधि—२५ ग्राम बकायन की छाल को दो किलो पानी में औटाय। जब सारा पानी जलकर २५० ग्राम शेष रह जाये तब कुल २५ ग्राम गुड़ मिलाकर रोगी को सोते समय पिलाया करें। सात दिन यह क्रिया जारी रखें। सारे कीड़े मर कर मलमार्ग से निकल जायेंगे।

२०८-कद्दू दाना

विधि—आवश्यकतानुसार वायविडंग लेकर खूब बारीक करलें। नित्य प्रति प्रातः समय ५ ग्राम चूर्ण की मात्रा १०० ग्राम दही के साथ दिया करें। यदि रोग पुराना और प्रबल हो तो दोनों समय इसी विधि से दिया करें। पुराने से पुराने कीड़े कुछ दिनों के सेवन से मरकर गुदामार्ग से निकल जायेंगे।

२०९-द्वितीय योग

विधि—करंजवा की मींगी १२ ग्राम और काला नमक ३ माशा। दोनों को बारीक करके नित्य पांच ग्राम खाना बड़ा लाभप्रद है।

२१०-तृतीय योग

आवश्यकतानुसार इश्कपेचा के बीज लेकर खूब बारीक करके इसके बराबर खांड मिलालें। रात के समय १० ग्राम खिलायें। दो दिनों में ही सारे कीड़े मर जायेंगे।

आन्तों के रोग

आन्त आहार नलिका का वह भाग है जो कि आमाशय से प्रारम्भ होकर गुदा तक पेट में विद्यमान है। जो कुछ हम खाते पीते हैं वह पहिले आमाशय में पहुंचता है और वहां पर पककर सारभाग तो यकृत में छोटी स्नायुओं के द्वारा पहुंचता है और जो मलयुक्त होता है, वह अन्तिड़यों द्वारा उतरना शुरू हो जाता है। अन्त्रियां अपना आहार ग्रहण करने के उपरांत शेष भाग को मलरूप में गुदाद्वार से निकाल देती हैं। आयुर्वेद की दृष्टि से जो वस्तु आमाशय के लिये लाभप्रद है वही अन्त्रियों के लिये भी है, और जो हानिप्रद है वह अन्त्रियों को भी हानि पहुँचाती है।

प्रवाहिका

यह एक प्रसिद्ध रोग है। हर छोटा बड़ा इससे सुपरिचित है। यह बड़ा कष्टप्रद रोग है। प्राचीन आचार्यों ने इसके दो भेद किये हैं। यदि कोष्ठबद्धता के कारण हो तो रेचक औषधि देने से आराम हो जाता है। परन्तु यदि अन्य कारणों से हो तब निम्नलिखित योगों से लाभ उठावें।

२११-कोष्ठबद्धता की प्रवाहिका की परीक्षा

विधि—तुकमलंगा के १० ग्राम बीजों को थोड़े से घी से चिकना करके पानी के साथ साबत ही निगलवा दें। यदि कुछ घन्टों के पश्चात ये मल के साथ साफ निकल जायें तो प्रवाहिकों कोष्ठबद्धता के कारण नहीं है अन्यथा है।

२१२-सुद्दों का निराकरण

इस औषधि के देने से सुद्दे बड़ी आसानी से निकल जाते हैं और दर्द बहुत कम हो जाता है। कोष्ठबद्धता के कारण हुई प्रवाहिका को, सुद्दों के निकल जाने से स्वयं आराम हो जाता है। यदि कुछ कमी रहे तो बन्द करने की औषधियों का सेवन करायें। अवश्य आराम हो जायेगा। योग यह है :—

विधि—जलापा की जड़ ६ ग्राम को ठंडाई की तरह पानी में खूब अच्छी तरह पीसकर और वस्त्रपूत करके थोड़ा सा मीठा मिलाकर पिलायें। परन्तु इसको जितना अधिक खरल किया जाये यह उतना ही अधिक हितकर और कम हानिकर सिद्ध होगा।

२१३-सर्व प्रवाहिका नाशक

यह योग सब प्रकार की प्रवाहिका के लिये बड़ा लाभप्रद और सफल सिद्ध हुआ है। अनेक बार अनुभव में आ चुका है और हितकर रहा है। बनाकर लाभ उठायें।

विधि—आवश्यकतानुसार जंगी हरड़ लेकर थोड़े से गोघृत से चिकना करके लोहे के तवे पर भूनलें। बारीक पीसकर इसके बराबर शक्कर मिलाकर रख छोड़ें। आवश्यकता के समय प्रातःकाल ६ ग्राम की मात्रा पानी के साथ दिया करें। एक दो मात्राओं में ही स्वास्थ्य लाभ प्रतीत हो जायेगा।

भोजन—चावल और दही खिलायें।

२१४-प्रवाहिका एवं मरोड़ का चुटकला

यह योग भी प्रायः अनुभव में आकर बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ है। प्रवाहिका और मरोड़ों के लिए रामवाण औषधि है। परीक्षण करें।

विधि—२० ग्राम काकड़ासींगी को खूब बारीक पीसकर कपड़े से छानकर रखें। आवश्यकता पड़ने पर एक से दो ग्राम तक की मात्रा चार चार घन्टे के अन्तर से दही में मिलाकर देते रहें। ५ दिन में आराम हो जाता है। अचूक चुटकला है।

२१५-सरलोपचार

कोष्ठबद्धता से होने वाली प्रवाहिका के लिए अन्तिम अचूक दवा। यह रोग इससे तुरन्त नष्ट हो जाता है।

विधि—आवश्यकतानुसार पीपल लेकर बारीक पीसकरके शीशी में डाल रखें। बस औषधि तैयार है। आवश्यकता के समय ईश्वर का नाम लेकर प्रातः सायं १—१ ग्राम की मात्रा ताजा दूध के साथ दें। दो मात्राओं से ही आराम प्रतीत हो जायेगा।

२१६-अनुपम योग

बिना कोष्टबद्धता के कारण होने वाले प्रवाहिका रोग के लिए यह योग बड़ा प्रभावोत्पादक है। दस्त के साथ खून आने वाली प्रवाहिका के लिए अमृतोपम है। यह योग अनेक बार का परीक्षित है।

विधि—पठानीलोध आवश्यकतानुसार लें। बारीक करके शीशी में डाललें। आवश्यकता के समय उपयोग में लावें। प्रातः सायं दोनों समय १—१ ग्राम की पुड़िया ताजा पानी के साथ दिया करें। बड़ा सरल और अनुपम योग है।

२१७-द्वितीय योग

विधि—बाजार से मोचरस लाकर खरल में खूब बारीक करके पीसलें। तदुपरान्त १—१ ग्राम की पुड़िया बनालें। आवश्यकता पड़ने पर १—१ पुड़िया-प्रातः, दोपहर और सायं दिया करें। ईश्वर कृपा से एक ही दिन में आराम मालूम हो जायगा।

२१८-रक्तप्रवाहिका का उपचार

जब प्रवाहिका के कारण रोगी बिल्कुल दुर्बल हो गया हो और बराबर मलत्याग की हाजत होती हो और उस समय जोर लगाने के बाद कठिनाई से पीप की कुछ बूंदें आती हों, ऐसे अवसर पर निम्नलिखित योग का आश्रय लें। अवश्य ही आराम होगा।

विधि—आवश्यकतानुसार बायविडंग के बीज लेकर अधभुना करलें। फिर बारीक पीस करके किसी शीशी में रख छोड़ें। ईश्वर पर विश्वास रखते हुए उपचार प्रारम्भ करें। निश्चय ही लाभ होगा। इसमें से ३—३ ग्राम की पुड़िया पानी के साथ थोड़ा सा मीठा मिलाकर दोनों समय दिया करें। अनुभूत है।

अपथ्य—गर्म और तेज चीजें, मांस, बैंगन, गुड़, आलू और अर्वी से तथा चलने फिरने से भी परहेज करें।

आहार—सागूदाना, गेहूं का दलिया, दही, चावल, सेंगरी और मिश्रित अन्न की रोटी आदि खाने के लिए दे सकते हैं।

अतिसार

अतिसार भी एक साधारण और प्रसिद्ध रोग है। अतिसार और प्रवाहिका में जो भेद है उसको प्रत्येक व्यक्ति अच्छी प्रकार जानता है। प्रवाहिका में बड़ी पीड़ा और कब्ज से मलत्याग होता है, परन्तु अतिसार में तो कब्ज का नाम भी नहीं होता। दस्त पतले होकर अधिक आते हैं और बार २ आने की हाजत होती रहती है। प्रवाहिका की तरह इस का रोगी भी बड़ा दुर्बल हो जाता है। नीचे इस रोग के निवारण के लिये कुछ सरल और अनुभूत योग प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

२१९-आंवलों का चमत्कार

हर प्रकार के दस्तों के लिये बड़ी लाभप्रद औषधि है। अनेक बार अनुभव में आ चुकी है और पूर्णतः गुणकारी सिद्ध हुई है। तीन चार मात्राओं से आराम होता चला जाता है। इसके साथ यह आमाशय को बलिष्ठ बनाती है।

विधि—सूखा आंवला १० ग्राम और जंगी हरड ५ ग्राम। दोनों को खूब बारीक पीसकर १—१ ग्राम की मात्रा दोनों समय पानी से फंकायें। अतिसार के लिये सरल और अचूक योग है।

२२०-छाछ का चुटकला

सब प्रकार के दस्तों के लिये एक मात्र औषधि है और अन्तिम औषधि है। अनेक बार अनुभव में आ चुकी है और सफल रही है। हर प्रकार के दस्तों के अतिरिक्त संग्रहणी को भी लाभ पहुँचाती है। योग यह है।

विधि—खट्टी छाछ आधी किलो को आग पर रखकर इतना पकायें कि खूब गाढ़ी हो जाये। तदुपरांत इसमें १२ ग्राम सौंठ और तीन ग्राम मोचरस बारीक पीसकर मिलालें। जब गोली बांधने के योग्य हो जाये तब जंगली बेर के बराबर गोलियां बनायें। सूख जाने पर शीशी में डाल लें। आवश्यकता पड़ने पर एक दो गोली प्रातः, दोपहर और सायंकाल ताजा पानी के साथ दें। ईश्वरानुग्रह से कुछ दिन में भयंकर से भयंकर रोग में भी लाभ हो जायगा।

२२१-तृतीय योग

विधि—बिल्व का गूदा और देशी खांड १०—१० ग्राम दोनों को आपस में मिलाकर अच्छी प्रकार से घोट लें। इसकी दो पुड़िया तैयार करलें। प्रातः सायं दें। पहले दिन ही आराम मालूम हो जायेगा। अनुभूत औषधि है।

२२२-रक्तातिसार

प्रवाहिका की तरह इस रोग में भी अन्दर से खून कट कट कर निकला करता है। परन्तु प्रवाहिका के समान अधिक कष्ट नहीं होता है। नीचे सरल योग प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे रोग समूल नष्ट हो जाता हैं। योग आपके सामने है। इसका परीक्षण करके परोपकार की ओर हाथ बढ़ायें।

विधि—सैलखड़ी और लाल गेरु दोनों को समान मात्रा में लें। खूब बारीक पीसकर सावधानी से शीशी में रख छोड़े। जरूरत पड़ने पर इसमें से ६—६ ग्राम की मात्रा छाछ के साथ दिया करें। ईश्वरानुग्रह से शीघ्र ही आराम हो जायेगा।

२२३-अनुभूत पुड़िया

यदि आमाशय की दुर्बलता के कारण दस्त आते हों तो निम्नलिखित चूर्ण बनाकर प्रयोग में लावें। इससे पानी की तरह बहते हुए दस्त एक ही दिन में बन्द हो जाते हैं। भूख पैदा करने और दस्तों को बन्द करने के लिए अत्यधिक लाभप्रद है। योग यह है।

विधि—अनार दाना १० ग्राम और चीनी २० ग्राम। दोनों को बारीक पीसलें। बस औषधि तैयार है। शीशी में डाल रखें। आवश्यकता पड़ने पर इसमें से चार चार ग्राम की मात्रा दिन में तीन बार दें। यदि जमालगोटा के लेने से दस्त लगे हों तो यही औषधि बताशे में रखकर दें। एक दो बार के देने से दस्त बन्द हो ज'येंगे। औषधि देने के अनन्तर थोडासा मीठा मिलाकर दही या छाछ पिलावें। दस्त आने उसी समय बन्द हो जायेंगे। अनेक वार की परीक्षित औषधि है।

२२४-कफजनित अतिसार

कफजनित दस्तों के लिए यह योग, बड़ा प्रभावोत्पादक सिद्ध होता है। एक दो मात्राओं के लेने से उसी समय आराम हो जाता है। अनुभव के लिए परीक्षण करें और प्रकृति का वैचित्र्य देखें।

विधि—पान में खाने का चूना और अफीम दोनों को समान मात्रा में लेकर मूंग के दाने के बराबर, गोलियां बनाकर शीशी में रख छोड़ें। आव-

श्यकता पड़ने पर एक गोली प्रातःकाल और एक गोलो सायंकाल पानी के साथ दें।

२२५-आंतों का अफारा

आंतों का अफारा भी एक बड़ा भयंकर रोग है। इसमें रोगी का पेट फूलकर सख्त हो जाता है। सांस भी कुछ कष्ट से आने लगता है। उठने बैठने और सोने से भी कष्ट होता है। नीचे एक ऐसा योग लिखा जा रहा है जिसके सेवन से रोग तत्काल चला जाता है।

विधि—मस्तगी और काला जीरा दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक करके शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय दो से चार रत्ती तक की मात्रा मुख में रखकर इसका रस चूसते रहें। एक दो बार के प्रयोग से अफारे में आराम हो जायगा।

२२६-नाभि टलना

इसे नाफ टलने के नाम से पुकारा जाता है। यह भी खाट में सुला देने वाला रोग है और नाड़ियों के मलने मलाने से कठिनाई से दूर होता है। इस अशुभ रोग को दूर करने के लिये एक अनुभूत और सन्यासी योग प्रस्तुत कर रहा हूं। यह अपने गुणों में सर्वथा अद्वितीय है।

विधि—छोटी दूधी को छाया में सुखा करके बारीक पीसलें। इसके बराबर पुराना गुड़ मिलाकर के जंगली बेर के समान गोलियां बनालें। छाया में सुखाकर सावधानी से रख छोड़ें। आवश्यकता पड़ने पर प्रातः समय दो गोलियां बासी पानी के साथ दिया करें। तीन चार दिनों में रोग बिल्कुल चला जायगा। भविष्य में कभी इसका डर न रहेगा। सब प्रकार की गर्म और खट्टी चीजों से परहेज करना आवश्यक है। यदि इसका शीघ्र उपचार न किया जाये तो अतिसार, रक्त प्रवाहिका, ज्वर और कब्ज आदि रोग हो जाते है।

संग्रहणी

यह भी अतिसार रोग का एक विशेष भेद है। इससे आमाशय और अन्तड़ियों की शक्ति बहुत क्षीण हो जाती है। यह रोग प्रायः करके भारतवर्ष में अधिकतर होता है। यह रोग पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों और बच्चों को अधिक हुआ करता है। इसका लक्षण यह है कि खाने पीने के बाद तुरन्त मल त्याग होकर खाया हुआ आहार अधपचा सा निकल जाता है। यह बात प्रचलित है कि यह रोग जीवन भर रोगी का पीछा नहीं छोड़ता। परन्तु ईश्वर पर विश्वास रखते हुए निराश नहीं होना चाहिये। उपचार प्रारम्भ करें अवश्य लाभ होगा। इसी विशेष रोग के लिये नीचे कुछेक अनुभूत और सफल योग प्रस्तुत कर रहा हूं। अनुभव में लाकर लाभ उठायें।

२२७–संग्रहणी का सन्यासी योग

यह योग एक संन्यासी जी के अन्तरतम से निकला है और एक घनिष्ट मित्र की अनुकम्पा से हमें प्राप्त हुआ है। वही योग आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। बड़ा सरल और सफल योग है।

विधि—बकायन के ताजा फल आवश्यकतानुसार लें। इनको खट्टी छाछ में भिगोकर किसी सुरक्षित स्थान पर रखें। जब उपर्युक्त फल बिलकुल गल जावे तब अच्छी तरह मलकर और गुठलियां निकाल करके छाया में सुखालें। पूरी तरह सूख जाने पर भली भांति पीसकर चूर्ण सा तैयार करलें और किसी शीशी आदि में डाल रखें। आवश्यकता पड़ने पर काम में लावें। प्रतिदिन प्रातः समय ६ ग्राम चूर्ण १२ ग्राम मक्खन में मिलाकर दिया करें। आठ दस दिनों में पूरा आराम हो जायगा। बड़ा सरल और अचूक योग है।

२२८–कोड़ी से हीरे

यह योग भी अक्सीर जैसा प्रभाव रखता है, परन्तु है बिलकुल साधारण सी वस्तु। सृष्टिकर्त्ता ने इसमें इतने गुण भर रखे हैं कि उनका ठीक अनुमान केवल वे लोग ही लगा सकते हैं जो कि इसे अनुभव में ला चुके हैं। यह पहिले लिखा जा चुका है कि विश्वास में ऐसी शक्ति है जिससे बड़े भयकर रोग साधारण और तुच्छ सी औषधि से बिलकुल नष्ट हो जाते हैं। परन्तु विश्वास भी पूर्ण और अटल होना चाहिये।

विधि—आवश्यकतानुसार कौड़ियां लें। एक मिट्टी के कूजे में बन्द करके अच्छी प्रकार कपरोटी करलें। आग में रखकर उनकी भस्म बनालें। ठंडा होने पर निकाल लें। यदि कुछ कमी रह जाये तो एक आग और दें। बिलकुल नर्म मलाई सदृश भस्म बन जायेगी। अब इसके बराबर सैंधा नमक मिलाकर खूब बारीक खरल करके शीशी में डाल रखें। जरूरत पड़ने पर प्रतिदिन प्रातःकाल इस औषधि में से १ ग्राम की मात्रा थोड़े से मधु में मिलाकर चटाया करें। अनुभूत और हितकर योग है।

अपथ्य—सर्व प्रकार की वातप्रधान, देर में पचने वाली वस्तुयें, लाल मिर्च, शक्कर, गुड़ और तैल की बनी चीजें बिलकुल न खाई जायें।

आहार—नर्म और सुपाच्य अन्न जैसे मूंग, चावल की खिचड़ी दही के साथ और दूध डबलरोटी आदि दें। परन्तु मीठा कम मिला हो।

कोष्ठबद्धता

यह एक प्रसिद्ध रोग है। हर छोटा बड़ा इसे भली भांति जानता है। मलत्याग के समय अधिक विलम्ब लगता है। कठिनाई से सूखा सा मल निकलता है। कई बार साथ में खून भी आया करता है। चित्त सदा मलीन रहता है। इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हो जाती है। स्वभाव चिड़चिड़ा सा हो जाता है। सिर दर्द की पीड़ा हर समय रहती है। दिल धड़कता है और शरीर का रंग पीला पड़ जाता है। यदि शीघ्र इसका उपचार न किया जाय तो निम्न रोग हो जाते हैं। यथा अतिसार, प्रवाहिका, विशूचिका, संग्रहणी, गठिया, सन्धिवात, कन्ठमाला, श्वासरोग, सिल, अर्द्धांग, अर्दित, स्मृतिभ्रंश, उन्माद, मिरगी आदि रोग हो जाते हैं। इसी कारण से प्राचीन आचार्यों ने कोष्ठबद्धता को सब रोगों की जननी बतलाया है। इसके लिये नीचे कुछेक अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

२२९—अजवायन का चमत्कार

कोष्ठबद्धता के लिए निम्नोक्त योग बड़ा लाभप्रद और अचूक है। बनाकर अनुभव में लावें।

विधि—आवश्यकतानुसार अजवायन कूटकर इसके चावल निकाल लें। तत्पश्चात तीन दिनों तक आक के दूध में तर रखें। ३ दिनों के बाद छाया के सुखालें। फिर दो दिनों तक स्नुही के दूध में तर करें और फिर छाया में सुखाकर के शीशी में डाल लें। आवश्यकता पड़ने पर दस से बीस तक दाने रात को सोते समय थोड़े गर्म पानी के साथ दिया करें। दूसरे दिन प्रातः समय पाखाना खुलकर होगा। चित्त प्रसन्न और प्रफुल्लित हो जायगा।

२१०—कब्जनाशक पुड़िया

इसके सेवन से स्थायी कब्ज भी दूर हो जाता है। इसकी एक मात्रा खाने से प्रातः समय चित्त प्रफुल्लित हो जाता है और पाखाना खुलकर होता है। सिर दर्द, शारीरिक थकावट और चित्त मलीनता आदि सब दूर हो जाते है। बड़ा ही अनुपम और सरल योग है।

विधि—जलापा की जड़ आवश्यकतानुसार लेकर बारीक करलें इसके बराबर खांड मिलाकर सुरक्षित रखें। जरूरत पड़ने पर सोते समय एक ग्राम की मात्रा गर्म दूध के साथ दिया करें।

२३१—सरलोपचार

यह साधारण सी औषधि भी ईश्वर कृपा से गुणों में भरपूर है। मैं प्रायः लोगों को यही बतलाया करता हूं। सभी ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। योग यह है।

विधि—काबली हरड़ की छाल आवश्यकतानुसार पीसकर रख छोड़ें। रात को सोते समय ५ से १० ग्राम तक गर्म दूध या गर्म पानी के साथ दिया करें। प्रातः समय खुलकर मलत्याग होगा। अनुभूत और परीक्षित योग है।

२३२—मृदुविरेचन

कोष्टबद्धता के लिए बड़ा लाभप्रद और सफल योग है। इसके लेने से किसी प्रकार की घबराहट वा व्यग्रता आदि बिल्कुल नहीं होती है। यथा नाम तथा गुण की लोकोक्ति इसके सम्बन्ध में चरितार्थ होती है।

विधि—मस्तगी ३ ग्राम और खांड ६ ग्राम। दोनों को बारीक करके एक पुड़िया बनालें। यह एक मात्रा है। रात को दूध या गर्म पानी के साथ दें। कोष्ठबद्धता दूर हो जायगी। यदि तीन चार मात्रायें निरन्तर ली जायें तो सदा के लिए इस रोग से छुटकारा मिल जाता हैं। हितकर और अनुभूत औषधि है।

२३३—अकसीरी विरेचन

यह किसी प्रकार की घबराहट पैदा नहीं करता और मल को पूरी तरह निकाल फेंकता है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक के लिये समान रूप से लाभप्रद है और किसी प्रकार की हानि नहीं करती।

विधि—जुलाबा छः ग्राम को बारीक पीस करके ६ ग्राम खांड मिला करके प्रातः समय रोगी को ठण्डे पानी के साथ फका दें। परन्तु पहले एक

दो दिन नर्म आहार खिलायें। तदुपरांत विरेचक औषधि दें। यदि किसी का आमाशय अधिक सख्त हो तो दस ग्राम भी दे सकते हैं। बड़ा सरल योग है। किसी प्रकार का कष्ट नहीं देता। बच्चे की आयु और शक्ति के अनुसार दे सकते हैं। जब प्यास लगे तो ठण्डा पानी पिलायें। अन्दर से सारा मल निकलकर चित्त प्रफुल्लित हो जायगा।

२३४—सन्यासी चुटकला

यह विरेचन भी अत्युत्तम है। बड़े अच्छे २ विरेचनों से भी बढ़ चढ़ कर प्रभाव दिखाता है। देखने में तुच्छ और साधारण सा है परन्तु इसके गुण बहुत बड़े हैं। विशेषता यह है कि एक ही बार का बना हुआ बहुत समय तक काम दे सकता है और न कुछ पैसे खर्च करवाता है। अनुभूत योग है।

विधि—आवश्यकतानुसार गेहूं का आटा लेकर कपड़े में से छानलें। किसी चीनी की प्याली में डालकर इसमें स्नुही का दूध, (जो कि चौड़े पत्ते वाली का हो) इतना डालें कि आटा गोली बनाने के योग्य हो जावे। दो दो रत्ती की गोलियां बनालें। बस औषधि तैयार है। सूख जाने पर शीशी में रखें। जरूरत के समय दो से चार तक गोलियां गर्म दूध के साथ दें। थोड़ी देर में दस्त लगेंगे। सारा मल निकलकर चित्त की बेचैनी दूर हो जायगी।

यकृत रोग

मानव शरीर यन्त्र में यकृत एक ऐसा अवयव है जहां रुधिर उत्पन्न होता है। इसी लिये मानव का जीवन बहुत अंश तक इस पर आश्रित है। वृक्क और प्लीहा आदि इसी के आधीन हैं। इसी लिये यदि यकृत में कोई विकार आ जाता है तो शरीर में अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं। यकृत के ठीक रहने पर ही स्वास्थ्य निर्भर है। अतः यकृत का पूरा २ ध्यान रखना हमारे लिये परमावश्यक है।

नीचे इसके सम्बन्ध में कुछ योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। आप परीक्षण करें, अवश्य लाभप्रद सिद्ध होंगे। मैं पुनः कहूंगा कि यकृत रोगों के उपचार में बड़ी सावधानी से काम लें। जहां तक हो सके उपचार शीघ्र किया जाय।

२३५—यकृत दुर्बलता

यकृत के सभी दोष इसके सेवन से दूर हो जाते हैं। शरीर में शुद्ध स्वच्छ रुधिर पैदा होने लगता है। अनुभूत और अचूक योग है।

विधि—बालछड़ और नागरमोथा दोनों को समान मात्रा में लें। बारीक पीसकर शीशी में डाललें। इसकी प्रातः, दोपहर और सायकाल १-१ ग्राम की मात्रा ठंडे पानी के साथ दिया करें। कुछ दिनों के सेवन से पूर्ण आराम हो जायगा।

२३६—द्वितीय योग

यह योग भी बड़ा सरल और सफल है। परन्तु कुछ लम्बा अवश्य है। कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता। बीस दिनों के निरन्तर सेवन से वर्षों का रोग जड़ से मिट जाता है।

विधि—५० ग्राम सावत चने पकालें। स्वाद के अनुसार थोड़ा सा नमक मिला करके प्रति दिन प्रातःकाल खिलाया करें। मिर्च बिलकुल न हो। पन्द्रह दिवस तक तो इसी प्रकार खिलाते रहें। पिछले पांच दिनों में थोड़े से घी में भूनकर दिया करें। बीस दिनों के सेवन के उपरान्त पुराने से पुराना रोग भी न रहेगा। अनुपम और अनुभूत योग है।

२३७—विचित्र विधि

इसके एक सप्ताह के सेवन से निश्चय ही रोग का नाश हो जाता है और पूरा आराम हो जाता है। परीक्षित और सुगम योग है।

विधि—लोहे का एक साफ टुकड़ा लें जिसका वजन ६० ग्राम हो। इसे आग में तपाकर लाल करें। एक लोहे के बर्तन में २५० ग्राम पानी डालकर लाल किये हुए टुकड़े को इसमें छोड़ दें। लोहे के किसी दूसरे बर्तन से ढक दें। जब पानी ठंडा हो जाये तब २०० ग्राम गाय की छाछ मिलाकर तथा थोडासा मीठा मिला करके रोगी को प्रातः समय निराहार मुख दिया करें, ईश्वर कृपा से आठ दस दिनों में रोग समूल नष्ट हो जायगा।

२३८—यकृत शोथ

सर्व प्रकार के यकृत शोथ के लिये यह औषधि अत्यधिक लाभप्रद है। इसके सेवन से यकृत के सुद्दे भी दूर हो जाते हैं। अत्यन्त गुणकारक औषधि है। बनाकर अनुभव में लावें।

विधि—मुलहठी और नौशादर दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक करके शीशी मे डालें। आवश्यकता पड़ने पर दिन में तीन बार एक एक ग्राम औषधि ठंडे पानी के साथ दिया करें। शीघ्र लाभ होगा।

२३९—यकृत शोथ की अचूक दवा

यकृत शोथ, यकृत दुर्बलता और यकृत पीड़ा आदि रोगों के लिये यह अत्यन्त लाभप्रद है। तैयार करके जन साधारण का हित सम्पादन करें। सतुत्य योग यह है।

विधि—अफसनतीन ७ ग्राम और नौशादर ४ रत्ती को २५० ग्राम पानी में औटावें। जब आधा पानी जल चुके तब उतार कर कपड़े से छान ठंडा करके रोगी को पिलायें। यकृत विकार से जो ज्वर बराबर आता हो या यकृत शोथ या यकृत पीड़ा हो उनके लिये बड़ा ही लाभप्रद है। थोड़े दिन के सेवन से पूर्ण आराम हो जायगा।

अपथ्य—गर्म, खट्टी, तेल से तली हुई, देर से पचने वाली वस्तुयें तथा चाय, अण्डा, मद्य आदि वस्तुओ से परहेज करें।

भोजन—सुपाच्य वस्तुएं, साधारण शाक सब्जी यथा कद्दू, खुरफा, पालक और गेहूं का दलिया आदि देते रहें।

प्लीहा रोग

यह बड़ा अशुभ रोग है। जिस मनुष्य के पीछे पड़ जाता है उसको खाने पीने, चलने-फिरने और बैठने उठने आदि कार्य करने में असमर्थ और अयोग्य बना देता है। प्लीहा एक छोटा सा अवयव है। यह बांई ओर की पसलियों के नीचे स्थित है। यह पित्त का प्रधान स्थान है। इसका लाभ यह है कि यकृत से पित्त को खेंचकर आमाशय के मुंह पर थोड़ा २ टपकाता रहता है और इससे हमें भूख लगती है। प्राचीन विशेषज्ञों का मत है कि प्लीहा जितनी छोटी होगी मनुष्य उतना ही मोटा होगा। यदि प्लीहा बड़ी होगी तो मनुष्य उतना ही दुर्बल और कृश होगा। कुछेक अर्वाचीन डाक्टरों का मत है कि यदि प्लीहा को मानव शरीर से निकाल दिया जाय तो मानव मरता नहीं है। परन्तु यह दोष अवश्य आ जाता है कि खाने पीने में असन्तोष बढ़ जाता है। ऐसे मनुष्य को खाने से तृप्ति होती ही नही। उन का यह मत कि प्लीहा का कोई लाभ नहीं है, सर्वथा निराधार है।

नीचे प्लीहा सम्बन्धी रोगों के लिए कुछेक अनुभूत और सरल योग प्रस्तुत किये जा रहे है। आप बनाकर लाभ उठावें।

२४० प्लीहा शोथ

यह रोग प्राय: मलेरिया ज्वर आने के उपरान्त या ज्वर की दशा में ठंडा पानी अधिक पीने से हो जाया करता है। या कफ प्रधान और पित्तप्रधान वस्तुओं के अधिक खाने से भी यह रोग हो जाता है। नीचे एक बड़ा लाभप्रद योग प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके कुछ दिनों के सेवन से रोग जड से मिट जाता है।

विधि—१५ ग्राम सज्जी को थूहर के दूध में खरल करके टिकिया बना कर एक मिट्टी के कूजा में टिकिया रखकर कपरोटी करके ५ किलो जगली उपलों की आग दें। ठंडा होने पर टिकिया निकाललें और बारीक करके शीशी में डाल रखें। आवश्यकता पड़ने पर प्रतिदिन प्रात:काल ३ रत्ती औषधि थोड़ा सा मधु मिलाकर दिया करें। दो तीन सप्ताह के सेवन से पुराने से पुराना रोग चला जायेगा। अनेकों बार की अनुभूत औषधि है।

२४१–प्लीहा का निश्चितोपचार

यह योग भी अपने गुणों में अनुपम है। वर्षों का रोग दिनों में मिटकर जीवन भर के लिए इस रोग से मुक्ति मिल जाती है। बड़े से बड़े प्लीहा को एक सप्ताह के सेवन से प्राकृत दशा में ला देना इसका साधारण सा चमत्कार है।

विधि—थूहर (स्नुही) की आध किलो राख को एक किलो पानी में रात भर भिगो रखें। दिन में एक दो बार हिला भी दिया करें। प्रातःकाल इस राख वाले पानी को किसी कपड़े में से छानकर किसी कड़ाही में डालदें और नीचे आग जलाकर पकायें। जब सारा पानी जलकर केवल क्षार शेष रह जावे, तब इसके आधे के बराबर लाल फिटकडी मिलाकर खूब बारीक पीसलें। सावधानी से शीशी में डाल लें। बस चमत्कृत औषधि तैयार है। आवश्यकता पड़ने पर पहिले रोगी को थोड़े से चने चबाकर थूकने का आदेश करें। तदुपरान्त इस औषधि में से ४ रत्ती की मात्रा देकर ऊपर से थोड़ा सा अजवायन का पानी दिया करें। कुछ दिन सेवन करने से पुराने से पुरानी तिल्ली के रोग का निशान न रहेगा।

२४२–बनौषधि का चमत्कार

विधि—नकछींकनी जो कि साधारण पंसारियों की दुकानों पर मिल जाती है, आवश्यकतानुसार लें। खूब बारीक पीसकर कपड़े में से छानकर सावधानी से रखें। आवश्यकता के समय चार रत्ती की मात्रा ५० ग्राम पानी के साथ प्रातःकाल खिलाया करें। यदि मल का रंग लाल हो तो डरें नहीं। एक दो सप्ताह के सेवन से रोग बिलकुल जाता रहेगा। बड़ा सरल और अनुभूत योग है।

२४३–प्लीहा का प्राकृतोपचार

यह योग बड़ा लाभदायक और अनुभूत है। यह अनेकों रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर चुका है। पांच छः दिनों तक इसके निरन्तर सेवन से बड़ी से बड़ी तिल्ली भी कट जाती है।

विधि—रेह की मिट्टी १५ ग्राम और नौशादर दो ग्राम रात को २५० ग्राम पानी में भिगो दें। परन्तु बर्तन शीशे या चीनी का हो। प्रातः समय इसके निथरे हुए पानी को पिलायें। पिलाने से पहले जरा हिला लिया करें। शक्ति और आयु के अनुसार दवा की मात्रा न्यूनाधिक की जा सकती है। अत्युत्तम और अहानिकर दवा है।

२४४—अन्य योग

विधि—आवश्यकतानुसार अजवायन लें। तीन बार घृतकुमारी के रस में तर करके इसे सुखालें। फिर बारीक पीसकर रखें। जरूरत पड़ने पर ३ ग्राम की मात्रा पानी के साथ खिलाया करें। इस आसान सी दवा के सेवन से बहुत थोड़े समय में इस रोग से छुटकारा मिल जायगा।

अपथ्य—चिकनी और भारी वस्तुएं, आलू, अर्बी, उड़द की दाल, कच्चा दूध और मक्खन आदि से परहेज करें।

आहार—पूदीना की चटनी, गेहूं की नर्म सी चपाती, मूली का अचार तथा सिरका आदि दें। परन्तु भूख से बहुत कम खिलाया करें। खाने पीने के सयंम तिल्ली को दबा लिया करें।

पाण्डु रोग

इस भयानक रोग के कारण पहिले नाखून और आंखें पीली हो जाती हैं। फिर धीरे २ सारा शरीर ही पीला हो जाता है। मल तथा मूत्र का रंग भी पीला हो जाता है। भोजन पचता नहीं है। यह रोग प्रायः दो कारणों से हुआ करता है। प्रथम तो यह कि पित्त अधिक होकर और खून में मिलकर सारे शरीर का रंग पीला बना देता है। दूसरा यह कि पित्त की नालियों में सुद्दा पड़ जाने के कारण से यह रोग उत्पन्न हो जाता है। कभी कभी अधिक गर्म वस्तुओं के सेवन से या तेज धूप में फिरने से भी यह रोग हो जाया करता है। नीचे इसके लिये कुछेक अनुभूत एवं परीक्षित योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। परीक्षा करने पर अवश्य लाभप्रद सिद्ध होंगे।

२४५—पाण्डुहर गुटी

अत्यन्त सरल और लाभप्रद योग है। अनेकों बार अनुभव में आ चुका है। हर बार सफल रहा है। इसके सेवन से यथेष्ट लाभ होता है।

विधि—आवश्यकतानुसार भुने हुए और बिना छिलके के चने लें। तीन दिन तक इसपन्द के दूध में खरल करके जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर खुश्क करलें। आवश्यकता के समय निराहार मुख एक गोली ठण्डे पानी के साथ दिया करें। यह एक साधारण सी वस्तु है, परन्तु गुणों से भरपूर है।

२४६—पुड़िया का चमत्कार

यह योग भी बड़ा लाभप्रद है और अनेक बार अनुभव में आ चुका है। हर बार इसका प्रभाव अचूक रहा है।

विधि—सफेद फिटकड़ी आवश्यकतानुसार लें। लोहे के तवे पर रखकर नीचे आग जलायें। जब अच्छी तरह भुन जाये तब बारीक पीस करके शीशी में डाल लें। नित्य प्रातःकाल एक से तीन ग्राम की पुड़िया १२५ ग्राम दही में मिलाकर दिया करें। अनेकों बार का अनुभूत योग है। दिन में और भी दही पिलाते रहें। यदि दही न मिल सके तो छाछ से ही काम चलावें। रोग मिट जायेगा।

२४७–शंख जीरक भस्म

यह पाण्डु रोग का अन्तिम उपचार है। अपने गुणों में अद्वितीय है और सदा अचूक रहता है। आप भी अनुभव द्वारा परीक्षण करें।

विधि—१५ ग्राम सख जीरक (संग-जराहत) लेकर सिरस के पत्तों के रस में रखकर कपरोटी करें। तीन चार किलो उपलों की आग दें। ठण्डा होने पर निकालकर वारीक पीसकर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय निम्नलिखित विधि से सेवन करायें।

रात के समय आध किलो गरम दूध एक कोरे कूजे में डालकर और किसी रूमाल आदि से मुख बन्द करके रात भर हवा में पड़ा रहने दें। प्रातः समय एक से दो ग्राम तक औषधि इस दूध के साथ निराहर मुख दिया करें।। एक ही सप्ताहमें गह रोग मिट जायगा।

२४८–सरलोपचार

यह औषधि भी पाण्डु रोग के लिए गुणकारी है। कई वार तो यह बड़े बड़े योगों से अधिक प्रभाव दिखाती है। विलकुल आसान और तुच्छ सी वस्तु है। अनुभव करके लाभ उठावें।

विधि—आवश्यकतानुसार सुहागा लेकर वारीक पीस रखें। जरूरत पड़ने पर एक ग्राम औषधि प्रातः मक्खन में रखकर दिया करें।

२४९–पाण्डुहारी नस्य

यह योग भी पाण्डु रोग को बहुत शीघ्र लाभ करता है। योग बड़ा सरल है।

विधि—आवश्यकतानुसार कंवलगट्टा लेकर छिलके सहित खूब बारीक पीसकर रखें। प्रातः समय एक से दो रत्ती तक नस्य के रूप में सुंघाया करें। तीन चार दिनों में रोग में लाभ होना शुरू हो जायेगा।

अपथ्य—तेल और चिकनाई की तथा वात प्रधान वस्तुओं से एवं लहसुन, लालमिर्च और पलाण्डु आदि से परहेज करें।

आहार—जहां तक हो सके नर्म और सुपाच्य वस्तुएं खिलाई जायें।

मूत्राशय तथा वृक्क रोग

वृक्क पीड़ा

यह रोग अधिक सर्दी या अधिक गर्मी से हुआ करता है। यदि ठंडी वस्तुओं को प्रचुर मात्रा में सेवन किया जाय या गर्म वस्तुओं का सेवन भी अधिक किया जाय तो यह रोग दोनों अवस्थाओं में हो जाता है। इस रोग के होने पर गर्म या सर्द वस्तुओं के सेवन से वृक्क में खिचावट पैदा होकर बड़ा दर्द होता है। वृक्क के स्थान से पीड़ा उठकर टीस पीठ की ओर या अण्ड-कोष की ओर निकलनी शुरू हो जाती है। मूत्र त्याग की शंका बार बार होती है। परन्तु मूत्र एक एक बूंद बड़े कष्ट से उतरता है। नीचे इसके लिये कुछेक अनुभूत योग प्रस्तुत कर रहा हूं।

२५०—वृक्क पीड़ा संजीवनी

वृक्क पीड़ा, पत्थरी, मूत्रबन्ध आदि सब रोगों के लिए यह अचूक औषधि है। एक दो मात्राओं से लाभ हो जाता हैं।

विधि—दूब (घास) की हरी पत्तियां ५० ग्राम और कलमीशोरा १० ग्राम। दोनों को एक किलो पानी डालकर मिट्टी के बर्तन में यहां तक पकायें कि आधा शेष रह जाये। किन्तु ध्यान रहे कि बर्तन का मुख ऊपर से बन्द हो। तदुपरान्त उपर्युक्त पानी को अच्छी प्रकार मलकर कपड़े से छानकर पुनः कलई दार देगची में डालकर यहां तक पकायें कि सारा पानी जलकर नीचे नमक सा रह जावे। तब आग पर से उतारकर नमक को बारीक पीसकर शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय दो रत्ती औषधि सौंफ के ६० ग्राम अर्क के साथ दिया करें। तीन चार दिनों में वृक्क तथा मूत्राशय के रोगों में प्रायः आराम होने लगता है। यदि कब्ज हो तो पहिले कब्जनाशक औषधि दें।

२५१—नीली पुड़िया

विधि—देशी नील को बारीक पीसकर दोनों सयम एक एक रत्ती की मात्रा पानी के साथ दें। अवश्य आराम होगा।

२५२—सरल योग

विधि—भुनी हुई अलसी और खांड बराबर मात्रा में लेकर बारीक पीसलें। १० ग्राम की मात्रा गर्म चाय के साथ दें। यह भी बड़ा लाभप्रद योग है।

२५३—वृक्क, मूत्राशय की रेत

विधि—अरहर के पत्ते ६ ग्राम और संगे यहूद चार रत्ती। दोनों को पानी में बारीक पीसकर ठंडाई की तरह पिलाया करें। बड़ा लाभप्रद और अनुभूत योग है।

२५४—वृक्काश्मरी

विधि—कलमी शोरा ६ ग्राम, यवक्षार ६ ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर समान मात्रा में खांड मिलालें। ठंडे पानी के साथ तीन ग्राम की मात्रा दिया करें। वृक्क अश्मरी के लिये बड़ी प्रभावोत्पादक औषधि है।

२५५—द्वितीय योग

विधि—गंधक आंवलासार और कलमी शोरा दोनों को समान मात्रा में लें। अलग अलग बारीक पीसलें। तत्पश्चात आधी गन्धक नीचे रखकर कलमी शोरा डालें। शेष गन्धक को ऊपर डालकर बिलकुल हल्की सी आग पर रख कर जला दें। फिर बारीक पीसकर सावधानी से शीशी में रखें। इसमें से तीन ग्राम की मात्रा मूली के रस या ताजा पानी के साथ दें।

२५६—मूत्राशय की अश्मरी

विधि—रेवंद चीनी आवश्यकतानुसार लेकर बारीक पीसलें। दो से चार ग्राम तक की मात्रा पानी के साथ दिया करें। अनेक बार की अनुभूत औषधि है।

२५७—मधुमेह

विधि—ताजा गिलोय छाया में सुखालें। कूट छानकर बराबर सोंठ मिलाकर दोनों समय ताजा पानी के साथ दिया करें। खट्टी, बात प्रधान और तेल की चीजों तथा हर प्रकार की मीठी चीज, चावल, आलू, केला आदि से परहेज करें।

२५८—द्वितीय योग

विधि—काले तिल १०० ग्राम और अजवायन ५० ग्राम दोनों को बारीक करके चूर्ण बनालें। २५ दिन तक प्रातः समय ६—६ ग्राम दें। आशातीत आराम होगा।

२५९-तृतीय योग

विधि—१५ ग्राम बिनौलों को कूट करके एक किलो पानी में औटायें। जब लगभग २५० ग्राम जल शेष रहे तब मल छानकर २५ ग्राम जल पिला दें। नित्य ऐसी तीन चार मात्रायें कुछ दिन देने से पूर्ण आराम हो जायगा।

२६०-मूत्रावरोध

विधि—शंखाहूली बूटी १२ ग्राम प्रतिदिन प्रातः समय घोटकर थोड़ा मीठा मिलाकर मल छानकर पिलाया करें। एक सप्ताह में पूर्ण आराम हो जायेगा।

२६१-द्वितीय योग

विधि—कलमी शोरा तीन ग्राम और राई तीन ग्राम। इनको आधा किलो पानी में औटाकर पिलायें।

२६२--तृतीय योग

विधि—गंधक का तेजाब (खाने वाला) सात बूंद को २५ ग्राम शरबत बनफशा में मिलाकर दें। उसी समय मूत्र खुलकर आयेगा।

२६३--खून का पेशाब

विधि—झडबेरी की लाख और संगअराहत दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक करके ६ ग्राम की मात्रा पानी के साथ दिया करें। कुछ ही मात्राओं में पूर्ण आराम हो जायेगा।

२६४--मूत्रावरोध

विधि—२५ ग्राम तिलों को थोड़ी सी शक्कर मिलाकर सोते समय रोगी को खिलायें। तदुपरांत पानी बिलकुल न दें। एक सप्ताह के सेवन से रोग जड़ से नष्ट हो जायगा।

२६५--द्वितीय योग

पकते समय जो चावल बर्तन के बाहिर की तरफ लग जाते हैं, आवश्यकतानुसार संचित करके छाया में सुखालें। फिर बारीक पीसकर रातको सोते समय रोगी को पानी के साथ २५ ग्राम फका दें। बहुत शीघ्र इस रोग से छुटकारा मिलेगा।

मूत्रकृछ

यह बड़ा भयानक रोग है। इसका नाम लिखते समय लेखनी थर्राती है। वे लोग भारी भूल करते हैं जो मूत्रकृछ (सूजाक) को साधारण सा रोग समझते हैं। इसके कारण व लक्षणों का विस्तार पूर्वक वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिये कुछेक सरल और अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

२६६-गुलाब का चमत्कार

विधि—गुलाब के २५ ग्राम पत्ते रात को २५० ग्राम पानी में भिगो दें। रात भर बाहिर खुले में पड़ा रहने दें। प्रातः समय मलकर छान लें। थोड़ी सी मिश्री मिलाकर पिलाया करें। २ सप्ताह के सेवन से रोग नष्ट हो जायगा।

२६७-सूजाक का चूर्ण

विधि—गोंद कतीरा और कूजा मिश्री समान मात्रा में लेकर बारीक करलें। प्रतिदिन दोनों समय ६—६ ग्राम की मात्रा ठंडे पानी के साथ दिया करें। कुछ दिनों में आराम हो जायगा।

२६८-सरल चुटकला

विधि—आवश्यकतानुसार पीली कौडियां आग में रखकर भस्म बना लें और बारीक पीसकर सावधानी से रखें। जरूरत पड़ने पर ती। ग्राम की मात्रा मक्खन के साथ दिया करें। थोड़ी देर के बाद दूध की लस्सी कुछ मीठा मिलाकर भर पेट पिलायें। पुराने से पुराना रोग चला जायगा।

२६९-नाग भस्म

यह मूत्रकृछ के लिये अचूक दवा है।

विधि—शुद्ध सीसा १५ ग्राम को कडाही में डालकर और आग पर रखकर कंघी बूटी की ताजा लकडी से हिलाते रहें। थोड़ी देर के पश्चात नाग भस्म तैयार हो जायगी। बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। एक रत्ती की मात्रा दूध की लस्सी से दिया करें।

२७० पीली दवा

विधि—हल्दी और आंवला समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनालें। प्रतिदिन ६ ग्राम चूर्ण पानी के साथ प्रातः समय दिया करें। एक सप्ताह के अन्दर २ काफी आराम हो जायगा।

२७१-अकसीर सूजाक

विधि—सफेद राल और कलमीशोरा दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक करलें। प्रतिदिन दो चार ग्राम तक दिया करें। पीप और मूत्र की टीस आदि सब दूर हो जायेंगी। बडी ही लाभप्रद औषधि है।

२७२-मूत्रकृच्छ्र संजीवनी

यह नये और पुराने दोनों प्रकार के मूत्रकृच्छ के लिये लाभप्रद है।

विधि—लाल गेरू और सफेद फिटकडी दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक पीसलें। इसके बराबर खांड मिलाकर सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय ५—५ ग्राम की मात्रा दूध की लस्सी के साथ दिया करें। तदुपरान्त भी लस्सा पिलाया करें।

२७३-कुर्रा

इसके सेवन से पुराने से पुराना कुर्रा चला जाता है।

विधि—हरा तूतिया ५ ग्राम रात के समय बारीक करके एक किलो पानी में भिगो दिया करें। प्रात.काल पिचकारी कराया करें। ५ दिन के बाद तीन ग्राम फिटकडी २५० ग्राम पानी में घोल करके रात को हवा में रख दें। पिचकारी कराने में बाद यह पिलाया करें। एक ही सप्ताह में आशातीत आराम नजर आ जायगा।

२७४-सूजाक पिचकारी

विधि—१ रत्ती रसकपूर को १ किलो पानी में पकायें। जब लगभग ७५० ग्राम शेष रहे तब उतार लें। फिर इस थोड़े गर्म पानी से पिचकारी करायें। दूसरे पानी को बोतल में सुरक्षित रखें। इसकी ३ दिन तक निरन्तर पिचकारी करने से इस रोग के दोषों का नाश हो जायगा। सफल योग है।

नोट—मूत्र जारी करने के योग विशूचिका, वृक्क पीडा और मूत्राशय रोगों के प्रकरण में बताये जा चुके हैं।

अर्श (बवासीर)

यह बड़ा प्रचलित रोग है और बहुत थोड़े लोग इससे सुरक्षित रहते हैं। अर्शरोग तीन प्रकार का होता है भीतरी, दरम्यानी और बाहरी इनका पूरा विवरण यहां देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके लिए कुछेक अनुभूत और अचूक योग नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

२७५-अनुभूत उपचार

यह योग एक सन्यासी जी ने प्रदान किया था। योग बड़ा ही सरल और अचूक है। हर प्रकार के अर्श रोग के लिये अत्याधिक हितकर है।

विधि—पंवाड की जड़ और कण्टकारी की जड़ समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनालें। प्रतिदिन प्रातः सायं तीन तीन ग्राम की मात्रा दही के साथ दिया करें।

२७६-खूनी बवासीर

विधि—संगजराहत १५ ग्राम को भंगरा के १५० ग्राम रस में घोट कर टिकिया बनाकर भंगरे की लुगदी में रखकर भस्म तैयार करलें। बारीक पीसकर बराबर वजन की खांड मिला करके दो से तीन ग्राम तक प्रातः समय गाय के दूध के साथ दें। खूनी बवासीर के लिए उत्तम दवा है।

२७७-द्वितीय योग

विधि—पीली राल खूब बारीक खरलकर रखें। प्रतिदिन दो दो ग्राम प्रातः सायं मक्खन के साथ सेवन कराया करें। खूनी बवासीर के लिये लाभदायक है।

२७८-अर्शोघ्न

यह सर्व प्रकार के अर्श रोगों के लिए अत्यधिक लाभप्रद है।

विधि—आवश्यकतानुसार नागकेसर लेकर बारीक करलें इसके बराबर खांड मिलाकर प्रतिदिन छः ग्राम की मात्रा दही के साथ दिया करें। अपने गुणों में अनुपम औषधि है।

२७९-वातज अर्श

विधि—चार रत्ती भुनी हुई हींग सौंफ के अर्क के साथ दिया करें।

२८०-अर्श का अचूक उपचार

विधि—मालकंगनी और कलमी शोरा दोनों को समान मात्रा में लेकर वारीक करलें। प्रतिदिन तीन ग्राम की मात्रा ताजा पानी के साथ दिया करें। बहुत थोड़े समय में सर्व प्रकार के अर्श रोग का सर्व नाश हो जायगा।

२८१-भगन्दर

विधि—गो घृत ३० ग्राम और सफेद राल १५ ग्राम। पहिले घी को किसी कड़छी में डालकर आग पर रखें। जब खूब गर्म हो जाये तब बारीक किया हुआ रालका चूर्ण डालदें। फिर आग से उतारकर किसी कांसी की थाली में रखकर एक सौ बार पानी से धो लें। तत्पश्चात् वत्ती को खूब तर करके भगन्दरके अन्दर रखा करें। कुछ दिनों के प्रयोग से रोग जड़ से मिट जायगा। यह हर प्रकार के नासूर के लिए बड़ा गुणकारी है।

२८२-द्वितीय योग

२५ ग्राम त्रिफला को १२५ ग्राम पानी में खूब पकायें। जब ५० ग्राम शेष रहे तब मल छानकर बोतल में डाल रखें। अब इस पानी में बिल्ली की हड्डी घिसकर वत्ती तर करके भगन्दर के अन्दर रखें। भगन्दर और नासूर दोनों के लिए लाभप्रद है।

२८३-तृतीय योग

विधि—समुद्र झाग और पोस्त बराबर मात्रा में लेकर जला लें। फिर वारीक पीस करके शहद से वत्ती को तर करके ऊपर यह राख छिड़क कर भगन्दर के अन्दर रखें। नासूर और भगन्दर दोनों इसके प्रयोग से चले जाते हैं।

२८४-मस्सों का गिराना

विधि—कोडी और मनुष्य की हड्डी दोनों को जला कर बारीक कर लें। थोडे से पानी में मिलाकर मस्सों पर लेप किया करें। मस्से बहुत शीघ्र गिर जायेंगे।

२८५-हितकारी लेप

विधि—हरा माजू और लाल शक्कर दोनों को समान मात्रा में

लेकर पानी में पीसकर नित्य प्रति बवासीर के मस्सों पर लेप किया करें। मस्सों की सूजन आदि दूर होकर मुरझा जायेंगे।

२८६-सरल चुटकला

१५ ग्राम नाग को लोहे की खरल में डालकर इतना खरल करें कि सुरमे की तरह बारीक पिस जाये। अब इसमे एक सौ बार का धोया हुआ २५ ग्राम मक्खन मिलावें और अंगुली से खूब एक रस बना कर चौड़े मुंह की शीशी में रखें। दोनों समय मस्सों पर लगाया करें। पन्द्रह बीस दिनों में मस्से सूख कर स्वयं मुर्झा जायेंगे। बड़ा अनुपम और सरल उपचार है।

२८७-अन्य योग

साफ रसौत १५ ग्राम और गाय का घी ३० ग्राम। रसौत को घी में मिलाकर दोनों समय मस्सो पर लगाया करें। अत्यधिक हितकारक है।

त्वचा रोग

अब उन रोगों के विषय में लिखा जा रहा है जिनका सम्बन्ध किसी अंग विशेष से नहीं होता है अपितु सर्व व्यापी होता है—यथा फोड़ा, फुन्सी, दाद, चम्बल, उपदंश, गठिया, अर्धांग तथा ज्वर आदि।

२८८-दाद नाशक

अनेकों बार का अनुभूत योग है। दाद का रोग नष्ट हो जाता है। योग इस प्रकार है —

चौकिया सुहागा और फिटकड़ी समभाग लेकर अलग अलग भून कर मिला लें और खूब बारीक पीसकर दाद पर मला करें। इससे दाद मिट जायेगा।

२८९-द्वितीय योग

विधि—कपूर और गन्धक एक-एक ग्राम को थोड़े से मिट्टी के तेल में खरल करके मरहम सी बना लें। दाद को थोड़ा सा घिस कर ऊपर लगावें। ५-७ बार लगाने से दाद बिलकुल न रहेगा।

२९०-तृतीय योग

बड़ी हरड़ को सिरके में घिसकर लेप करने से गिनती के दिनों में दाद जड़ से नष्ट हो जायगा।

२९१-चम्बल का अनुभूत तेल

विधि—६० ग्राम सरसों के तेल में २५ ग्राम थूहर (स्नूही) का डण्डा रखकर खूब गरम करें। जब थूहर जल जाये तब जले हुए डण्डे को बाहर फेंक दें और तेल को शीशी में डाल लें। पहले चम्बल को नीम के पानी से धो लें। फुरेरी से यह तेल दोनों समय लगाया करें। चार सप्ताह में पुराना रोग भी नष्ट हो जायगा।

२९२-खुजली

विधि—२५० ग्राम खट्टी दही को किसी बर्तन में रखकर तेज धूप में रख दें। जब इसमें खमीर उत्पन्न हो चुके उस समय १२ ग्राम गन्धक बारीक करके खूब मिला लें और खुजली के स्थान पर लगाया करें।

२६३-तर फोड़े

बकरी का खुर जलाकर सरसों के तैल में मिलाकर मरहम तैयार कर लें। नित्यप्रति फोड़ों पर लगाया करें।

२६४-दम्मुल

विधि—५ ग्राम कीकर के गोंद को थोड़े से पानी में घोल करके दम्मुल पर लेप करें। ऊपर कागज चिपका दें। दूसरे दिन नीम के पानी से धोकर पुनः लगाया करें।

२६५-फुन्सियां

विधि—लौंग और कालीजीरी आवश्यकतानुसार लें। बारीक करके फुन्सियों पर लगाया करें। सर्व प्रकार की फुन्सियां मिट कर त्वचा साफ निकल आयेगी।

कतिपत मरहमों के योग

२६६-चूना सल्हर

विधि—बुझाया हुआ चूना ५ ग्राम और चर्वी बकरा २० ग्राम। दोनों को मिलाकर इतना खरल करें कि मरहम बन जाये। तव किसी शीशी में रख छोड़ें। फोड़ों पर लगाया करें।

२६७-द्वितीय योग

विधि—सिन्दूर ५ ग्राम और तिलों का तेल १० ग्राम। पहले तेल को खूब गरम करें। तदुपरांत सिन्दूर डालकर किसी तिनके से हिलाते रहें। जब रंग काला हो जावे तब उतार कर रखें। आवश्यकता के समय कपड़े का एक गोल सा टुकड़ा काटकर बीच में छोटा सा छिद्र रखकर उस पर अच्छी तरह मरहम लगाकर फोड़े पर लगाया करें। सर्व प्रकार के घावों और फोड़ों के लिये अत्यधिक लाभप्रद है। यह योग अनेकों वार अनुभव में आ चुका है।

२६८-तृतीय योग

विधि—सरसों का तेल ४० ग्राम, मोम १० ग्राम और राल ५ ग्राम। पहले तेल को किसी वर्तन में डालकर खूब गर्म करें। गर्म होने पर मोम डाल दें, थोड़ी देर के बाद राल डाल दें। नीम की ताजा लकड़ी से हि

रहें। जब गाढ़ा सा हो जाये तब उतार लें। किसी खुले मुंह की शीशी में डाल लें। सब प्रकार के फोड़ों के घाव के लिये एकमात्र औषधि है।

२९९-प्लेग

विधि--कुचले को नीम के पत्तों के पानी के साथ खरल करके लेप करें। गिलटी उसी समय द्रवित हो जायगी।

३००-बध रोग

विधि--१ ग्राम चूने को ६ ग्राम मधु में घोल करके कागज पर लगा कर बध के स्थान पर लगायें। दो तीन बार लगाने से रोग बिलकुल चला जायगा। यह एक बार के लिये है। अनुभूत दवा है।

३०१-सर्व घाव नाशक

विधि--४ कुचले लेकर २५ ग्राम सरसों के तेल में जलालें। तत्पश्चात ५ ग्राम सेलखड़ी मिलाकर खूब बारीक पीस लें। घाव को पहले नीम के पानी से साफ करके इसे लगाया करें।

३०२-नीम तैल

वैसे तो उपरोक्त योग सर्व प्रकार के घावों के लिये अत्यधिक लाभप्रद है। परन्तु यह योग भी बड़ा ही गुणकारी और लाभप्रद है।

विधि--१२५ ग्राम नीम के पत्तों को आधा किलो पानी में औटायें। जब चौथाई के लगभग शेष रहे तब कपड़े से छानकर २५ ग्राम सरसों का तेल मिलाकर आग पर रखें। जब सारा पानी जलकर केवल तेल शेष रहे उस समय उतार कर शीशी में डाललें। घावों पर लगाया करें।

३०३-चोट

विधि--१० ग्राम हल्दी, ५ ग्राम देशी साबुन को पानी से बांटकर गरम करके, थोड़ा गर्म-गर्म पीड़ा के स्थान पर बांध दें।

३०४-द्वितीय योग

विधि--१५ ग्राम खड़िया मिट्टी को रात के समय २५० ग्राम पानी में भिगोकर रखदें। प्रात समय निथार कर एक रत्ती मोमयाई के साथ दिया करें। एक सप्ताह तक देने से टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जायगी।

३०५-सन्धिवात रोग

विधि--कुचला और काली मिर्च समान मात्रा में लेकर बारीक करके

अदरक के रस में घोटकर मूंग के बराबर गोलियां बनालें। इनको सुखाकर रखें। दोनों समय १-१ गोली पानी के साथ दिया करें। कुछ दिनों में पुराने से पुराना रोग चला जायगा।

३०६-लेप

विधि—हालों के बीज बारीक पीसकर पीड़ा स्थान पर लेप करें। कुछ बार के लेप से आराम हो जायगा।

३०७-घुटने की पीड़ा

विधि—शुद्ध गूगल १० ग्राम और गुड़ २० ग्राम। दोनों को खूब बारीक करके जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। प्रतिदिन दोनों समय एक-एक गोली थोड़े से घी के साथ दिया करें। घुटने की पीड़ा के अतिरिक्त सन्धिवात, गठिया और गृध्रसी आदि रोगों के लिये भी अत्यधिक लाभप्रद है।

३०८-गृध्रसी

विधि—कद्दू को बारीक पीस करके ३-३ ग्राम की ८ पुडियां बनायें। नित्य प्रति एक पुडिया बकरी के दूध के साथ थोडी सी खांड मिलाकर प्रातः-काल दिया करें। गर्मी अनुभव होने पर पुनः दूध पिलाया करें। एक ही सप्ताह में रोग समूल नष्ट हो जायगा।

३०९-जोड़ों का दर्द

सहस्रों अनुभूत योगों में यह योग ऐडी से चोटी तक सब सन्धि पीडा रोगों के लिये एकमात्र औषधि है।

विधि—घुंघची (लाल चिरमटी) १० ग्राम को कूट करके २५० ग्राम पानी में यहां तक पकायें कि पानी चौथाई शेष रहे। तब खूब मलकर छानलें। अनावश्यक द्रव्य को फैंक दें और इस शेष पानी में २५ ग्राम तिलों का तैल डालकर पकायें। जब केवल तैल शेष रहे तब ठंडा करके शीशी में डाल लें। फुरेरी से पीड़ा स्थान पर लगाया करें।

३१०-गठिया तथा सन्धि वात रोग

विधि—तम्बाकू के ताजा पत्तों के ६० ग्राम रस को २५ ग्राम तिलों के तेल में मिलाकर पकायें। जब पानी जल जाये और केवल तेल शेष रहे तब उतारकर शीशी में भरलें। पीड़ा स्थान पर मालिश करके एरण्ड के पत्ते बांध दिया करें। पुराने से पुराना रोग एक सप्ताह में चला जायगा।

३११-कुष्ट रोग

विधि—रोहू मछली के चाने आवश्यकतानुसार लेकर खूब बारीक कर लें। प्रतिदिन थोड़ा सा पानी मिलाकर दागों पर लेप किया करें। साथ-साथ कोष्ठबद्धता नाशक औषधियों का सेवन भी करते रहें। पन्द्रह बीस दिन तक लगाने सेमें लाभ मालूम हो चला जायगा।

३१२-स्वित्र कुष्ठ हर लेप

विधि—मोर की हड्डी १२ ग्राम और भिलावा चार नग को एक मिट्टी के कूजे में डालकर कपरौटी करके भस्म बनालें। ठंडा होने पर निकाल कर किसी डिबिया में रख छोड़ें। सिरका में पीसकर लेप तैयार करके प्रतिदिन दागों पर लगाया करें। बड़ा ही सफल और सरल योग है।

३१३-स्वित्रारि गुटी

विधि—कनेर की जड़ की छाल और काली मिर्च को समान मात्रा में घोटकर चने के बराबर गोलियां बनालें। पहले रोगी को एक दो विरेचन दें। फिर दोनों समय १-१ गोली दूध के साथ दिया करें।

३१४-रक्त शोधक गुटी

विधि—शुद्ध आंवलासार गंधक को बारीक करके मधु के साथ २-२ रत्ती की गोलियां बनागें। प्रातः सायं १—१ गोली पानी से दिया करें। यह साधारण औषधि रुधिर को शोधने में अनुपम है।

३१५-द्वितीय योग

आवश्यकतानुसार साबत रीठा लेकर उनको जलाकर कोयला बना लें और बारीक करके शीशी में रखें। नित्य प्रति प्रातःकाल एक ग्राम की मात्रा में मक्खन में रखकर दिया करें। रुधिर को साफ करने में अचूक औषधि है। नमक से परहेज करें।

३१६-स्नायु रोग

विधि—जंगली उपलों का जाला १२ ग्राम और सांप की केंचुली एक ग्राम। दोनों को बारीक करके ४८ ग्राम गुड़ में भलीभांति घोट करके चार गोलियां बना लें। नित्य प्रति १ गोली प्रातःकाल सूर्य की ओर मुख करके पानी के साथ लें। इसी प्रकार चार दिन तक करें। बड़े से बड़ा नहरुवा

बाहर निकल जायेगा। आयु के अनुसार मात्रा कम की जा सकती है। गुड़, रोटी और छाछ का आहार दें।

३१७-द्वितीय योग

विधि—५ ग्राम नौशादरको बारीक पीस करके ३ पुड़ियां तैयार करलें। नित्य प्रति प्रातःकाल एक पुड़िया २५० ग्राम गौ दुग्ध के साथ मिलाकर तुरन्त पिलाया करें। देर न हो। अन्यथा इसका प्रभाव नष्ट हो जायगा। तीन दिन तक यही क्रिया करें। अवश्य आराम होगा।

उपदंश

यह भी बड़ा भयंकर रोग है। ईश्वर से प्रार्थना करें कि शत्रु भी इस रोग में ग्रस्त न हो। यह दो प्रकार का होता है—एक पैतृक और दूसरा संसर्गज। पैतृक रोग वह होता है जो कि मनुष्य को जन्म से माता पिता के कारण मिला हो और संसर्गज वह है जो कि मनुष्य ने स्वयं अपने कुकर्मों से खरीद लिया हो। दोनों प्रकार के रोगियों के लिए नीचे कुछेक अनुभूत और सरल योग प्रस्तुत कर रहा हूं।

३१८-उपदंश का अनुभूत योग

यह योग इसके लिये बड़ा लाभप्रद है और अनेकों बार अनुभव द्वारा परीक्षित भी हो चुका है। सहस्रों गले सड़े रोगी इसके सेवन से स्वास्थ्य लाभ कर चुके हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वर्षों का रोग दिनों में नष्ट हो जाता है। सहस्रों रुपयों के उपचार इस साधारण से योग के सामने तुच्छ हैं। इसे आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

विधि—२५ ग्राम ताजा नकछींकनी को बारीक पीस करके सुरमे के समान बनालें। तत्पश्चात् एक पित्ता मैंढा का झिल्ली समेत डालकर खू. खरल करें। यहां तक कि झिल्ली भी घुल मिल जावे। अब इसकी तीन बराबर गोलियां बनालें। एक गोली प्रातः आठ बजे और दूसरी चार बजे तथा तीसरी ग्यारह बजे रात को थोड़े गर्म पानी से खिलावें। रोगी को कड़ा आदेश करदें कि दिन रात बिलकुल न सोये अन्यथा लाभ न होगा और कुछ भी खाने को न दें। यदि अधिक प्यास लगे तो थोड़ा गर्म पानी पिलायें। यदि कुछ बेचैनी सी होती हो तो पान चबवायें। एक दो दस्त लगकर रोग समूल नष्ट हो जायगा और घाव सूख जायेंगे।

३१६-उपदंश की संन्यासी गुटी

विधि—रीठे का छिलका आवश्यकतानुसार लेकर बारीक करके कपड़े में से छान लें। कुछ बून्दें पानी डालकर चने के बरारर गोलियां बनालें। उपदंश की अकसीर दवा तैयार है। सूख जाने पर शीशी में डाल लें। जरूरत के समय एक गोली प्रातःकाल १२० ग्राम दही के साथ दिया करें और सायंकाल पानी से दिया करें। चौदह दिन के सेवन से बहुत पुराना रोग भी जड़ से चला जायगा। साधारण सा योग गुणों से भरपूर है। बड़ा आसान और सस्ता योग है।

३२०-उपदंश के घाव

विधि—२५ ग्राम त्रिफला को किसी बर्तन में डालकर आग पर रख करके जलालें और बारीक करके मधु में मिलाकर मरहम सी बनालें। प्रतिदिन घावों पर लगाया करें। तीन चार दिनों में बड़े से बड़े घाव ठीक होने आरम्भ जायेंगे। सर्वथा अनुपम औषधि है।

३२१-नाग भस्म

विधि—२० ग्राम शुद्ध सीसे (नाग) को मिट्टी की प्याली में डालकर तेज कोयलों की आग पर रखें। जब पिघल जाये तब अंगूठे जैसी मोटी नीम की ताजा लकड़ी से उस समय तक फिराते रहें जब तक कि नाग का लाल रंग का चूर्ण न बन जाये। जब लाल रंग की भस्म तैयार हो जाये तब उतार लें और बारीक करके सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। आवश्यकता के समय घावों पर छिड़का करें। उपदंश के घाव शीघ्र सूख जायेंगे।

ज्वर प्रकरण

जब अप्राकृतिक ताप बढ़ कर सारे शरीर में व्याप्त हो जाता है उसे ज्वर के नाम से पुकारते हैं। यहां पर इसके सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन न करके तदुपयोगी अनुभूत और सरल योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

३२२-कम्प ज्वर

विधि—आवश्यकतानुसार काली मिर्च लेकर बारीक करलें। धतूरे के पत्तों के रस में तीन बार तर और खुश्क करके चने के बराबर गोलियां बनावें। एक गोली ज्वर आने से दो घण्टे पहले और दूसरी एक घण्टा पहले थोड़े गर्म पानी के साथ दें। आशा है पहले दिन ज्वर नहीं होगा अन्यथा दूसरे दिन पुनः इसी प्रकार करें। सब प्रकार के ज्वरों के लिये लाभप्रद है।

३२३-चमत्कारी गोलियां

विधि—पलास पापड़ा और करंजवा की मींगी समान मात्रा में लेकर बारीक पीस कर के पानी के साथ चने के बराबर गोलियां बनालें। ज्वर आने से पहले २-२ गोलियां तीन बार पानी के साथ दें। इससे ज्वर का आना रुक जायगा। गोलियां चार-चार घण्टे के अन्तर से दें।

३२४-अन्य योग

विधि—भुनी हुई फिटकड़ी ६ रत्ती से १ ग्राम तक ज्वर आने से एक घण्टा पूर्व खांड में रखकर दिया करें। ज्वर अवश्य रुक जायगा। परन्तु ध्यान रहे कि सगर्भा स्त्री को यह औषधि कदापि न दी जाये अन्यथा गर्भपात की भारी आशंका है।

३२५-सरलोपचार

विधि—काला जीरा और कलौंजी सममाग मात्रा में लेकर चूर्ण बना रखें। ज्वर से पहले तीन ग्राम चूर्ण १२ ग्राम गुड़ में रखकर खिलायें। ज्वर नहीं आयेगा।

३२६-ज्वरारि चुटकला

विधि—४ रत्ती नौशादर और ३ रत्ती काली मिर्च को बारीक करके

ज्वर से एक घण्टा पूर्व दें। ज्वर बिलकुल नहीं होगा। दो तीन बार के सेवन से पूर्ण लाभ होगा।

३२७-चौथिया ज्वर हर

विधि—१० ग्राम कलौंजी को बारीक पीसकर १० ग्राम मधु में मिला कर रख लें। इसमें से ५ ग्राम प्रातःकाल खिलाया करें। ज्वर के लिये अचूक योग है।

३२८-जीर्ण ज्वर

विधि—काले जीरे को बारीक करके शीशी में डाल रखें। दोनों समय ३-३ ग्राम की मात्रा गर्म दूध के साथ दें। कुछ ही दिनों में पूर्ण आराम हो जायगा।

३२९-द्वितीय योग

विधि—२० ग्राम रेवन्द चीनी को पीसकर बारीक करलें। रात के समय १५ ग्राम हरी गिलोय को कुचल कर पाव भर पानी में भिगो दिया करें। प्रातःकाल पानी निथार लें। एक ग्राम औषधि देकर ऊपर से यह पानी पिलाया करें। पुराने से पुराने ज्वर के लिये अचूक औषधि है।

३३०-पित्त ज्वर

विधि—एक रत्ती यवक्षार को २५० ग्राम ठंडे पानी में घोलकर के प्रातः समय इसके साथ बालंगू के ५ ग्राम बीज फंका दिया करें। तीन चार दिनों में ज्वर बिलकुल न रहेगा।

३३१-ज्वरारि अंजन

सर्व प्रकार के ज्वरों के लिये यह एक अचूक औषधि है। आंख में केवल एक सलाई लगाने से ज्वर अवश्यमेव उतर जायगा। बड़ा अनुपम योग है। बनाकर सत्यता का परीक्षण करें।

विधि—आवश्यकतानुसार नौशादर लेकर चार घन्टे तक गिलोय के ताजा अर्क के साथ खूब खरल करें। फिर दो प्यालियों में रखकर यथाविधि सत्व प्राप्त करें। जो सत्व प्राप्त हो उसको पुनः चार घण्टे तक उपर्युक्त अर्क के साथ खरल करके दोबारा सत्व उड़ालें। तीन बार इसी क्रिया को करें। तीसरी बार सत्व को सावधानी से शीशी में रखें। प्रत्येक ज्वर में एक एक सलाई दोनों आंखों में लगाया करें। इससे हर प्रकार का ज्वर उतर जायगा।

३३२-अकसीर अर्क

सब प्रकार के ज्वरों के लिए एक मात्र उपहार है। एक ही औषधि पचासों रोगियों के लिए अमृत का कार्य करती है। आज तक कभी असफल नहीं रही है। अनुभूत और हानि शून्य है।

विधि—दो ग्राम कपूर को बोतल में डालकर पानी से बिल्कुल ऊपर तक भर दें। बोतल को हिलाकर उपरोक्त कपूर को भली भांति मिला लें। सुदृढ डाट लगाकर रख छोड़ें। चमत्कार पूर्ण औषधि तैयार है। इसमें से २ ग्राम औषधि ५० ग्राम जल में मिलाकर दिया करें। इसी प्रकार दिन में तीन मात्रायें दें। सभी ज्वरों के लिए उत्तम उपचार है। इसके अतिरिक्त बच्चों के सब रोगों में गुण करती है—यथा रंग बिरंगे दस्त, प्रवाहिका, सूखा रोग, तालू का बैठ जाना और फोड़ा, फुन्सी आदि में यह बड़ा लाभ करती है। आयु का ध्यान रखकर सेवन करायें।

मलेरिया ज्वर

इतिहास इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि यह ज्वर बहुत प्राचीन समय से संसार में विद्यमान है। परन्तु आज जैसी उन्नति इसने कभी नहीं पाई थी। यह प्रायः जुलाई के मध्य से लेकर नवम्बर तक साधारणतया रहता है। चिकित्सकों के अनथक परिश्रम के होते हुए भी सहस्रों मनुष्य इसके पंजे में फसकर प्राण गंवा बैठते हैं। प्राचीन भारतीय विशेषज्ञों का मत है कि वर्षा के कारण भूमि से वाष्प कण उठकर जलवायु को दूषित कर देते हैं और उससे मलेरिया होता है। डाक्टर लोगों की राय है कि मच्छर ही इसका मूल कारण है। मच्छर इस रोग के कीटाणु शरीर में पहुँचाता है। कथन में अन्तर है परन्तु वास्तविकता एक ही है। दोनों का मत ठीक है। नीचे इसके लिए कुछेक लाभप्रद और अनुभूत योग लिख रहे हैं।

३३३-मलेरिया संजीवनी

यह औषधि चिरकाल से हमारे अनुभव में आ रही है और सहस्रों रोगी इसके कारण स्वास्थ्य लाभ कर चुके हैं। बड़ा प्रभावोत्पादक और सफल योग है।

विधि—आवश्यकतानुसार हरताल गोदन्ती लेकर एक दिन नीम के पत्तोंके रस में खरल करें। टिकिया बनाकर मिट्टी के कूजे में डालकर कपरोटी करें। सूख जाने पर आग दें। सर्द होने पर बारीक करके बोतल में भर रखें। प्रतिदिन चार रत्ती से एक ग्राम तक की मात्रा ताजा पानी के साथ

दिया करें। यह अकेली औषधि मलेरिया ज्वर के लिए अक्सीर है और कुनीन से अतिश्रेष्ठ है। यदि कब्ज हो तो पहले रोगी को कब्जनाशक औषधि दें।

३३४ द्वितीय योग

यह योग भी अपने गुणों में अद्वितीय है। बहुत समय से हमारे अनुभव में आ रहा है। हर बार सफल रहा है। कुनीन से यह बहुत उत्तम है। क्वनीन के सदृश यह कटु अवश्य है, परन्तु कम और खुश्की नहीं करता। क्वनीन के सेवन के बाद यदि दूध न पिया जाये तो अत्यधिक खुश्की होकर रोगी बहरा हो जाता है। इसमें यह दोष भी नहीं है।

विधि—करंजवा की मींगी २५ ग्राम और काली मिर्च ६ ग्राम। दोनों को बारीक करके शीशी में डाल रखें। इसमें से ६ रत्ती औषधि ज्वर आने से दो घण्टा पूर्व ताजा पानी के साथ दें। आशा है पहिले ही दिन आराम होगा अन्यथा दो दिन तक इसी प्रकार औषधि दें। बहुत पुराना ज्वर टूट जायगा। यदि चूर्ण रोगी को कटु लगे और असह्य हो तो इसकी गोलियां बनाई जा सकती हैं।

३३५-तृतीय योग

यह योग भी मलेरिया के लिए पूर्ण गुणकारी है और शीघ्र ही अपना पूरा प्रभाव दिखलाता है। अनेकों बार का अनुभूत योग है आप भी अनुभव में लाकर लाभ उठावें।

विधि—आवश्यकतानुसार लाल फिटकड़ी लेकर लोहे के तवे पर रखकर नीचे मंद २ आग जलायें। ऊपर से आक का दूध डालते रहें यहां तक कि औषधि का रंग काला हो जावे। बस औषधि तैयार है। बारीक पीस कर रख छोड़ें। ज्वर आने से पहिले दो दो रत्ती तीन बार पानी के साथ दें।

पुरुषों के विशेष रोग

शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता इत्यादि पुरुषों के विशेष रोग हैं। आजकल देश में यह रोग बहुत बढ़ गये हैं। युवकों में यह रोग अधिक पाये जाते हैं। युवक इन रोगों का उपचार योग्य वैद्यों से नहीं करवाते और इन्हें छिपाने के लिए विज्ञापनों को देखकर औषधियां मंगवाते हैं और बेचारे बुरी तरह लूटे जाते हैं। ऐसी औषधियों से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हो रही है। इस विषय पर सविस्तार लिखना विषयान्तर समझकर यहां पर कुछेक ऐसे योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि बिल्कुल सरल और अनुभूत हैं। आप भी अनुभव द्वारा जांच कर जनता का हित साधन करें।

प्रमेह

इस स्वास्थ्य शत्रु और भयंकर रोग से आज हर बूढ़ा बच्चा परिचित है। इस पिशाच ने युवकों को ऐसा दुर्बल तथा हीन बना दिया है जैसे घुन लकड़ी को बना देता है। भारतवर्ष में यह रोग सबसे अधिक फैला हुआ है। प्रमेह रोग में ग्रस्त होने के उपरांत अन्यान्य रोग भी आक्रमण कर देते हैं। हृदय और मस्तिष्क की दुर्बलता, वृक्क तथा मूत्राशय के दोष, कमर दर्द, दृष्टि दुर्बलता, स्वप्नदोषाधिक्य एवं शीघ्रपतन आदि रोग प्रमेह का आश्रय पाकर अपना बल बढ़ाते हैं। नीचे इसके लिए कुछेक विशिष्ट तथा अनुभूत चुटकले प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

३३६—प्रमेह अकसीर

बड़ा सरल और सफल योग है। अपने गुणों में सर्वथा अचूक रहा है और अनेकों बार अनुभव में आ चुका है।

विधि—लाल फिटकड़ी १२ ग्राम, छोटी इलायची ७ और घृत १२ ग्राम। तीनों औषधियों को लोहे के बर्तन में डालकर नर्म आग पर रखें। जल जाने पर बारीक करके समभाग १४ पुड़िया बना लें। प्रातःकाल निराहारमुख एक पुड़िया दूध की लस्सी के साथ दिया करें। इसके सेवन से रोग समूल नष्ट हो जायेगा। स्थायी लाभ की दृष्टि से दो सप्ताह तक अवश्य सेवन करायें।

३३७-अनुपम योग

यह योग अपने ढंग का बिल्कुल निराला है। अति साधारण से योग में अनेकानेक गुण हैं। अनुभव की कसोटी पर कसने से इसके निहित गुणों का पूर्ण ज्ञान हो सकता है।

विधि—२० ग्राम सफेद राल को कूट करके वट वृक्ष के दूध में इतना तर करें कि एक एक अंगुल ऊपर आ जाये। छाया में सुखा करके पुनः तर करें और छाया में सुखा लें। इस क्रिया को तीन बार करें। तदुपरांत हावन-दस्ते में डालकर इतना कूटें कि राल मोम सदृश हो जावे। फिर १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर सूख जाने पर शीशी में रख छोड़ें। जरूरत पड़ने पर दोनों समय १-१ गोली दूध के साथ दिया करें। दो सप्ताह के निरन्तर सेवन से पुराना रोग भी मिट जायेगा।

३३८-अन्य योग

विधि—वट वृक्ष की कोंपल और गूलर की छाल समान मात्रा में लें। छाया में सुखाकर के कूट छान लें। इसके बराबर खांड या बूरा मिलाकर सावधानी से रख छोड़ें। दोनों समय दूध के साथ १०-१० ग्राम की मात्रा दिया करें। कुछ दिनों के सेवन से रोग नष्ट हो जायेगा। पतले वीर्य को गाढ़ा करने में विशेष लाभप्रद है।

३३९-प्रमेह गुटी

विधि—धतूरा के बीज शुद्ध और कालीमिर्च दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक कर लें। मधु के साथ चने के बराबर गोलियां बना लें। प्रातः-काल एक गोली देकर ऊपर से ५ ग्राम सौंफ पानी में पीस छान कर पिलाया करें। बड़ा ही प्रभावोत्पादक योग है। शीघ्रपतनके लिए अत्यधिक हितकर है।

३४०-चमत्कारी योग

इसी योग को किसी महानुभाव ने अन्य नाम से रजिस्टर्ड करवा रखा है प्रमेह के लिए अचूक योग है। योग इस प्रकार है कि १५ ग्राम शुद्ध नाग को कड़छी में डालकर तेज आग पर रखें। जब पिघल जावे तब सहजना (सोहांजना) की ताजा लकड़ी से चलाते रहें। थोड़ी थोड़ी लाल शक्कर भी ऊपर छिड़कते रहें और लकड़ी फिराते रहें, यहां तक कि नाग की भस्म बन जाये। तत्पश्चात् बारीक करके शीशी में डालदें। प्रातः समय आधी रत्ती से एक रत्ती तक मक्खन में रखकर दिया करें।

३४१-स्वप्न दोष

इस रोग से सब परिचित हैं। यह रोग भी प्रायः प्रमेह के कारण अधिक हुआ करता है। इसके लिए नीचे कुछेक अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

विधि—बिल्कुल सफेद कौड़ी जिसके किसी भाग पर भी दूसरा रंग न हो, आवश्यकतानुसार लें। पुरानी रूई में लपेट कर आग में रख कर राख कर लें। १२ ग्राम राख की ७ पुड़िया बना लें। प्रतिदिन प्रातः काल एक पुड़िया मक्खन में रखकर दिया करें। घृत के साथ गेहूं की रोटी खाने को दी जाय। अन्य सब वस्तुओं से परहेज करें। अत्यन्त सरल और अचूक योग है।

३४२-द्वितीय योग

विधि—६ ग्राम चिरौंजी को कूट करके आधा किलो दूध में औटायें। आधा शेष रहे तब रोगी को सोते समय पिलायें। आठ दिन के सेवन से रोग शेष न रहेगा।

३४३-स्वप्न दोष भंजन

यह योग स्वप्नदोष के लिए बड़ा शीघ्र प्रभाव दिखाता है और सदा सफल रहता है। अनेकों बार अनुभव में आ चुका है।

विधि—आवश्यकतानुसार शुद्ध वंग लेकर खूब कूटें। यहां तक कि गोली सी बन जाये। अब इसको खरल में डालकर अनार के ताजा दानों का रस बून्द २ करके डालते जायें और खरल करते रहें। यहांतक कि गोली बिल्कुल घुल मिल जावे। तत्पश्चात तोल करके इसके बराबर अनार का रस डालकर मिट्टी के कूजे में बन्द करके कपरोटी करें। फिर दस सेर उपलों की आग में रखकर आग दें। ठण्डा होने पर निकाल लें। बारीक पीसकर शीशी में रख छोड़ें। प्रतिदिन तीन रत्ती की मात्रा मक्खन में रखकर दिया करें। एक सप्ताह के सेवन से रोग जड़ से चला जाएगा। अनुभूत और अचूक दवा है।

३४४-वीर्याल्पता

विधि—आवश्यकतानुसार चने लेकर गोखरू के रस से इतना तर करें कि उपर्युक्त रस दो अंगुल ऊपर आ जाये और छाया में किसी सुरक्षित स्थान में रखें। एक ही रात में सारा पानी चनों में समा जाएगा। अब छाया में सुखाकर बारीक पीस लें। इसके बराबर खांड मिलाकर सावधानी से रखें। प्रतिदिन प्रातःकाल १२ ग्राम की मात्रा दूध के साथ दिया करें। दस पन्द्रह दिनों में पूर्ण लाभ हो जाएगा। अनुभूत दवा है।

३४५-बूटी का चमत्कार

विधि—आवश्यकतानुसार असगंध लेकर बारीक कपड़े से छान लें। इसके बराबर खांड मिलाकर बोतल में रख छोड़ें। इसमें से प्रतिदिन १० ग्राम की मात्रा धारोष्ण दूध के साथ सेवन करायें। वीर्य वर्द्धक होने के साथ साथ यह शरीर को पुष्ट करती है।

३४६—अन्य योग

यह साधारण सा योग भी वीर्यल्पता को दूर करने में बड़ा लाभप्रद सिद्ध हुआ है। थोड़ी लागत की औषधि से वर्षो का रोग कट जाता है। बड़ा अनोखा चुटकला है।

विधि—३ ग्राम दारचीनी का चूर्ण रात को सोते समय थोड़े गर्म गर्म दूध के साथ दिया करें। कुछ दिन इसके सेवन से पुराने से पुराना रोग दूर होकर वीर्य में अनुपम वृद्धि होगी।

३४७-दोषघ्न लेप

विधि—आवश्यकतानुसार लौंग लेकर खरल में डालकर सुरमे के सदृश्य बारीक बना लें और शीशी में रख छोड़ें। रात के समय एक ग्राम औषधि शहद में मिलाकर लेप बना लें। सुपारी और सीवन को छोड़कर शेष इन्द्रिय पर रात्रि में लेप करें। ऊपर धतूरा या एरण्ड का पत्ता बांधकर हल्की सी पट्टी बांध लें। प्रातः खोलकर अंगों को गर्म पानी से साफ किया करें। रात्रि के समय नियत समय पर इस क्रिया को किया करें। यदि इसके प्रयोग से अंग पर दाने प्रकट हों तो उसी समय इस औषधि को छोड़कर जलाया हुआ घी लगाया करें। जब ये दाने लुप्त हो जायें तब पुनः यही क्रिया करें। दाने पैदा होने पर बन्द कर दें। इसी प्रकार दो तीन बार के करने से गुप्तांग के सब दोष दूर हो जायेंगे। उत्तमांगों के सर्व रोगों को दूर करने में यह योग अद्वितीय है।

३४८-द्वितीय योग

विधि—दारचीनी और अकरकरा ३-३ ग्राम। दोनों को खूब बारीक करके १७ ग्राम मधु में मिलाकर के डिब्बिया आदि में रख छोड़ें। सोते समय यथा विधि लेप करें। यदि पित्त की तरह दाने निकल आयें तो जलाया हुआ घी लगाते रहें। दाने लुप्त होने पर पुनः इसी प्रक्रिया को आरम्भ कर दें। तीन बार के प्रयोग से बहुत अधिक लाभ होगा।

३४९-नपुंसकता निवारक

विधि—तीन ग्राम हींग को सूक्ष्म पीसकर २५ ग्राम मधु में मिलाकर घोट लें और सावधानी से रखें। रात को सोते समय यथा विधि लेप करें। असफलता सफलता में बदल जायेगी और पुरुष कहलाने का अधिकार मिलेगा।

बहुत सरल औषधि है। इसके कुछ दिनों के प्रयोग से दुर्बलता और टेढ़ापन दूर हो जायेगा।

३५०-दुर्बलता और वक्रता

विधि—एक बहुत पुराना जूता लें, उसे तिलों के तेल में अच्छी तरह तर करके दो तीन दिन तक पड़ा रहने दें। तीसरे दिन जूते के छोटे २ टुकड़े करके पाताल यन्त्र विधि से तेल खैंचें। तेल को सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। सोते समय सुपारी और सीवन को छोड़कर शेष गुप्तांग पर खूब अच्छी तरह मालिश किया करें। ऊपर अरंड का पत्ता रखकर पट्टी बांध दिया करें। कुछ दिनों तक लगाने से दुर्बलता और वक्रता दूर हो जायगी। अनुभूत योग है।

३५१-वाजीकरण योग

विधि—आवश्यकतानुसार मोचरस लेकर बड़ के दूध में तीन बार तर और खुश्क करके जंगली बेर के बराबर गोलियां बनायें। सम्भोग से आध घंटा पहिले एक गोली गाय के दूध के साथ लें। इसकी वाजीकरण शक्ति आपको प्रसन्न कर देगी।

३५२-चुटकला

आवश्यकतानुसार माजूफल लेकर मैदा की तरह बारीक पीसकर शीशी में डाल लें। सम्भोग के समय इसमें से १ ग्राम दवा पानी में पीसकर गुप्तांग पर लेपन करें। सूख जाने पर व्यस्त हों। बड़ी सुखद औषधि है।

३५३-द्वितीय योग

एक हिरण का पित्ता १२ ग्राम मधु में मिलाकर सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय गर्म करके गुप्तांग पर लेपन करके व्यस्त हों। सुखद चुटकला है।

अकरकरहा और दारचीनी मधु में मिलाकर यथा समय अंग पर लेपन करें और व्यस्त हों। अत्युत्तम है।

३५४-अण्डकोष शोथ

विधि—सोंठ ३ ग्राम, बिनौला की मींगी ४ ग्राम और काले तिल २ ग्राम। सबको बारीक करके थोड़े गोमूत्र में पकाकर गर्म २ को सूजन के स्थान पर लेप करें। कई बार के लेप करने से आराम हो जायगा।

३५५-अण्डकोष घाव

विधि—एक सुपारी और चार रत्ती नीलाथोथा। दोनों को जलाकर राख बना लें। इसमें चार रत्ती कत्था मिलाकर बारीक पीस लें। थोड़ा गोघृत मिलाकर घावों पर लगाया करें।

३५६-अण्डकोष खुजली

विधि—गंधक आंवलासार और सरसों का तेल समभाग। गंधक को तेल में मिला करके अण्डकोषों पर लगाया करें।

३५७-गुह्यांग शोथ

विधि—एक रत्ती यवक्षार को प्रतिदिन २५० ग्राम बकरी के दूध के साथ दिया करें। एक सप्ताह में आराम हो जायगा। सर्व प्रकार की गर्म चीजों से परहेज करें।

३५८-लिंगेन्द्रिय घाव

यह घाव प्रायेण अधिक मैथुन वा ऋतुधर्मयुक्त स्त्री के साथ सम्भोग करने से हो जाया करता है। इसके लिए निम्नोक्त मरहम बड़ी लाभप्रद है।

विधि—३ ग्राम मुरदासंग बारीक करके १२ ग्राम मक्खन में मिलाकर सावधानी से रखें। घाव पर लगाकर ऊपर रूई का फाहा रखें। तीन चार दिनों में घाव अच्छा हो जायगा।

३५९-द्वितीय योग

विधि—काली जीरी और काली हरड़ दोनों को समान मात्रा में लेकर खूब बारीक कर लें। पानी में मिलाकर घाव पर लगाया करें। कितना भी पुराना घाव क्यों न हो दो तीन बार के लगाने से अवश्यमेव पूर्ण लाभ होगा।

स्त्रियों के रोग

प्रदर रोग

जिस प्रकार पुरुषों में प्रमेह होता है उसी प्रकार स्त्रियों में प्रदर रोग होता है। दोनों रोग एक सामान हैं। जैसे प्रमेह बड़ा भयंकर रोग होता है, और स्वास्थ्य का नाश कर देता है, उसी प्रकार प्रदर रोग भी स्त्रियों में कुछ शेष नहीं छोड़ता है। अन्दर ही अन्दर घुन की भांति खाकर स्वास्थ्य का सर्वनाश कर देता है। यदि इसके उपचार में विलम्ब किया जाय तो यह बड़ा घातक सिद्ध होता है। नीचे इसके लिए कुछेक सरल और अनुभूत योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

३६०-अक्सीर प्रदर

विधि—मौलसिरी की छाल आवश्यकतानुसार लेकर छाया में सुखा लें। फिर बारीक पीसकर कपड़छान करके बराबर मात्रा में खांड मिलायें और सावधानी से रखें। प्रतिदिन प्रातःकाल १० ग्राम चूर्ण ताजा पानी के साथ दिया करें। दो सप्ताह में पूर्ण आराम हो जायगा।

३६१-द्वितीय योग

विधि—ढाक का गोंद और खांड। दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक पीसकर चूर्ण बना रखें। प्रतिदिन प्रातःकाल निराहारमुख ६ ग्राम की मात्रा पानी के साथ दिय करें। बीस दिनों में पूर्ण आराम हो जायगा।

३६२-अन्य योग

विधि—इमली के बीजों की मींगी आवश्यकतानुसार लें। लोहे के तवे पर थोड़ी रेत डालकर नीचे आग जलायें। जब रेत खूब गर्म हो जाये तब उपरोक्त बीज डालकर किसी वस्तु से हिलाते रहें। जब अधभुने से हो जावें तब उतार कर गर्म २ के ऊपर से छिल्का दूर करें। इस प्रकार छिल्का आसानी से उतर सकता है। वैसे उतारना बड़ा कठिन है। तदुपरान्त हावन-दस्ते में डालकर खूब कूटें। कपड़छान करके इसमें बराबर वजन में खांड मिलालें। ५ से १० ग्राम तक की मात्रा प्रातः समय पानी से दें। प्रदर का अचूक उपचार है।

३६३-प्रदर नाशक चूर्ण

विधि—भुने हुये चने ६ ग्राम, संगजराहत ६ ग्राम और माजू १ नग। तीनों औषधियों को बारीक पीसकर १८ ग्राम खांड मिलाकर सुरक्षित रखें प्रतिदिन प्रातःकाल ५ ग्राम की मात्रा ताजा पानी से दिया करें। पांच छः दिनों में रोग समूल नष्ट हो जायगा।

३६४-मासिक धर्माधिक्य

विधि—समुद्रशोप १५ ग्राम खूब बारीक पीसकर शीशी में सावधानी से रख छोड़ें। बस औषधि तैयार है। प्रातः समय एक ग्राम औषधि ठण्डे पानी से दिया करें। तीन चार वार देने से अधिक खून निकलना बन्द हो जायगा। बड़ा सरल योग है।

३६५-द्वितीय अनुपम योग

मासिकधर्म अधिक आने के लिए अनुभूत है। खून का अधिक आना तत्काल बन्द हो जाता है। बड़ा सरल योग है।

विधि—लाल गेहूं को तवे पर डालकर कोयला बना लें और इसमें समभाग खांड मिलाकर बारीक कर लें। सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। चमत्कारी औषधि तैयार है। जरूरत पड़ने पर ५ ग्राम औषधि पानी के साथ दें। दो ही मात्राओं से पूर्ण आराम हो जाएगा। उत्तम योग है।

३६६-लाल चूर्ण

विधि—संगजराहत और गेरू दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक कर लें। किसी शीशी में डाल लें। ७ ग्राम की मात्रा प्रातः समय ठन्डे पानी के साथ दें। एक दो दिन में अवश्य आराम प्रतीत होने लगेगा।

३६७-अन्य योग

विधि—सफेद राल और असगंध दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक करके दोनों के बरावर खांड मिलालें। प्रतिदिन ७ से १० ग्राम तक की मात्रा ठन्डे पानी के साथ दिया करें। अत्यधिक लाभप्रद औषधि है।

३६८-अन्य अनुपम योग

विधि—६० ग्राम राई को बारीक करके सावधानी से रखें। प्रतिदिन दोनों समय २-२ ग्राम की मात्रा बकरी के दूध के साथ दिया करें। इस प्रकार १५ दिन सेवन कराते रहें। मासिक धर्म अधिक होने का रोग जड़ से सदा के लिए चला जाएगा। मासिक धर्म प्रारम्भ होने से दो चार दिन

पहिले इस औषधि का सेवन प्रारम्भ करें। समाप्त होने तक निरन्तर इसका सेवन कराते रहें। आजीवन इस रोग से मुक्ति मिलेगी।

३६९-मासिक धर्म की अनियमितता

मासिक धर्म का नियत समय पर न होना या पीड़ा के साथ आना और थोड़ी मात्रा में आना आदि रोगों के लिए निम्नलिखित योग अत्यधिक गुण-कारी है। पहली मात्रा से ही लाभ प्रतीत हो जाता है।

विधि—कच्चा सुहागा ३ ग्राम और केसर १ रत्ती। दोनों को बारीक करके प्रातःकाल ठन्डे पानी के साथ दें। मासिक धर्म नियत समय पर खुल कर आयेगा।

३७०-मासिक धर्म खोलने का योग

विधि—कायफल और समुद्र फल दोनों को समान मात्रा में लें। बारीक करके शीशी में भर रखें। बस चमत्कारी औषधि तैयार है। जरूरत पड़ने पर १ ग्राम औषधि गर्म चाय या गर्म पानी के साथ नित्य दिया करें। ८ बार के देने से बहुत दिनों का रुका हुआ खून जारी हो जायगा। गर्भाशय को सब दोषों से मुक्त करके गर्भ धारण करने के योग्य बना देगा।

३७१-द्वितीय योग

विधि—बायविडंग ६ ग्राम को खूब कूट करके आध किलो पानी में औटायें। जब चौथाई जल शेष रह जाये तब २५ ग्राम गुड़ मिलाकर कपड़े से छानकर थोड़ा गर्म २ पिलायें। मासिक धर्म प्रारम्भ होने से चार दिन पहिले शुरू करें। इतनी मात्रा यथा नियम चार दिन तक देते रहें। सब दोष दूर होकर मासिक धर्म खुलकर होगा, कोई कष्ट नहीं होगा।

३७१-ऋतुस्रावक गुटी

विधि—रेवन्द चीनी, कलमी शोरा और एलवा तीन तीन ग्राम। तीनों औषधियों को बारीक पीसकर पानी के साथ दो दो रत्ती की गोलियां बनावें। सूख जाने पर काम में लावें। मासिक धर्म प्रारम्भ होने से तीन चार दिन पूर्व दोनों समय एक एक गोली गर्म पानी के साथ दिया करें। गर्भाशय के सब दोष दूर होकर खून खुलकर आने लग जायगा।

३७३-इस्तहाजा

इस रोग के लिए भी उपरोक्त योग लाभप्रद है। तथापि इसके लिए एक विशेष योग नीचे लिख रहे हैं। जो अनुभूत और अनुपम है।

विधि—सफेदा काशगीरी १२ ग्राम और लाल गेरू चार रत्ती दोनों को अच्छी तरह मिलाकर सुरक्षित रखें। जरूरत पड़ने पर एक रत्ती ओषधि बताशा में रखकर खिलायें। ऊपर से थोड़ा दूध या पानी पिला दिया करें। तीन मात्राओं से अवश्यमेव आराम हो जायेगा। ऐसे ऐसे स्थान पर इसका प्रयोग किया जा चुका है, जहां लोग कहते थे कि यह खून किसी ने जादू द्वारा जारी किया है। बड़े २ स्थानों पर इससे सफलता मिली है।

३७४-बांझपन

विधि—शिवलिंगी के तीन बीज एक एक ग्राम गुड़ में लपेट कर गोलियां बना रखें। जब स्त्री को मासिक धर्म हो चुके, उस समय उसी दिन से एक एक गोली खिलाना शुरू करें। तीसरे दिन सम्भोग करें। अवश्य आशा पूर्ण होगी। अन्यथा दूसरे व तीसरे मास पुनः यही क्रिया करें। तीसरे मास तक अवश्य सफलता मिलेगी। इसके प्रताप से अनेकों स्त्रियों को सन्तान उत्पन्न हुई है।

३७५-गर्भपात

विधि—२५ ग्राम कीकर के पत्तों को १२५ ग्राम पानी में औटायें। जब आधा शेष रहे तब १२ ग्राम खांड मिलाकर एक रत्ती बारीक पिसे हुए कहरवा के साथ दें। दो तीन मात्राओं के देने से खून बन्द हो जायगा और गर्भ स्थिर रहेगा।

३७६-गर्भरक्षक

विधि—कुन्दर और कूजा मिश्री दोनों को समान मात्रा में लेकर चूर्ण तैयार करलें। प्रतिदिन प्रातःकाल सात ग्राम की मात्रा सांठी के चावलों के धोवन के साथ दिया करें। यदि अधिक चलने फिरने या किसी अन्य कारण से स्त्री को गर्भपात की आशंका हो तो ऐसे अवसर पर यह औषधि बड़ी लाभप्रद रहती है।

३७७-प्रसूति पीड़ा

प्रसूति समय के कष्टों को स्त्री के सिवाय और कौन जान सकता है। यह समय और प्राणान्त का समय एक समान होता है। बड़ा कष्ट कर समय होता है। इसके लिए नीचे एक योग प्रस्तुत किया जा रहा है। इस योग को अनुभव में लाकर महिला वर्ग के कष्टों को कम करें।

विधि—इन्द्रायण की जड़ बारीक पीस लें। थोड़े से घृत में मिलाकर गुप्त स्थान में मलें। बच्चा तत्काल बाहिर निकल आयगा।

३७८-कुच शोथ

विधि—एलुवा, गुग्गल छः छः ग्राम और गेहूं का मैदा १२ ग्राम। इनको पानी में पीसकर सूजन के स्थान पर लेप करें। एक दो बार लगाने से सूजन पिघल जायगी।

३७९-दूसरा योग

विधि—एक पलाण्डु को कपरोटी करके आग में दबा दें। जब पक जाये तब कूटकर थोड़ा गर्म २ बांध दें। अवश्य लाभ होगा।

३८०-कुच घाव

विधि—नीम के पत्ते आवश्यकतानुसार लेकर जलाकर राख कर लें। अब इसमें से १५ ग्राम राख को ३० ग्राम सरसों के तेल में मिलाकर नीम के सोटे से दो घन्टे तक खूब घोट व रगड़कर रखें। पहिले घाव को नीम के पानी या डिटोल से साफ करके ऊपर यह मरहम लगाया करें थोड़ीसी राख ऊपर भी छिड़क दें। पाच छः दिनों तक इस क्रिया को जारी रखें। बुरे से बुरा घाव भी अच्छा हो जायगा।

३८१-दुग्ध वर्धक

विधि—आवश्यकतानुसार सफेद जीरा लेकर बारीक कर लें। इसमें बराबर शक्कर मिलाकर दोनों समय पानी के साथ १०-१० ग्राम दिया करें। दूध बहुत अधिक पैदा होगा। अनेक बार का अनुभूत योग है।

३८२-कुच कठोर लेपन

इसके कुछ दिनों तक लगाने से ढलके हुए स्तन पुनः अपनी असली दशा में आ जाते हैं। बड़ा ही सरल योग है।

विधि—पोधे जो प्रायः नदी तट के निकट मिलते हैं, आवश्यकतानुसार लेकर मेदे की तरह खूब बारीक कर लें। इसे सिरके में मिला कर लेप तैयार करें। प्रतिदिन सोते समय स्तनों के चारों ओर लेप करें और अंगिया (Brassiere) पहनें। इस प्रकार कुछ दिनो के लगाने से स्तन अपनी असली अवस्था में आ जायेंगे।

३८३-गर्भ निरोधक

विधि—समुद्र झाग आवश्यकतानुसार लेकर बारीक पीसकर रख छोड़ें।

मासिक धर्म के दिनों में प्रतिदिन निराहार मुख एक ग्राम से तीन ग्राम तक की मात्रा ठण्डे पानी के साथ दिया करें।

३८४-दूसरा योग

विधि—थूहर (स्नूही) की लकड़ी की राख और इसके बराबर खांड मिलाकर रखें। मासिक धर्म हो चुकने पर प्रतिदिन प्रातःकाल दो ग्राम की मात्रा ठण्डे पानी के साथ निरन्तर इक्कीस दिन तक सेवन करायें। यह योग भी अनुभूत है।

नोट—इन दोनों योगों में बड़ी विशेषता यह है कि जब संतान पैदा करना चाहें तब पहिले एक दो साधारण से जुलाब देकर कोई मासिक धर्म खोलने वाली औषधि दें। इससे फिर सन्तान होने लगेगी।

३८५-मजीक

इसके लगाने से पांच मिनट में स्त्री बाकरा के सदृश हो जाती है। पूरे गुणों का ज्ञान प्रयोग करने से मालूम हो सकता है।

विधि—बड़ी हरड़ की मींगी (जो कि गुठलियों में से बारीक बारीक निकला करती है) और माजू दोनों को समान मात्रा में लेकर सुरमें जैसा खूब बारीक पीसकर शीशी में डाल लें। आवश्यकता से पन्द्रह बीस मिनट पहिले एक ग्राम के लगभग दवा योनि के भीतर मल दिया करें।

३८६-गर्भ निरोधक

इसके लिए सर्वोत्तम उपाय तो संयम से रहना ही है, तथापि जो ऐसा न कर सके उनको उचित है कि पलास के बीजों को सूक्ष्म पीसकर कपड़छान करले, फिर घी और शहद में मिलाकर घोट लें। जब स्त्री ऋतुमति होकर स्नान कर चुकें तब यह दवा उपरोक्त विधि से तैयार करके योनि में रखें। ऐसा करने से गर्भ नहीं रहेगा।

बाल रोग

स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रकाशित आंकड़ो से स्पष्ट है कि हमारे देश में सहस्रों बच्चे माता-पिता की असावधानी के कारण माता पिता को संतप्त करके काल के मुख में चले जाते हैं। यह दुर्भाग्य पूर्ण बात है। इसमें मरने वाले बच्चों का दोष नहीं है। माता पिता की असावधानी इसमें मुख्य कारण है। बच्चों पर जितना ध्यान देना चाहिए उतना ध्यान नहीं दिया जाता। उनके उपचार की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता। परन्तु यह महत्वपूर्ण बात है कि छोटे बच्चों का उपचार अवश्य किसी योग्य चिकित्सक से करवाना चाहिए जो कि रोग का अच्छी प्रकार निदान कर सके। बच्चा न तो बोलकर यह कह सकता है और न संकेतों द्वारा बता सकता है कि मेरे अमुक स्थान पर पीड़ा है। अतः बच्चोंके रोगोमे बड़ी छानबीन और सावधानी की जरूरत है। चिकित्सा से उसी समय सफलता मिल सकती है जबकि बच्चे के रोग का ठीक प्रकार निदान हो सके। नीचे बच्चों के रोगों से सम्बन्धित कुछेक योग प्रस्तुत किये जा रहे हैं। ये सब योग अनेक बार के अनुभूत हैं।

३८७-डब्बा रोग

इस रोग में सांस लेते समय पसलियों के नीचे एक गढ़ा सा पड़ने लगता है और साथ ही ज्वर भी होता है। प्राचीन आचार्यों ने इसे बच्चों का न्युमोनिया बताया है। नीचे एक अनुभूत योग लिख रहे हैं बनाकर देखें।

विधि—भुना हुआ नीलाथोथा और भुना हुआ सुहागा। दोनों को बराबर लेकर बकरी के दूध के साथ पीसकर बाजरा के दाने के बराबर गोलियां बनायें। सावधानी से शीशी में रख छोड़ें। जरूरत पड़ने पर एक या दो गोली माता के दूध में घिसकर दें। आराम हो जायगा।

३८८-डब्बा नाशक

विधि—मैनफल ६ ग्राम और भुना हुआ नीलाथोथा ३ ग्राम। दोनों को बारीक पीसकर समान मात्रा में खांड मिलाकर रखें। जरूरत पड़ने पर एक से दो रत्ती तक या आयु के अनुसार इससे न्यूनाधिक माता के दूध में मिलाकर दें। शीघ्र आराम हो जायगा।

३८९-डब्बारि वटी

विधि—शुद्ध जमालगोटा ३ ग्राम और एलुवा ३ ग्राम। दोनों को खूब बारीक करके अदरक के रस के साथ घोटकर मूंग के बराबर गोलियां बनावें। सूख जाने पर सम्भाल कर रखें। आवश्यकता के समय बच्चे की शक्ति और आयु के अनुसार माता के दूध में घोलकर दिया करें। बड़ी अनुभूत औषधि है।

३९०-कमेड़ा रोग

इस रोग में बच्चा एकदम बेहोश होकर मुख से झाग बहाने लग जाता है और हाथ पांवों में ऐंठन पैदा हो जाती है। इस रोग के लिये निम्नोक्त योग अत्याधिक लाभप्रद है।

विधि—सरसों का तैल ६० ग्राम और सिंदूर २ ग्राम। पहले तेल को आग पर रखें, जब खूब गर्म हो जाये तब सिंदूर डालदें और लकड़ी से हिलाते रहें। जब तेल का रंग गुलाबी सा हो जाये तब तीन ग्राम काली मिर्च बारीक पीसकर डालदें। दो तीन बार हिलाकर उतार लें। ठंडा होने पर सावधानी से शीशी में रखें। आवश्यकता के समय काम में लावें। प्रातः दोपहर और सायंकाल को उपर्युक्त तेल बच्चे के तालू पर मला करें। दो तीन दिनों में आराम होने लग जायगा और कुछ समय लगाने से पूर्ण लाभ हो जायगा। बड़ा सरल और सफल योग है।

३९१-चमत्कारी ताबीज

विधि—२० लौंग एक कपड़े में बांधकर ताबीज के सदृश बच्चे के गले में डाल दें। उसी दिन से आराम होना आरम्भ हो जायगा। अनेकों बार का अनुभूत योग है।

३९२-बालक्षय रोग

विधि—आवश्यकतानुसार खूबकलां लेकर बकरी के दूध में औटाकर छाया में सुखा लें। इसी प्रकार तीन बार करें और दूध को फेंक दें। सूखी हुई खूबकलां को बारीक पीसकर शीशी में रख छोड़ें। प्रतिदिन दो से चार ग्राम तक की मात्रा माता के दूध में घोलकर पिलाया करें। बच्चों के क्षय रोग के लिये संजीवनी है।

३९३-द्वितीय योग

विधि—तन्दूर की लाल मिट्टी और गुश्की घोड़े का जलाया हुआ खुर दोनों को समान मात्रा में लेकर जल के साथ बारीक पीस करके मूंग के दाने के बराबर गोलियां बनायें। प्रतिदिन एक एक गोली माता के दूध में

घिसकर पिलाया करें। सूखापन दूर होकर बच्चा दिन प्रतिदिन मोटा होता जायगा।

३९४-बच्चों की खांसी

विधि—आधा भुना हुआ सुहागा और काली मिर्च दोनों को समान मात्रा में लेकर घृतकुमारी के रस के साथ रत्ती रत्ती की गोलियां बना लें। सूख जाने पर सम्भाल कर रखें। जरूरत पड़ने पर एक गोली माता के दूध में घिसकर पिलाया करें। हर प्रकार की खांसी के लिए लाभप्रद है।

३९५-द्वितीय योग

विधि—१५ ग्राम काकड़ासिंगी को बारीक पीसकर मधु के साथ चने के बराबर गोलियां बना लें। एक गोली पानी या दूध में घोल कर दिया करें। दो चार दिनों में आराम हो जायगा।

३९६-बच्चों का अतिसार

विधि—काला नमक और सुहागा दोनों समान मात्रा में लेकर दोनों को अलग २ बारीक पीस करके रख छोड़ें। पहिले सुहागे को किसी कड़छी आदि में डालकर आग पर रखें। जब सुहागा पिघल जाये तब तुरन्त नमक डालकर किसी तिनका आदि से हिलाकर अच्छी तरह मिला लें। नीचे उतारकर बारीक करके शीशी में भर रखें। एक रत्ती से चार रत्ती तक की मात्रा बच्चों की आयु और बलाबल देखकर दिया करें।

३९७-दूसरा योग

विधि—बेलगिरी और काबली हरड़ का छिलका। दोनों को समान मात्रा में लेकर बारीक कर लें। आयु और बल का ध्यान रखकर एक ग्राम से तीन ग्राम तक की मात्रा दिया करें। आमाशय ठीक होकर सब प्रकार के दस्त बन्द हो जायेंगे।

३९८-अपाचनता

विधि—पीली हरड़ और बड़ी सुपारी दोनों को बराबर लेकर बारीक कर लें। जरूरत पड़ने पर एक से चार रत्ती तक की मात्रा थोड़े पानी में घोलकर पिलायें। पाचन क्रिया ठीक हो जायेगी।

३९९-चेचक तथा खसरा का अन्तिमोपचार

बच्चा पैदा होने के उपरान्त जब बच्चे की नाल काटी जाती है तब उसी समय बच्चे को पेट की तरफ लिटा दें। जब खून की कुछ बूंदें निकल चुकें

तब थोड़ा सा नोशादर बारीक पीसकर नाभि के अन्दर फूंक दें। जीवन भर के लिए ये दोनों रोग न होंगे।

४००-बाल रक्षक

बच्चों के सब रोगों के लिए एक मात्र अनुपम और अद्वितीय औषधि है। अब तक कम से कम तीन चार सौ बच्चों पर इसका अनुभव किया जा चुका है। बनाकर परीक्षण करें।

विधि—आवश्यकतानुसार सूखा आंवला लेकर खूब बारीक पीस लें। पानी के साथ रत्ती रत्ती की गोलियां बना लें। दोनों समय एक एक गोली पानी में घोलकर दिया करें।

४०१-नानी का नुसखा

यह ऐसा योग है जो सर्वत्र मिल जाने वाली एक चीज है और एक पैसे से अधिक की लागत नहीं आती। मेरे एक मित्र की पुत्री दो वर्ष से रुग्ण थी। कभी अतिसार तो कभी विबंध। कभी प्रवाहिका तो कभी अफारा इत्यादि आमाशय सम्बन्धी बीसियों रोग अड्डा जमाये हुए थे। हर प्रकार की डाक्टरी, वैद्यक चिकित्सा हो रही थी तथापि बालिका दिन प्रतिदिन कृशकाय होती जा रही थी। अन्त को यह अवस्था आ गई कि भूख बिल्कुल न लगती थी। कभी कुछ खा लिया तो चाहे वह कितना ही सुपाच्य खाद्य क्यों न हों, हजम नहीं होता था। हमारे मित्र उसके जीवन से निराश हो चुके थे। ऐसी दशा में उसकी नानी भी उसे देखने को आई और कुल हाल मालूम किया और फिर उसने निश्चय किया कि बच्ची के आमाशय में विकृति है। जब तक आमाशय ठीक न होगा रोग दूर नहीं हो सकता। नानी ने कहा कि बच्ची को थोड़ा सा (२—३ ग्राम) काला नमक एक चम्मच पानी में पकाकर पिला दो। ऐसा ही किया गया और उसके प्रभाव को देखकर आश्चर्य की सीमा न रही कि एक अत्यन्त साधारण सी वस्तु में यह गुण? बालिका के दस्त बन्द हो गए, खाया पिया पचने लग गया और दिन प्रतिदिन स्वास्थ्य लाभ करने लग गई।

नोट—आयु के परिमाण से ३ से ६ ग्राम तक काला नमक महीने दो महीने के बाद यदि पेट और आमाशय की शिकायत हो जावे, तो दे देने से पूरा लाभ हो जाता है। परीक्षा करके चमत्कार देखें।

विभिन्न रोगों पर योग

४०२—गर्मी के दाने

प्राय: वर्षा ऋतु में यह दाने बहुत हो जाया करते हैं। और थोड़ी सी धूप लगने से बड़ा कष्ट होता है। इसके लिए निम्न योग बड़ा गुणकारी है।

विधि—सोडा बाईकार्ब जो कैमिस्टों की दुकान से मिल जाता है, थोड़ा सा लेकर पानी में घोल करके दानों पर लगाया करें। या पर्याप्त पानी में डालकर स्नान किया करें। दो तीन बार के नहाने या लगाने से पूर्ण लाभ हो जाएगा। अनेकों बार का अनुभूत चुटकला है।

४०३-दूसरा योग

मुलतानी मिट्टी को पानी में घोल करके दानों पर लेप करें। पहली ही बार में आराम हो जायगा। अन्यथा दूसरी बार लगाने से दाने बिल्कुल न रहेंगे।

४०४-तीसरा योग

विधि—जल नीम छ: ग्राम और कालीमिर्च छ: ग्राम : दोनों को बारीक करके रत्ती रत्ती की गोलियां बना लें। पहिले एक जुलाब देकर, एक गोली प्रातः और एक गोली सायं को पानी के साथ दिया करें। गर्मी के दानों को दूर करने की अचूक दवा है।

४०५-कुक्षि गन्ध

बकरे के ताजा गुर्दे जिन पर से झिल्ली दूर न की गई हो, गर्म २ लेकर दोनों कुक्षियों में दवा लें। एक पहर तक दवाये रखें। जब गुर्दों का रंग नीला हो जाये तब फैंक दें। तदुपरान्त सफेद चन्दन और कपूर चार चार रत्ती लेकर थोड़े पानी में घोल करके दोनों कुक्षियों में मलें। दुर्गन्धि दूर होकर सुगन्धि आने लगेगी।

४०६-कच्छराली

विधि-घी क्वार का पत्ता इतना लें, जो कि कुक्षि में आ सके। इसको एक

तरफ से छीलकर उस पर फिटकड़ी और हल्दी तीन तीन ग्राम बारीक पीसकर छिड़कें और कछराली पर बांध दें। गांठ पिघल कर पूर्ण आराम होगा।

४०७-बिवाई

प्राय: यह शीत ऋतु में हो जाया करती है। इसके लिए एक सरल सा चुटकला प्रस्तुत कर रहा हूं।

विधि—साबुन को गर्म पानी में पीसकर लेई के समान बना लें। बिवाई में खूब अच्छी तरह भरकर ऊपर से हाथ मारकर साफ कर दें। रात भर लगा रहने दें। प्रातःकाल गर्म पानी से साफ कर दें। तीन चार दिन लगाने से बिवाई का निशान भी न मिलेगा।

४०८-सर्प विष निवारक

यह योग कई बार का अनुभूत है। और ईश्वरानुग्रह से हमें हर बार पूर्ण सफलता मिली है। अत्यन्त चिन्ताजनक दशा में भी इसने अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाया।

विधि—तम्बाकू की लकड़ी आवश्यकतानुसार लेकर राख बना लें। इसे दो दिन तक किसी मिट्टी के बर्तन में भिगो रखें। तीसरे दिन इसका स्वच्छ जल लेकर यथा विधि क्षार तैयार कर लें। बस औषधि तैयार है। बारीक पीसकर शीशी में रख छोड़ें। ज़रूरत के समय चार रत्ती से एक ग्राम तक की मात्रा पानी के साथ खिलायें और दंश के स्थान पर उस्तरे से पछ लगा-कर दो, तीन रत्ती के लगभग दवा मल दें। एक दो बार के खिलाने और लगाने से प्राय: आराम हो जाता है।

४०९-दूसरा योग

विधि—काले सर्प के काटे हुए रोगी को पूरे आठ जमाल गोटे और अन्य सर्प के काटे हुए रोगी को पांच जमाल गोटे खिलायें। यदि रोगी बेहोश हो जाये तो पानी में घिसकर थोड़ा सा कुचला रोगी के कण्ठ में टपकायें। सारा विष दूर होकर आराम हो जायगा।

४१०-सर्प विष संजीवनी

विधि—वस्मा दसग्राम और कालीमिर्च पांचग्राम दोनों को बारीक पीस करके रोगी को पिला दें। यदि रोगी मरणासन्न और बेहोश होगा तब भी होश में आ जायगा। दो घण्टे बाद पुनः इसी प्रकार पिलायें। आराम होगा।

विभिन्न रोगों के अनुभूत चुटकुले

४११-चित्रकूट की प्रसिद्ध श्वास (दमा) की औषधि

अपामार्ग की जड़ का चूर्ण १२ ग्राम, काली मिर्च डेढ़ अदद, जीरा स्याह डेढ़ अदद।

निर्माण विधि—सर्व प्रथम भाद्रपद अथवा माघ की शुक्ला १५ [पूर्णिमा] को उपवास (व्रत) करें, जितेन्द्रिय और शुचि होकर सफेद कपड़े पहन कर चन्द्रमा उदय होने पर अपामार्ग के क्षुपों को आमन्त्रित कर आवें। तत्पश्चात् प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में स्नानादि करके सफेद एवं पवित्र वस्त्र धारण कर मन में सर्व कल्याणकारी श्री भगवान शंकर एवं अपने इष्टदेव का स्मरण करके उत्तर मुख होकर भगवान धन्वन्तरी को नमस्कार करके आमन्त्रित क्षुपों की जड़ों का संग्रह कर लें। उपरोक्त जड़ों को छाया में शुष्क करके कूट छानकर चूर्ण कर लें। उपरोक्त विधि अनुसार तैयार किये हुए १२ ग्राम अपामार्ग की जड़ों के चूर्ण में डेढ़-डेढ़ अदद काली मिर्च एवं जीरा स्याह बारीक करके मिलादें। यह एक मात्रा है।

नोट :—(१) औषधियों के वजन में निर्माण करते समय लेशमात्र भी फर्क न होने दें।

(२) औषधि बनाने के लिये क्षुपों की जड़ों का संग्रह केवल उपरोक्त तिथियों को करें। ५—६ मास पूर्व संग्रह की हुई इस्तेमाल न करें। यह औषधि वर्ष में केवल दो बार सेवन कराई जाती है अर्थात आश्विन तथा फाल्गुन की शुक्ला १५ (पूर्णिमा) को। इन दोनों दिनों के अलावा औषधि खाने से लाभ नहीं होता। यदि किसी कारण एक बार दवाई खाने से लाभ न हो तो विश्वास रखते हुए ६ मास के बाद फिर खावें।

सेवन विधि—आश्विन अथवा फाल्गुन की शुक्ला १५ (पूर्णिमा) की रात्रि को ७—८ बजे १०० ग्राम बढ़िया पुराने चावल की एक किलो गाय के दुग्ध में खीर, मिट्टी, कलई या चांदी के बर्तन में मन्द मन्द अग्नि द्वारा तैयार करें। औषधि खीर में मिलाकर खीर को केले, ढाक, कमल के पत्ते पर या चांदी, सोने, कांसी के थाल में डालकर किसी पवित्र स्थान पर चन्द्रमा की

चांदनी में रख दें। चार पांच घण्टे पश्चात शुद्ध होकर रोग दूर होने की ईश्वर से प्रार्थना करके मन में यह दृढ़ विश्वास करके कि इस औषधि से मुझे अवश्य आरोग्यता प्राप्त होगी, अपने इष्टदेव का स्मरण करके औषधि मिश्रित खीर खालें। ईश्वर की कृपा से अवश्य लाभ होगा। यह सहस्रों रोगियों पर परीक्षित है। यह टोटका १६०४ ई० में मेरे पितामह स्वर्गीय श्री पं० दयाराम जी शर्मा वैद्य शिरोमणि को चित्रकूट के एक सिद्ध महात्मा की कृपा से प्राप्त हुआ था। तब से प्रत्येक वर्ष सैकड़ों रोगियों को मुफ्त बांटी जाती है। इससे धनोपार्जन नहीं करना चाहिये। बल्कि यथाशक्ति मुफ्त बांटकर यश एवं पुण्य के भागी बनें। यह औषधि चित्रकूट पर बांटी जाती है।

अपथ्य—एक वर्ष तक मछली का मांस, कांजी, दही, राई का अचार, उड़द की दाल, प्याज, लहसुन, तम्बाखू, शराब तथा दूसरी वायु पैदा करने वाली वस्तुयें सेवन नहीं करनी चाहिये।

पथ्य—सादी खुराक खावें, ब्रह्मचर्य से रहें, प्रातःकाल टहलें।

नोट :-१—औषधि में विश्वास न रखने वाले एवं नास्तिक रोगी इसको सेवन न करें।

२—औषधि खाने वाले दिन उपवास (व्रत) करें तथा भगवान का भजन करें।

३—उपरोक्त प्रत्येक तिथि को सेवन करने अथवा कराने के लिये नई औषधि तैयार करें। पुरानी तैयार की हुई इस्तेमाल न करें।

४—जो इससे धनोपार्जन करेंगे उनको औषधि से लाभ न होगा एवं पाप के भागी होंगे। ऐसा योग प्रदाता महात्मा का आदेश है।

५—गर्भवती स्त्री को यह औषधि नहीं देनी चाहिए, उनको हानि करती है।

—राजवैद्य विश्वनाथ शर्मा

४१२-रीठे के चुटकुले

रीठा प्रायः गर्म एवं रेशमी कपड़े धोने के काम आता है, बड़े काम की वस्तु है।

रीठे (फल) के ऊपर के छिलके (वक्कल) को सुखाकर बारीक कूट पीस कर पानी की सहायता से चने के परिमाण गोलियां बनालें।

उपदेश—१-१ गोली प्रातः, मध्यान्ह एवं सायंकाल को दही में लपेटकर खाने और नमक एवं गरम वस्तुओं का परहेज करने से कठिन से

कठिन आतशक एवं अन्य रक्त विकार ६–७ दिन सेवन करने से दूर हो जाते हैं। हजारों रोगियों पर स्वयं आजमूदा है।

खूनी बवासीर में ताजे जल से एवं बादी बवासीर में तक्र (मट्ठे) से १–१ गोली प्रातः, मध्यान्ह तथा सायंकाल खाने से आश्चर्यजनक लाभ होता है। ४० दिन सेवन करने से रोग समूल नष्ट हो जाता है।

४१३-सर्प दंश

रीठे के फल में से निकली हुई गोली के ऊपर के काले छिलके को कूटकर कपड़छान करके रख लें तथा काली गोली के अन्दर की जरद गिरी, आक का दूध एवं हुक्के की नली का मैल समभाग मिलाकर डिबिया में भर कर रख लें। जिस स्थान पर सर्प ने काटा हो वहां नश्तर लगाकर उपरोक्त डिबिया वाली औषधि भर दें और काले छिलके का उपरोक्त चूर्ण ६ ग्राम २५० ग्राम पानी में मिलाकर पिला दे। जब तक जहर दूर न हो, प्रत्येक १–१ घण्टे पश्चात पिलाते रहें। इससे कै और दस्त होंगे। दंश स्थान से खून बहने लग जायेगा। घबरायें नहीं। विष खून, वमन एवं दस्तों द्वारा निकल जायेगा। प्यास लगे तो पानी न दें बल्कि उपरोक्त चूर्ण मिश्रित पानी देवें और रोगी को सोने न दें, अन्यथा रोगी मर जायेगा। ५–६ घण्टे पश्चात (जबकि विष दूर हो जाये) जख्म को नीम के पानी से धोकर कांसी के बर्तन में जल द्वारा १०० बार धुले हुए १० ग्राम मक्खन में ५ ग्राम फुंका हुआ जस्त मिलाकर लगा दें तथा रोगी जो कुछ खाने को मांगे, दे देवें। खाकर सो जायेगा। आशा है रोगी दो दिन तक सोता रहेगा। तीसरे दिन ठीक हो जायेगा। यदि वह पूछे कि मुझे क्या हो गया था तो सर्पदंश के विषय में कुछ न बतावें। इससे भयंकर सांप का काटा भी अच्छा हो जाता है मामूली सांप का तो कहना ही क्या ?

४१४-रतौंधी

गाय के गोबर के रस में पीपल घिसकर सलाई द्वारा प्रातः सायं प्रति दिन, ६–७ दिन लगातार नेत्रों में डालने से नक्तान्ध अर्थात रात को कम दिखाई देने का रोग अवश्य अच्छा हो जाता है एवं आंखों की ज्योति बढ़ती है। परीक्षित है।

४१५-मलेरिया

फिटकरी को भूनकर गिलोय के काढ़े की सहायता से झड़बेरी के परिमाण की गोलियां बनाकर धूप में सुखा लें। सौंफ ४ ग्राम, तुलसी के

पत्ते ११ अदद, काली मिर्च ५ दाने को चाय की तरह उबाल कर दूध एवं खांड मिश्रित करके उपरोक्त १ गोली खाकर, ऊपर से पीलें। इस प्रकार दिन में तीन वार सेवन करें। मलेरिया, तेईया, चौथिया, इकतरा, जाडा देकर आने वाले बुखारों के लिये अमृत तुल्य है। चढ़े हुए बुखार में देने से पसीना लाकर बुखार को उतार देती है और फिर ज्वर नहीं होता। कुनीन की तरह खुश्की नहीं करती। मैं स्वयं मलेरिया के मौसम में सैंकड़ों रोगियों को रोजाना उपरोक्त औषधि सेवन कराता हूं। बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुई है। बनाकर लाभ उठावें।

४१६-दाद का अनुभूत चुटकला

डाक्टर श्री गणपतिसिंह जी वर्मा
सम्पादक "रसायन" देहली।

आपकी पुस्तकें तथा "रसायन" पढ़ते पढ़ते हमारे विचारों में कुछ परिवर्तन सा हो गया है। इसलिये इस पत्र के साथ चार योग, जो हमारे अपने आजमूदा हैं, "रसायन" में प्रकाशनार्थ भेंट किये जाते हैं। जिस योग का जिस अंक से सम्बन्ध हो उसी में ये छापे जा सकते हैं। इनमें से दो (वायशूल और दाद) योग हमारे परम प्रिय गुप्त योग हैं। इनसे हमने अनेक रोगी अच्छे किये हैं तथा हजारों रुपया कमाया है। योग की कथा इस प्रकार है :—

मेरी अवस्था १५ वर्ष थी, मैं उस समय ऐन्ट्रेंस क्लास में पढ़ता था। मेरे पका दाद हो गया था जिसने उग्र रूप धारण कर लिया था। टूंडी से नीचे जहां पर धोती बांधी जाती है वहां से लेकर अण्डकोष के नीचे तक दोनों टांगों के ऊपर के हिस्सों तक फैला हुआ था। बडी भारी खुजली चलती थी। और खुजाते खुजाते रो पड़ता था। कष्ट के देखने वालों को भी देखने में दुख होता था।

मेरे पिताजी एक दिन बाहर मरदाने बैठकखाने में बैठे हुए थे कि सुबह के वक्त दो सज्जन उनसे मिलने आये जिनमें एक तो स्कूल के हैडमास्टर थे और दूसरे एक साधु महात्मा थे। मास्टर साहब ने पिताजी से पूछा कि डिप्टी साहब आप आज सुस्त कैसे बैठे हैं? उन्होंने मेरी तरफ इशारा करके कहा कि जब यह रोता है तो मुझको बड़ा दुःख होता है। यह दिन रात रोता है। बहुत दवाइयां की हैं मगर इसका दाद बढता जाता है। घटने का नाम ही नहीं लेता। बड़ी परेशानी है। देर तक यही जिक्र होता रहा तो उन साधु महात्मा ने मुझको बुलाया और मेरा दाद देखकर उनको एक बड़े

जोर की फुरफुरी आई और कहा कि रोग बहुत बढ गया है। मुझको सम्बोधन करके कहा कि बेटा अगर कष्ट सहन कर लो तो दवा मैं तुमको बता सकता हूं जिसके एक बार ही लगाने से दाद जाता रहेगा परन्तु दवा लगेगी और दुःख भी होगा। अगर कड़ा जी करके कष्ट सहन करने का वायदा करो तो मैं तुमको दवा बता सकता हूं। पिताजी ने मुझसे पूछा कि बोलो एक दिन का कष्ट मंजूर करते हो या बहुत दिन इस रोग में पड़े रह कर कष्ट सहते रहना पसन्द करते हो। साधु ने कहा कि बस सिर्फ एक दिन का कष्ट और सदा का सुख है। मैंने कहा कि अगर एक ही दिन में कष्ट निवारण हो जाय तो मैं खुशी से ऐसा कष्ट सहन करने को तैयार हूं। साधु ने कहा था कि योग की सब औषधियों को अलग अलग खरल में पीसकर और फिर सबको मिलाकर खरल में थोड़ा थोड़ा नींबू का रस डाल डाल कर चौंसठ पहर तक बराबर खरल किया जाय, आदमी बदलते रहें और खरल करने वालों का हाथ रुकने न पावे। पिताजी ने दवाइयां मंगवाईं और पीसने का प्रबन्ध किया गया गया। उसे दिन भर और रात भर लगातार खरल करते रहे। पिताजी तो उसी शाम को दौरे पर चले गये। मुझे तकलीफ ज्यादा थी। इसलिए मैंने मुनासिब समझा कि ८-१० घण्टे तक तो दवा घुट पिस चुकी ही है, एक बार की जगह अगर दो तीन दिन में दो तीन बार भी लगा ली जाय तो क्या हर्ज है, इसलिए आज अधबनी दवा ही लगा लेने में क्या हर्ज है। ऐसा विचार करके मैंने अपनी माता जी, घर वालों और नौकरों से भी कह दिया कि मैं दवा लगाता हूं। यह दवा लगेगी बहुत, तुम मेरे हाथ पैर चारपाई की पट्टियों से बांध दो और अगर मैं रोऊं, चिल्लाऊं तो भी तुम मेरे हाथ पैर मत खोलना। सबों ने वायदा कर लिया। मैंने दवा लगाई और पूरे दाद पर खूब अच्छी तरह खूब गाढ़ी गाढ़ी लगा दी। फिर मैं चारपाई पर लेट गया और हाथ पैर बंधवा लिए। लगभग आधा घण्टा बाद जब दवा शरीर में पहुँची तो चुनमुनाहट सा शुरू हुआ और धीरे धीरे तकलीफ बढ़ने लगी। शायद घण्टा डेढ़ घण्टा तक दवा लगी रही होगी कि अब दुख बहुत बढ़ने लगा। मैं बहुत रोया, चिल्लाया, पुकारा और बार बार अपनी माता जी और घर वालों तथा नौकरों से भी कहा कि मुझको खोल दो वरना मैं मर जाऊंगा परन्तु मेरी बात किसी ने नहीं मानी। क्योंकि सबको यह मंजूर था कि मेरा दाद अच्छा हो जाय और सदा को सुख हो जाय। अलावा इसके मैं खुद ही कह चुका था कि अगर मैं कहूं तो भी मुझको मत खोलना। जब मैं बहुत जोर से रोया और चिल्लाया तो मोहल्ले के सब लोग जाग पड़े और हमारे मकान पर आकर सब हाल देखा। मालूम किया तो सबों ने कहा कि

लडके को तकलीफ ज्यादा है। अब इसके हाथ पैर खोल देने चाहियें, कल फिर दवा लगा लेगा। थोड़ी थोड़ी देर कई दिन तक भी दवा लगाई जाय तो क्या हर्ज है। ऐसा ख्याल करके सबकी राय से मेरे हाथ पैर खोल दिये गये। सब लोग चले गये। जब हाथ खुल गए तो मैंने खूब जी भर के दाद को खुजाया और थोड़ी देर बाद मुझको नींद आ गई। सुबह को जब देखा तो पापड़ उखड़ गया था और शरीर पर दाद का पता भी नहीं था। फिर दवा नहीं लगाई। मैं बिलकुल अच्छा हो गया। तब से आज तक (यह लगभग सत्तर वर्ष की बात है) मुझको फिर कभी दाद नहीं हुआ है। मैंने इस दवा की गोलियां तैयार कराकर सैंकड़ों मनुष्यों को लाभ पहुँचाया है। आज इस गुप्त योग को "रसायन" के पाठको के उपकारार्थ आपकी भेंट किया जाता है।

योग—गन्धक आंवलासार, भैंसा गुग्गल, नीला थोथा और सुहागा सब समभाग लें। खरल में डालकर पहले अलग अलग कूट लें। फिर सबको मिलाकर कूटें और नींबू का रस डालते जायें तथा रगड़ते जायें। साधु ने तो चौंसठ पहर घोटने को कहा था परन्तु मैंने तो आठ पहर से ज्यादा कभी नहीं घुटवाया। इतने पर भी एक ही बार के लगाने से दाद जाता रहता है।

यह योग निहायत अच्छा है, कभी फेल नहीं होता है परन्तु अमीर लोग और कोमल प्रकृति वाले शायद इतना कष्ट सहन करना पसन्द नहीं करेंगे। जो एक ही दिन में छुटकारा चाहें और कष्ट सहन करने की हिम्मत रखते हों उनके लिये यह परमोपयोगी योग है जो चाहें बनाकर लाभांवित हों।

—डा० गुलाब शंकरदेव शर्मन

छः अनुभूत चुटकले

श्री "रसायन" के पाठकों के साथ आज मेरा जो सम्पर्क हो रहा है, उसका सारा श्रेय महानुभाव श्रीयुत डा० गणपतिसिंह वर्मा को है। कुछ समय पूर्व मैंने श्रीयुत वर्मा जी को प्रश्न किया कि दीर्घ चिकित्साओं के बजाय नगण्य दीखने वाले चुटकलों यानी टोटकों के बारे में आपका क्या ख्याल है? क्या आपकी कलम इस ओर भी चल सकती है? बस फिर तो देर ही क्या थी? गुजराती में कहावत है कि "तेजी न टकोरो" अर्थात तेज घोड़े को इशारे की ही जरूरत होती है। श्रीयुत वर्मा जी ने तुरन्त ही प्रत्युत्तर दिया कि ऐसी ही पुस्तक प्रकाशित कर रहा हूं, आप भी अपना संग्रह या लेख लिखकर भेजिये। अब तो मेरे सामने धर्म सकट जैसा प्रश्न आकर के खड़ा हुआ। क्योंकि मैं तो एक नम्र अभ्यासी हूं और फिर भी मेरी इस शास्त्र में

क्या प्रवृत्ति ? अध्यात्मिक या यौगिक विषय होता तो लिखता। अतः मैंने तुरन्त ही लिख दिया कि संग्रह खोजने का इतना अवकाश नहीं है और लिखने की अपेक्षा पढने की ही इच्छा है। परन्तु जिन्होंने आयुर्वेद का उद्धार और सेवा ही अपना आदर्श बना रक्खा हो वे श्री बर्मा जी थोड़े ही मानने वाले थे। तुरन्त ही पत्र आया कि छोटा सा भी लेख या सग्रह आना चाहिए। अतः उस धर्म स्नेह से बाध्य होकर के विद्वान पाठक समुदाय को "पत्र पुष्पं फलंतोय" के न्याय से यह थोड़ी सी भेंट दे रहा हूं।

४१७-रक्तस्राव, किसी भी प्रकार का घाव या चोट लगने में

घृत और कर्पूर समपरिमाण (कर्पूर कम होगा तब भी चलेगा) खूब मिलाकर किसी भी प्रकार के आघात के स्थान पर लगाने से वेदना तत्काल दूर हो जावेगी और खून भी गिरता होगा तो वह भी बन्द हो जायेगा। दो तीन बार लगावें।

यह प्रयोग डाक्टर राखलदास जी राय काशी निवासी का कई बार का अनुभूत है और भी एक दो सज्जनों ने डाक्टर साहब से पाकर कई बार अनुभव किया हुआ है।

४१८-रतौंधी पर

सोना को (बंगाली नाम है) जिसको हीडी या अगजोगनी भी कहते हैं, एक लेकर पके केले के भीतर रखकर 'रतौंधा' के रोगी को तीन दिन तक सायंकाल खिलावें। रतौंधा दूर हो जावेगा। यह भी उपरोक्त डाक्टर साहब का अनुभूत प्रयोग है।

४१९-न पकने वाले तथा न बहने वाले फोडों पर

अंघाहुली पीसकर घी के साथ भून लो। हलुवा जैसा बन जाने पर ऊपर बताए हुए कैसे ही फोड़ों पर बांध दें। सिर्फ दो तीन बार बांधने में ही आराम हो जायेगा। स्वतः पककर बह जावेगा। यह भी अनुभूत है, अति विश्वासनीय व्यक्ति से प्राप्त हुआ है।

४२०-दम, श्वास एवं खांसी

दूधी कई प्रकार की होती है—(१)जमीन मे चिपकी हुई हरी, (२) लाल (३) जमीन से बीता (दो बीता भी) तक ऊंची उठी रहती है। जिस पर बारीक २ दानेदार गुच्छे लग जाते हैं। इसी दूधी को मूलसमेत १२ ग्राम लें। दुध ही के साथ खूब बारीक पीसकर २५०-३०० ग्राम दूध के साथ प्रातः एक बार लें। सप्ताह या दो सप्ताह तक लेते रहें। अदभुत परिणाम

दिखाने वाला यह प्रयोग है। अभी ५ व्यक्तियों पर इसका प्रयोग किया गया था जिसमें चार को पूर्ण लाभ पहुंचा है।

रवि या मंगलवार से लेना प्रारम्भ करें और अगले दिन बहुत ही हल्का भोजन करें।

४२१-आंख के माड़ा पर

जमीन से चिपकी हुई लाल दूधी, उसका दूध सिर्फ एक बूंद सलाई पर लेकर माड़ा वाली आंख में लगायें। सिर्फ एक (ज्यादा से ज्यादा तीन) बार लगाने के दर्द को आराम हो जायेगा।

४२२-एक तान्त्रिक टोटका

दारूहल्दी और सिध्दार्थ (सरसव-सफेद सरसब हो तो सर्व श्रेष्ठ) सम मात्रा में मिलाकर शुक्लपक्ष के पुष्यार्क में धार्मिक पूजन पूर्वक देने से (तावीज या पोटली रूप में) धनप्राप्ति, चिन्तानिवारण, भूत प्रेतादि बाधा अभाव।

इस लेख को पूर्ण करने के पूर्व एक सूचना दे दूं, कि मनुष्य जो भी तकलीफ या कष्ट पाता है, वह अपने पूर्वकृत पापकर्मों के अनुसार ही पाता है अतः जहां तक वह पापोदय तीव्र रूप से चलता होगा वहां तक संसार का कोई भी उपाय (सयम, तप तथा योगनिष्ठ महात्माओं का आशीर्वाद या उत्कृष्ट धर्म भावनाओं को छोड़कर) काम में नहीं आवेगा। हां उस पापोदय की मर्यादा पूरी हो रही हो तो उस समय ऐसे अनुभूत प्रयोग होते हैं उनको अनुभव में लाने का भी दिल होता है। उनकी विधिपूर्वक क्रिया भी हो जाती है, और प्रयोग करने से रोग व्याधि या तकलीफ को भी आराम हो जाता है। अतः इन सब प्रयोगों की औषधि निमित्त औषधि है बाकी प्रधान। सर्व प्रधान एवं सर्वश्रेष्ठ औषधियों, धर्मभावना, त्याग, तपश्चर्या आदि आत्मा के स्वभाविक गुणों का विकास ही है, जिनके द्वारा सब रोगों का मूल इस भवरोग का ही नाश हो जावे और अपनी आत्मा स्वयं ज्योति रूप अवस्था को प्राप्त होवे।

श्री रसायन परिवार व पाठक इस सर्व श्रेष्ठ भव्य एवं महान आरोग्य की ओर आगे बढ़ें यही शुभाभिलाषापूर्वक ओ३म् शान्ति। (मुनि कनक विजय महाराज)

४२३-हैजा विशूचिका पर

सौंठ का चूर्ण ३ ग्राम और कपूर (देशी) चार रत्ती लेकर दोनों को एकत्र खूब खरल कर (लगभग एक घन्टा खरल करें) इतनी दवा के ७ भाग

कर लें। रोगी को आध आध घन्टे से १-१ खुराक देवें। वमन और दस्तों के बन्द हो जाने पर फिर इसे न देवें। शीघ्र ही लाभ होता है।

४२४—अरहर के पत्ते १२ ग्राम लेकर ६० ग्राम जल में पीस छानकर १–१ घन्टे में पिलाने से भी लाभ होता देखा गया है।

४२५-बाय गोला (नलाश्रित वायु) पर

अण्डी के हरे पत्ते १२ ग्राम को आध किलो जल में औटायें। चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर उसमें २ से ४ रत्ती तक जवाखार मिला पिलावें। यह एक मात्रा है। इसी प्रकार प्रातः साय सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है। यदि उदर में वात कफ जन्य शूल हो या आध्मान (अफारा) होवे तो उक्त एरण्डपत्र-क्वाथ में १ ग्राम तक काला नमक या सैंधा नमक मिलाकर पिलाने से शर्तिया लाभ होता है।

४२६-सर्व प्रकार के उदर रोगों पर

सैंधा नमक १२ ग्राम और हींग (घृत में भुनी हुई) ३ ग्राम दोनों को महीन पीस रक्खें। मात्रा दो या तीन ग्राम तक गो मूत्र ५० ग्राम में मिलाकर सेवन करायें। तेल, खटाई, गुड़, दही और लाल मिर्च से परहेज करें।

४२७-कामला पर

खांड या बूरा २५ ग्राम को राई ३ ग्राम के साथ खरल करें। जब गोली सी बनने लगे तब उसकी ४ गोलियां बना, पके केले के गूदे के साथ (१ गोली के लिये एक केला काफी है) प्रातः सायं खावें। दो दिन मे ही कामला विशेष कर उष्णता या पित्त विकृति से उत्पन्न कामला का नाश होता है।

४२८-शुष्क कास (खांसी पर)

मूली को चाकू से काटकर पतली २ चकतियां बना लोह शलाका में पिरो लेवें। दूर दूर पिरोना चाहिए। फिर आग पर, ऊंचा पकड़कर सेकें। जब ये काफी नर्म हो जाय तब उन्हें निकालकर पीसे हुए सैंधा नमक पर दोनों ओर से खूब दबायें, जिससे नमक अच्छी तरह खूब मिल जाये। पुनः उन्हें शलाका में पिरो कर तीक्ष्ण आग पर सेकें, जब नमक खुश्क हो जाय और उनमें पापड़ के समान कड़ापन आ जाये तब उन्हें गरम दशा में ही खरल में डाल खूब कूट डालें। लोच आ जाने पर चने जैसी गोलियां बना लेवें। इन गोलियों को मुख में धारण करने से कफ ढीला होकर झरने लगता है। बुखार की दशा में भी दे सकते हैं। किन्तु कफ के ढीला होने पर ज्वर की दशा में इसे बार बार नहीं देना चाहिए क्योंकि ज्वर के विकृत हो जाने का भय है।

४२९-अपस्मार आदि वात व्याधि पर

ग्वार पाठे का रस एक हिस्सा और शहद दो हिस्सा दोनों को शीशी में भरकर ५ या ६ दिन तक धूप में रक्खें। फिर छानकर दूसरी शीशी में भर रक्खें। इसकी रोगी के नाक में ५ या ७ बूंद की नस्य देवें। अपस्मार (मृगी) तथा कंप रोग दूर होवे। इसकी नस्य से सिर पीड़ा भी शीघ्र नष्ट होती है।

४३०-चोट लगने पर

यदि किसी हाथ या पैर में कोई हथियार लग जावे, पिच जावे या कट जाय, खून निकलता हो तो तत्काल मिट्टी के तेल में कपड़ा तर कर उसके ऊपर बांध देने से तुरन्त खून बन्द हो जायगा, दर्द बिल्कुल न रहेगा। दो बार रोज ऊपर बंधे हुए कपड़े पर मिट्टी का तेल डालते रहने से वह स्थान पूर्ववत चंगा हो जावेगा।

४३१-बालकों के जुकाम, कब्ज, प्लीहा पर

कायफल चूर्ण १ रत्ती और खाने का सोडा (सोडा बाय कार्ब) ४ रत्ती एकत्र मिला शहद के साथ चटाने से शीघ्र लाभ होता है।

४३२-प्रमेह और प्रदर

गुलजवंश के गन्डे को काट छाया में सुखा लें। करीबन खुश्क होने के समय खरल में डाल घोटकर जगली बेर परिमाण की गोली बना दूध के साथ सेवन करने से ३ से ५ किलो तक दूध हजम होता है। पुरुषों का प्रमेह व स्त्रियों के प्रदर की एक मात्र अचूक औषधि है। आठ दिन स्त्री पुरुष में दानों वीर्य व प्रदर सम्बन्धी तमाम दोषों से निजात पाते हैं।

४३३-जुकाम के लिए

हल्दी और चीनी मिलाकर आग पर डाल उसकी धूनी लेने से जुकाम शीघ्र अच्छा होता है।

४३४-द्वितीय योग

इक्कीस काली मिर्च पीसकर उसे तीन ग्राम शहद में मिलाकर (यह एक मात्रा है) सुबह शाम तीन दिन चाटने से जुकाम जाता रहता है।

४३५-तृतीय योग

पोस्त शर्बत, और बनफशा शर्बत दोनों मिलाकर (जल न डालें) २५ ग्राम मात्रा में दो तीन दिन तक चार बार पीने से जुकाम जड़ से जाता रहता है।

४३६-चतुर्थ योग

बनफशा, मुलठ्ठी, उस्तखद्दूस ६—६ ग्राम, गेहूं का छानस १० ग्राम गुड़ १० ग्राम। इनका काढा एक दिन में दो बार पीने से जुकाम ठीक हो जाता है। (१ किलो पानी में पकावें, १२५ ग्राम रह जावे तब छानकर सेवन करें)।

४३७-दुखती आंखों के लिए

आक के दूध को बारह बजे के बाद सायंकाल तक दो तीन बार पैर के दोनों अंगूठों के नाखूनों पर खूब लगा दीजिए। दर्द तो उसी दिन जाता रहेगा। लाली दो तीन दिन में जाती रहेगी। यदि एक आंख दुखती हो तो उस आंख की ओर वाले पैर के अंगूठे पर ही आक का दूध लगाया जावे।

४३८-पायोरिया नाशक मंजन

फिटकरी भुनी हुई, बबूल की कच्ची फलीयां छाया में खुश्क की हुई, भुनी हुई छोटी हरड़, कम भुना हुआ बहेडा, गेरू, मोलसिरी की छाल का चूर्ण उपरोक्त ३०—३० ग्राम, लौंग १५ ग्राम, कपूर दस ग्राम, सैंधा नमक २० ग्राम, समुद्र झाग २० ग्राम, सफेद गोल मिर्च ५ ग्राम, नीला थोथा भुना ४ रत्ती, अकरकरा १५ ग्राम, पीपरमेंट ५ ग्राम, मजीठ २० ग्राम, सबको पीसकर चूर्ण बना नित्य प्रातः सायं लगातार ६ मास मंजन करते रहने से पायोरिया सदा के लिए जाता रहेगा।

४३९-द्वितीय योग

फिटकड़ी आवश्यकतानुसार लेकर तवे पर रखकर नीचे आंच जलावें फिटकरी के समभाग सिरका अंगूरी का चोया देते जावें। जब खुश्क हो जावे तब उसे पीसकर दांतों में मंजन की तरह इस्तेमाल करने से दांतों के सब विकार शांत होते हैं।

४४०-तृतीय योग

नोशदर सोंठ, हल्दी, नमक इनको कूट पीसकर सरसों के तेल के साथ मंजन करने से ३–४ मास के प्रयोग से पायोरिया जाता रहता है।

४४१-बहरेपन के लिए

आक का पका हुआ पीला पत्ता लेकर कपड़े से साफ कर उसे सरसों के तेल से चुपड़कर अग्नि पर गरम कर किसी बरतन में निचोड़ें और रूई के फाये से दो चार बूंद कान में प्रातः सायं डालते रहने से कुछ दिनों में बहरापन जाता रहेगा।

४४२-कान बहने पर

कान को किसी डाक्टर से अच्छी तरह साफ करा लें। प्याज, लहसुन को सरसों के तेल में जला लें। उस तेल की चन्द वून्द नीमगरम प्रातः सायं कान में डालने से फायदा हो जायेगा।

४४३-नींद न आने पर

तिल का तेल ६० ग्राम और कपूर १ ग्राम। तेल को गरम कर उतार लें और फिर उसमें कपूर मिला ठण्डा होने दें। इस तेल की पैरों के तलुओं में खूब मालिश करें। नींद खूब आवेगी।

४४४-दमा के लिये

शौचादि से प्रातः निवृत होकर १ छोटे वताशे में हलकी आधी वून्द आक के दूध को डालकर निगल जावें। आध घण्टे बाद जी मिचलावेगा और वमन होगी। कुछ वेचैनी भी होगी। घबराने की कोई जरूरत नहीं। कफ वाहर निकल जाने पर तवीयत हल्की हो जावेगी। चार दिन इसी तरह करने के वाद ५-६ दिन नागा करें।

४४५-बुखारों के लिये

काली मिरच और तुलसी के पत्ते वरावर पीसकर उड़दके वरावर गोली वनाकर दिन में ३ वार दो दो गोलीयां दूध या गरम जल के साथ खाने से ज्वर जाता रहेगा।

४४६-दूसरा योग

नीम की छाल १२५ ग्राम आधा किलो पानी में उबालें। जब १२५ ग्राम पानी रह जावे तव उसे कपड़े में से छानकर उसमें शहद या मिश्री मिलाकर पिला दें और कपड़ा ओढकर सो जावे। थोड़ी देर में पसीना आकर बुखार उतर जावेगा। दूसरे दिन भी इसी प्रकार दिया जा सकता है।

४४७-रक्तशोधक

प्रतिदिन १० ग्राम घी में आठ दस काली मिरच तल कर मिरचों को निकाल देवें और घी को रोटी या साग दाल में १ मास तक सेवन करने से रक्त शुद्ध और शरीर पुष्ट होता जाता है।

४४८-ग्रीष्म ऋतु में

मेंहदी के हरे पत्ते ५ ग्राम रात्रि को १०० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातःकाल २५ ग्राम मिश्री मिलाकर व घोटकर नित्य पीते रहें। १मास में रक्त शुद्ध और शरीर पुष्ट हो जाता है।

४४९-दाद खाज के लिए

राल, गंधक, सुहागा को बराबर लेकर पानी या निम्बू के रस में घोट कर दाद पर धीरे २ मलिये। कुछ दिनों में दाद जड़ से जाता रहेगा।

४५०-नासूर के लिए

मरे हुए मनुष्य की जली हुई हड्डी को पीसकर कपड़छान कर लें और नासूर पर छिड़क दें। चन्द दिनों में बिगड़े से बिगड़ा व पुराने से पुराना नासूर ठीक हो जाता है।

४५१-एक्जीमा के लिए

किसी रजस्वला के रक्त में कपड़ा तर किया हुआ सुखाकर उसे जलाकर राख कर लें। सरसों के तेल से एक्जिमा चुपड़कर ऊपर इस राख को छिड़कें। एक्जीमा शीघ्र दूर होगा।

४५२-मुंह पर कील निकलने पर

छुहारे की गुठली सिरके में घिसकर मुंह पर लगावें और थोड़ी देर बाद मुंह साबुन से धो डालें। कई दिन तक ऐसा करने से मुंहासे अच्छे हो जावेंगे।

४५३-द्वितीय योग

बड़ के पीले पत्ते, लालचन्दन, कुठ इन सबको पीसकर पानी के साथ उबटन करने से मुहांसे ठीक होते हैं।

४५४-श्वेत कुष्ट के लिए

१२ ग्राम बावची को बारीक पीसकर उसे २५ ग्राम गुड़ के शर्बत में मिलालें और उसमें तांबे के दो चार पैसे डाल दें। फिर रूई से सफेद दागों पर लगावें। कुछ ही दिनों में श्वेत कुष्ट निःसन्देह जाता रहेगा।

४५५-मन्दाग्नि के लिए

हरड जोकि नई और बड़ी हो, चिकनी व भारी भी हो, पानी में डालने से डूब जावे और भार में १२ ग्राम से अधिक हो। ऐसी हरड़ को पीसकर उसका चूर्ण १ ग्राम २ ग्राम गुड़ के साथ नित्य भोजन के बाद नियमपूर्वक खाने से मन्दाग्नि जाती रहेगी।

४५६-द्वितीय योग

१ बोतल पानी लेकर उसमें १२ ग्राम अनबुझ चूना पीसकर डाल। दिन में ३—४ बार हिलाते रहें। दूसरे दिन उसका मक्कत्तर लें, भोजन के

वाद १२० ग्राम पानी में यह चूने का १२ ग्राम पानी मिलाकर पीवें। कुछ ही दिनों में मन्दाग्नि जाती रहेगी।

४५७-कब्ज दूर करने के लिए

सत्यानाशी की जड़ ६ ग्राम, काली मिर्च ५ दाने २५० ग्राम पानी में पीसकर पीने से कोष्ठवद्धता नष्ट होती है।

४५८-द्वितीय योग

भोजन के वाद ३ ग्राम आंवले का चूर्ण फांक लीजिए। आमाशय पुष्ट होता है। शौच वन्धा हुआ होगा।

४५९-स्थूलता (मोटापा) नाशक योग

दिन में दो तीन वार जब भी पानी पिया जावे, उसे गरम करके और उसमें २५ ग्राम शहद मिलाकर पीयें। पानी एक वार में ६० ग्राम से अधिक न हो। दो तीन मास में मोटापा ढल जायेगा।

४६०-शरीर को मोटा करने के लिए

जौ को पानी में भिगोकर और फिर कूटकर छिलका उतार लें और सुखाकर दरदरा दलिया वना लें फिर उसे दूध में चावल की जगह डालकर खीर वनाकर खायें। दो मास में शरीर काफी मोटा हो जावेगा।

४६१ कमर दर्द के लिए

छुहारे की गुठली निकालकर उनमें गूगल भर दीजिए और छुहारे के ऊपर आटे का मोटा लेप करें। फिर आग में लाल करें। पकने के वाद छुहारा व गूगल को कूट कर ४—४ रत्ती की गोली वनावें। प्रातः सायं दूध के साथ एक एक गोली सेवन करें। हर प्रकार के दर्दों के लिए अकसीर है।

४६२-दस्त बन्द करने के लिए

खजूर की गुठली जलाकर उसका दो ग्राम चूर्ण दिन में २—३ बार खाने से दस्त बन्द होते हैं।

४६३-तिल्ली के लिए

कुछ दिनों जामुन का सिरका पीने से तिल्ली ठीक हो जाती है।

४६४-मरोड के लिए

१ साबत वेल फल में १ ग्राम अफीम डालकर तंदूर में पका लें। जो गूदा निकले उसके वरावर सालव मिश्री मिलाकर ७ खुराक वना लें। हर प्रकार के मरोडे को तीन दिन में आराम होता है। खाने को दही चावल दें।

४६५-तिल्ली का एक दिन का प्रयोग

तिल्ली चाहे कितनी ही क्यों न बढ़ गई हो और डाक्टरों से बहुत मुश्किल से भी ठीक न होती हो, वह इस क्षुप के उपयोग से एक ही दिन में ठीक हो जाती है। मैंन क्षुप, जिसके पत्ते हाथी के कान की तरह बड़े होते हैं और अरवी के पत्तों के सदृश्य होते हैं। जिसका एक पत्ता उन पशुओं को खिलाया जाता है जो कि गर्भयुक्त नहीं होते। इसके एक पत्ते से पशुओं में गर्भधारण हो जाता है। इसकी डंडी का १ चम्मच पानी गले में सीधा उतार दिया जाता है। सेवन करते समय मुंह व जिव्हा पर न लगना चाहिए। पीने के फौरन बाद जब तक तबीयत बहाल न हो, दस से पन्द्रह तक लगे हुए पान खिलाने चाहियें ताकि वमन वगैरा न हो और जी न मिचलाये। उस दिन चावल या खिचड़ी खाने को दें, कुदरत की शान की परीक्षा करें। कोई दस्त वगैरा भी न होगा। बढ़ी हुई तिल्ली का एक दिन में गायब हो जाना हैरानी पैदा करेगा।

४६६-बवासीर

छाया में सूखी हुई बबूल की कच्ची फलियों को कूट कपड़ छानकर इसे ६ ग्राम की मात्रा में ताजे जल के साथ सुबह शाम खाने से हर प्रकार की बवासीर जाती रहेगी।

४६७-दूसरा योग

काले तिलों को गाय के मक्ख. के साथ सेवन करने से बवासीर के मस्से जाते रहते हैं।

४६८-तृतीय योग

तीन ग्राम इमली के फूलों को ठन्डे पानी या मक्खन के साथ खाने या भांग को पानी में बारीक पीसकर और उसकी टिकिया बनाकर गुदा पर बांध देने से बवासीर का रक्त बन्द हो जाता है।

४६९-चतुर्थ योग

सुहागे को तवे पर फुला करके पीस लें। बवासीर के मस्सों को इलायची के तेल से चुपड़कर ऊपर सुहागे को बुरक दें। मस्से चन्द दिनों में निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं, इस योग से मैंने ३—४ बीमारों को अच्छा भी गा है। तेल पहले कुछ लगता भी है पर बाद में नहीं लगता। मस्से सूखकर जाते हैं।

४७०-गठिया दूर करने के लिए

आक की जड़ दो किलो लेकर चार किलो पानी में पकावें। जब दो

किलो रह जावे तब जड़ों को निकालकर फेंक दें और पानी में दो किलो गेहूं छोड़ दीजिए। जब जल का शोषण हो जावे तब गेहू को सुखाकर आटा पिसवा लें। २५० ग्राम इस आंटे की रोटी बनाकर उसमें घी और गुड़ मिलाकर ५ दिन सेवन करें।

४७१-स्वप्नदोष दूर करने के लिए

बरगद के दूध की पांच बूंद बताशे में डालकर सुबह एक मास तक निगल जाया करें।

४७२-द्वितीय योग

इमली के बीजों का चूर्ण ३-३ ग्राम प्रातः साय दूध के साथ ३० दिन सेवन करें।

४७३-तृतीय योग

ताजा व सूखा हुआ एक अंजीर प्रातः खावें। ऊपर से ४०० ग्राम पानी घूंट २ कर और दांत भीचकर पीवें और फिर चार घन्टे तक कुछ न खावें। सायंकाल सूर्यास्त से दो घन्टे पहिले केले की दो फली जैतून के तेल के साथ खावे, १५ दिन में पुराने से पुराना स्वप्नदोष जाता रहेगा।

४७४-प्रमेह के लिए

पुरानी मेंहदी २५ ग्राम, सफेद इलायची के दाने ६ रत्ती, मिश्री १२ ग्राम घोटकर २ सप्ताह तक पीने से प्रमेह रोग जाता रहता है।

४७५- द्वितीय योग

नीम गिलोय का रस ५ ग्राम, शहद १० ग्राम दोनों को मिलाकर दो दिन सेवन करें। सर्व प्रकार का प्रमेह शांत होता है।

४७६-तृतीय योग

कीकर की २५ ग्राम गोंद, २५० ग्राम गाय के मट्ठा में मिलाकर पीने से दो सप्ताह में प्रमेह जाता रहता है।

हरनिया

४७७-ग्रीष्मऋतु के लिए जल चिकित्सा

किसी टब में जल भर कर उसमें नग्न हो लेट जावे। फिर एक किलो बरफ को किसी कपड़े में लपेटकर लेटे ही लेटे आंत पर नीचे से ऊपर की ओर घिसते रहें। ध्यान रहे कि ऊपर से नीचे को न घिसा जावे। जब तक बर्फ समाप्त न हो जावे तब तक यह क्रिया करते रहें।

फिर टब से बाहर आकर शरीर को किसी खुरदरे कपड़े से भली प्रकार रगड़कर किसी समतल भूमि पर लेट जावे और आध किलो बर्फ कपड़े में लपेटकर उपरोक्त क्रिया को दोहरावे। बर्फ पिघल जाने तक ऐसा करते रहें।

४७८-द्वितीय योग

उपरोक्त योग की क्रिया करने के बाद फिर ढीला लंगोटा बांधकर दो मिनट शीर्षासन करते हुए भी १२५ ग्राम बर्फ आन्त पर उसी प्रकार घिसकर शरीर साफ करके कपड़े पहिन लें। इस क्रिया को ३—४ मास तक करने से आन्त यथा स्थान चढ़कर ठीक बैठ जावेगी। पश्चात लंगोट का प्रयोग करते रहें। ऐसा करने से आपरेशन की आवश्यकता न रहेगी।

४७९-संग्रहणी हर

संग्रहणी के लिए जामुन के छिलके का रस ३० ग्राम, ६० ग्राम बकरी के धारोष्ण दूध में ३ ग्राम सालब मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार दें। १० दिन में संग्रहणी को आराम हो जाता है।

४८०-संग्रहणी के लिये

केले के पेड़ के छिलके का रस २५ ग्राम दस या बारह काली मिर्च के साथ पिलाना चाहिए। दूसरी मात्रा एक घन्टे बाद और फिर दो दो घन्टे बाद दें।

४८१-सर्पविष उतारने के लिए

केले के छिल्के को खूब बारीक कूट पीसकर सर्प के काटे स्थान पर जरा सा घाव करके बांध देना चाहिए। यह दवा दांत भिच जाने से पूर्व ही काम करती है।

४८२-द्वितीय योग

यदि रोगी बेहोश हो तो रीठे का पानी रोगी के नाक में ४—५ बूंद टपका देना चाहिए, जहर उतर जायेगा।

४८३-बिच्छू का दर्द दूर करने के लिए

खांड (बूरा) पानी में मिलाकर गाढ़ा २ लेप कर दो। बिच्छू का विष ५—७ मिनट मे नष्ट हो जावेगा।

४८४-द्वितीय योग

थोड़े से नौशादर को घिसकर काटे हुए स्थान पर लेप कर देने से भी बिच्छू दंश में आराम होता है।

४८५ तृतीय योग

इमली के वीज के नाकू को काटकर और उसे घिसकर काटे हुए स्थान पर चिपका दीजिए, विष उतर जावेगा ।

४८६-कुत्ते का विष दूर करने के लिये

लाल मिरच सरसों के तेल में पीसकर घाव में भर दीजिए और ऊपर पट्टी बांव दें । अच्छा न होने तक पानी न लगने पावे । कुछ दिनों में आराम होगा ।

४८७-कनखजुरे को शरीर पर से छुडाने के लिये

कड़वा तेल डालने से कनखजूरा मर जावेगा और उतर पड़ेगा । अगर उसके पंजे अन्दर घुस गये हों तो ऊपर चीनी खुश्क ही अच्छी मिकदार में वांव दीजिए । कनखजूरा गलकर पानी हो जावेगा । इस चीनी को, जिसमें कनखजूरा हल हो चुका है संभालकर रखें । कंठमाला वाले रोगी को ३—३ ग्राम की सिर्फ तीन पुड़ियां पानी से खाने को दें । हजीरा (कंठमाला) शान्त होगी ।

४८८-ऋतुस्रावक

रुके हुए मासिक धर्म को खोलने के लिए

मूली के वीज, गाजर के वीज, मैथी के वीज इन तीनों को ६०—६० ग्राम लेकर खूब कूट पीस लें । इस चूर्ण को ६—६ ग्राम की मात्रा मासिक धर्म के दिनों में गरम पानी से फंकावें । इससे कई वर्ष का रुका हुआ मासिक चालू होगा ।

४८९-दूसरा योग

नमक १ ग्राम, देशी खांड १ ग्राम, सौंफ के ५० ग्राम के अर्क में मिलाकर मासिक धर्म के दिनों में सेवन करायें । यदि मासिक धर्म में रक्त थोड़ा आता होगा तो खुलकर आने लगेगा ।

४९०-अधिक रक्त आने को ठीक करने के लिए

६ ग्राम असगन्ध और इतनी ही खांड मिलाकर प्रातः ताजे जल से सेवन कराने से ऋतुकाल में प्रमाण से अधिक रक्त का आना वन्द हो जाता है ।

४९१-दूसरा योग

रसौंत, ववूल का गोंद और राल एक एक ग्राम लेकर और उन्हें कूटकर ४—४ रत्ती की पुड़ियां वनाकर सुवह शाम एक एक पुड़िया जल के साथ सेवन करने से अधिक रुधिर आना वन्द होता है ।

४९२-योनि संकोचन

भांग को कपड़छान करके बारीक वस्त्र में छोटी सी पोटली बनाकर योनि में रखने से ढीली तथा शिथिल योनि कठोर और तंग हो जाती है।

४९३-गर्भ पुष्टिकर

चावलों के धुले हुए १२० ग्राम पानी में १२ ग्राम चौलाई की जड़ को पीसकर पीने से गर्भ पुष्ट होगा और इससे गर्भस्राव व गर्भपात नहीं होगा। यह प्रयोग बड़ा लाभदानक है।

४९४-दूसरा योग

गर्भवती स्त्री यदि आंवले के मुरब्बे का सेवन करती रहे तो स्वयं भी पुष्ट हो जावेगी और संतान भी पुष्ट होगी।

४९५-सुन्दर सन्तान बनाने के लिये

छाया में सुखाई हुई बबूल की कोमल पत्तियां ६० ग्राम और कमलगट्टे की मींगी १२ ग्राम। दोनों को कूट कपड़छान कर दोनों के बराबर मिश्री मिलालें। गर्भ रहने के तीन मास बाद ३ ग्राम की मात्रा नित्य ४० दिन गौ दुग्ध से सेवन करें। अनुभूत है।

४९६-नाल परिवर्तन करने के लिये

जिस स्त्री के हर बार लड़कियां ही पैदा होती हों वह मोरपंख से आसमानी रंग के चांद कैंची से बारीक काटकर थोड़ा सा गुड़ लेकर उसमें उस चन्द्रिका को मिलाकर गोली बना लें। तीन चांदे लेकर तीन गोलियां बनालें। तीन मास का गर्भ पूरा होने पर किसी समय प्रसन्न चित्त, १ गोली प्रातःकाल ३ दिन तक निगल जावे। अवश्य लड़का होवे।

४९७-माता के दूध को अधिक करने के लिये

शतावर को बारीक पीसकर उसमें समभाग खांड मिलाकर प्रतिदिन दस ग्राम चूरण गाय के ताजा दूध से माता सेवन करें और साथ में अरहर की दाल अधिक खावे। दूध अधिक उतरेगा।

४९८-हिस्टीरिया

दौरे के समय स्त्री को आहिस्ता से लिटादें, छाती के बटन खोलकर सिर के नीचे तकिया लगादें, मुंह पर ठन्डे पानी के छींटे दें और प्याज का रस सुंघावें। यदि इससे होश न आवे तो कस्तूरी का एक कण किसी सुगन्धित तेल में मिलाकर उसकी योनि में रख दें। इससे गर्भाशय का संकोच दूर होकर

स्त्री होश में आ जावेगी। ऐसे समय में यदि स्त्री सहवास करे तो भी दौरा तुरन्त बन्द हो जावे।

भुनी हुई हींग १० ग्राम, वच २० ग्राम, संचर लवण ८० ग्राम, कुठ ४० ग्राम, वायविडंग की मज्जा १६० ग्राम। इन सबको कूट पीसकर ३—३ ग्राम की पुड़ियां बनाकर गर्म जल के साथ दिन में तीन बार लेने से पेट के वातादि दोष दूर करके हिस्टीरिया को जड़ से दूर कर देता है।

४९९-बच्चों की कब्ज दूर करने के लिये

रूई का फाया शुद्ध सरसों के तेल में तर करके गुदा में चढा दो। दो चार मिनट में दस्त खुलकर होगा।

५००-मोटापा दूर करने के लिये

थोड़ा सा शहद गरम पानी में मिलाकर कुछ दिन पिलाने से पेट छट जाता है और निरर्थक मोटापन जाता रहता है।

५०१-गुदा के कृमि नष्ट करने के लिए

हींग के पानी में थोड़ी सी रूई तर करके गुदा में रखने से कृमि नष्ट होते हैं।

५०२-पेट के कृमि नष्ट करने के लिए

सायंकाल एक दो अखरोट खिला देने से पेट के कृमि नष्ट होते हैं।

५०३-दांत शीघ्र निकालने के लिए

चूना और शहद मसूड़ों पर मलने से दांत शीघ्रता और सरलतापूर्वक निकलते हैं।

५०४-पेट फूलने पर

सौंफ को पानी में रात्रि के समय भिगो दें और उस सौंफ के पानी को थोड़ा सा दूध में मिलाकर पिलाते रहें, पेट फूलना बन्द होगा।

५०५-दस्त बन्द करने के लिए

पोस्त की डोडी ३ ग्राम २५० ग्राम पानी में भिगो दें। फिर छानकर दिन में ३—४ बार १०—१० ग्राम पिला दें। दस्त बन्द हो जावेंगे।

५०६-चेचक की गर्मी शांत करने के लिये

चार पांच तुरियां केसर की खिलाने से सारा विष बाहर निकल जाता है।

५०७-पसली चलना बन्द करने के लिये

थोड़े से पानी में अफीम घोलकर गर्म करें और सुहाते सुहाते पसलियों पर लेप करें। एक सप्ताह में आराम हो जायेगा।

५०८-पुष्टी के लिये

भिगोये हुए चूने के ऊपर से नितरा हुआ पानी १२५ ग्राम, मिश्री ६० ग्राम, लाल चन्दन का बूरा ६ ग्राम। सबको चूने के पानी में पकाकर शरबत बना लें और शीशी में भर लें। यही बाल अमृत है। बच्चों को थोड़ा २ चटावें या पानी में डालकर पिलावें। बच्चा सदा हृष्ट पुष्ट और प्रसन्न रहेगा।

नशा निवारक योग

५०९-धतूरा विष नाशक

कोई आदमी भूल से या जानबूझ कर धतूरा खाले और नशा बहुत अधिक हो जावे तो उसे पानी में नमक घोलकर पिलाने से नशा उतर जाता है।

५१०-पागल कुत्ते के काटने पर

जख्म पर लाल मिरचों को साबत ही बांध देना चाहिए और कुछ मिरचों के छिल्कों को तालाब में फैलने वाली बेल समान भाग मिलाकर पीसें और शहद मिलाकर चटावें। इससे लाभ हो जाता है।

५११-भंग का नशा

भंग का अधिक नशा हो जाने पर बड़ी चिन्ता पैदा हो जाती है। ऐसे समय में चावलों का धोवन या अरहर की दाल का धोवन पिलायें अथवा दही को पानी में मिलाकर या छाछ पिलाना चाहिए। फायदा हो जावेगा।

५१२-अफीम के नशे पर

हींग को पानी में घोलकर पिलाना चाहिए। इससे नशा का प्रभाव धीरे २ कम हो जाता है।

५१३-शराब के नशे पर

चूना और नौशादर मिलाकर सुंघाने से और ठन्डे पानी के छींटें मुंह पर मारने से नशा धीरे २ कम हो जाता है।

समाप्त